लोकभारती प्रकाशन

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

চলো কলকাতা

বিমল মিত্র

लोकभारती प्रकाशन
१५-ए, महात्मा गाधी मार्ग
इलाहाबाद—१ द्वारा प्रकाशित

द्वितीय सस्करण १९७२
लेखक विमल मित्र
अनुवादक दिनेश आचार्य

मूल्य ७ ५०

मैंने पाच उपन्यासो के द्वारा भारतवर्ष के इतिहास का परिक्रमण शुरु किया था। १७५७ ईसवी मे जिस दिन अग्रेजो ने पहले-पहल भारतवर्ष मे पाँव रखा था, उसी दिन शुरू हुआ यह परिक्रमण। 'बेगम मेरी विश्वास' इस परिक्रमण का सूत्रपात है। उसके पश्चात् 'साहब बीवी गुलाम', 'खरीदी कौडियो के मोल' और उसके बाद 'इकाई दहाई सैकडा' के साथ बीसवी सदी के छठे दशक मे जब भारत की पूर्वी सीमा चीनी आक्रमण से आक्रान्त थी, यह परिक्रमण सम्पूर्ण हुआ। उसके बाद स्वाधीनोत्तर युग के अति आधुनिक विक्षुब्ध बगाल की राजधानी का चित्र है—'चलो कलकत्ता'। बगला मे पहली बार जब यह पुस्तक प्रकाशित हुई, यहाँ काग्रेस सरकार सत्तारूढ थी।

पाठक अगर इन पुस्तको को कालानुक्रमिक भाव से पढें, तो ग्रथ के रस-ग्रहण मे उन्हे विशेष सुविधा होगी।

—विमल मित्र

श्री सुभाषचन्द्र सरकार
को श्रद्धापूर्वक

आपके साहस, सत्यवादिता, निष्ठा और सतता के प्रति मेरी आन्तरिक श्रद्धा के निदर्शन के रूप मे यह 'चलो कलकत्ता' में आपके करकमलो मे समर्पित करता हूँ ।

India ought not to take American money for her national movement and must raise her own money I shall go to America only when India is independent and speak of India and Indian culture without taking money for my lecture

MAHATMA GANDHI

(From a Letter to Sri Sotu Sen)

चलो, कलकत्ता चलो।

चलो, चलो, कलकत्ता चलो।

आदिकाल मे लोग दूसरे ही कारण से कलकत्ते आते थे। उन दिनो कलकत्ते माने था कालीक्षेत्र। इस कालीक्षेत्र की काली माई तव पथुरियाघाट मे थी। कवि ककण की चडी मे लिखा है

धालीपाडा महास्थान कलिकाता कूचिनान, दोऊकूल वसे ह वाट।
पाषाण रचित घाट, कूल करें यात्री नाट, किंकर वसाए नाना हाट।।

'पाषाण रचित घाट' माने पथुरियाघाट। आज का स्ट्रैण्ड रोड उन दिनो गगा के गभ मे था। कवि ककण ने अपनी चडी मे इसका उल्लेख किया है। दरमाहाट स्ट्रीट मे पानपोस्ता के ठीक उत्तर की ओर देवी का मदिर था। वाद मे कापालिको ने और भी निजन स्थान खोजकर देवी को वहाँ से ले जाकर कालीघाट मे प्रतिष्ठित किया। कापालिको का नाम सुनते ही उन दिना लोग थरथर कापते थे। वे लोग देवी को नरवलि भेंट चढाते थे। उन्हे रोकने की हिम्मत किसी मे न थी। विना नरवलि के कापालिको का अनुष्ठान पूरा नही होता था। उनकी साधना पूरी नही होती थी।

अव वह जमाना नही रहा। वक्त के साथ सव कुछ वदल गया है। कलकत्ते मे आज कापालिक नही है। सिर्फ कलकत्ता ही क्यो, पूरे वगाल मे आज उनका नामो-निशान नही मिलेगा। उनका अस्तित्व यहाँ से हमेशा के लिए मिट चुका है।

लेकिन नही, आज भी असल मे उस जमाने का सव कुछ वैसे ही मौजूद है। जरा भी तवदीली नही हुई है। वही कालीक्षेत्र, वही काली और वे ही कापालिक जैसे आज भी मौजूद है। आज भी

कापालिक कालीक्षेत्र के काली मदिर मे ठीक उसी तरह नरवलि देकर अपना अनुष्ठान, अपनी साधना पूरी करते है। सिर्फ उनका ऊपरी चेहरा वदल गया है, नाम वदल गया है।

और यात्री ?

उन दिनो आसपास के कस्वो और जिलो से यात्री आया करते थे। आते थे, अग, वग, कलिंग से तथा भारत के दूसरे अचलो से। और अव ! अव आते है इग्लैंड से, रूस और अमेरिका से। हर यात्री कलकत्ते आता है। यहाँ विना आये जैसे किसी का सरता ही नही। यहा विना आये जैसे किसी का अनुष्ठान ही पूरा नही होता, किसी को सिद्धि ही नही मिलती।

और सवसे अधिक आश्चर्य की वात तो यह है कि कलकत्ते के इस कालीक्षेत्र मे आज भी हर रोज नरवलि दी जाती है। एक के वाद दूसरी नरवलि। नरवलि के विना जैसे देवी चडिका की रसना तृप्त ही नही होती। कापालिको का अनुष्ठान पूरा नही होता। साधना पूरी नही होती।

इसलिए चलो, कलकत्ता चलो।

चलो, चलो, कलकत्ता चलो।

वे लोग उधर से आ रहे थे और ये लोग इधर मे जा रहे थे। कलकत्ते मे जिधर देखो, उधर सडकें ही सडकें विछी है। जो जिधर चाहे जा सकता है। हर किसी को हर कही जाने का अख्तियार है। तभी ये लोग चल रहे है।

मुँह-अँधेरे ही ये लोग उठ गए थे। कहा वह जयचडीपुर और कहाँ कितने कोसो यह कलकत्ता।

जय ! काली माई की जय !

वुधुआ ने कालीघाट मे मनौती मान रखी थी। हे काली माई, मुझे अगर एक लडका दे दो तो तुम्हारी पूजा करूँगा, पूरा वकरा वलि दूगा, भोग चढाऊँगा और परसाद खाऊँगा।

वैसे आजकल वकरो की कीमत भी काफी वढ गई है। बुधुआ के वाप हरखमलाल ने जव चालीस साल पहले वलि के लिए वकरा खरीदा था, तो एक छोटे वकरे की कीमत थी सिर्फ तीन रुपये। आज वही कीमत तीन रुपये से वढते-वढते वीस रुपये पर आकर रुक गई है।

बुधुआ उस वकरे को लेकर जयचडीपुर से ही ट्रेन मे चढा था। कलकत्ते तक का सफर ट्रेन से तय करना था। छोटी सी ट्रेन जैसे माचिस वक्स हो। जयचडीपुर से पूरे तीन कोस का फासला पैदल तय करने के वाद जयचडीपुर स्टेशन आता था। बुधुआ की माँ ने पिछली रात को ही सफर के लिए ज्वार की रोटी वनाकर रख ली थी। बुधुआ, उसकी वहू और वेटी ने वही रोटी खायी थी।

बुधुआ की वहू का दिमाग जरा ढीला है। दिमाग मे कोई वात ठहरती ही नही। वे-वात लडकी को तडातड मारने लगती।

कहती, "अतहत धीगडी हो गयली। वियाह भइल रहित त चार लडिकन के महतारी भइल रहती। तनिकिस भूख लागल कि लगली लोर वहाने।"

बुधुआ टोली के आगे-आगे चल रहा था। उसके कधे पर वकरा था। उसने दोनो हाथो से वकरे को पकड रखा था। कही भाग न जाय। उसके पीछे-पीछे उसकी वहू रगिया चल रही थी। रगिया ने एक हाथ से लडकी को पकड रखा था। सवसे पीछे-पीछे बुधुआ की माँ आ रही थी। वूढी होने की वजह से जरा पीछे पड गई थी। लेकिन चल वरावर रही थी।

हावडा मैदान आकर सव लोग ट्रेन से उतरे। उसके वाद फिर पैदल चलाई। सामने ही खडा गगा के ऊपर हावडा पुल जैसे उन लोगा की ओर ताक रहा था। और नीचे थी गगा मैया।

बुधुआ ने पीछे घूमकर देखा। माँ ठीक से आ रही है न। इसके वाद एक वार उसने रगिया की ओर देखा, और फिर दुखिया की ओर।

भीड के मारे माँ वेचारी चल नही पा रही थी। वेचारी जयचडीपुर की थी, इतनी भीड देखकर सकपका गई थी। कहाँ वह खुला और सुनसान गाव और कहाँ भीड से भरा यह शहर।

बुधुआ आगे से चिल्लाया, "माई, हुशियार, हुशियार—एकर नाम

शहर कलकत्ता बा–"

मा बेचारी भी आँखें फाडे कलकत्ता शहर को देख रही थी। तीस-चालीस साल पहले भी वह एक बार यहा आयी थी। बुधुआ का बाप तब जिंदा था। उस बार भी वे लोग एक बकरा लेकर काली मदिर मे भोग चढाने के लिए आये थे।

बुधुआ का बाप कहा करता था, "गरीब ढूढे खाना और अमीर ढूढे भूख।"

बुधुआ की माँ की समझ मे बात नही आयी थी, बुधुआ के बाप हरबसलाल ने इस बात के माने समझाये थे कि गरीब बेचारे की सारी जिंदगी खाना ढूढने के चक्कर मे निकल जाती है, और अमीर हमेशा भूख बढाने के लिए परेशान रहते है। इसी से बुधुआ की माँ आज बडे आदमियो के इस शहर को मुँह बाये देख रही थी। यहाँ सभी अमीर है। लेकिन चालीस साल पहले के उस कलकत्ते का आज के कलकत्ते से कोई मेल ही नही बैठता। गगा मैया की छाती पर यह लोहे का पुल भी तब नही था।

अचानक तभी हाथी जैसी एक बडी सी बस बुधुआ की माँ की बगल से गुजर गयी।

बुधुआ हे-ह् कर उठा। "सम्हल के—सम्हल के—"

बडे भाग्य से बुढिया बाल-बाल बच गई।

"तोहरा से कहले रहली कि इ शहर कलिकाता होउ, अबहिए बस गाडी के धक्का से दात निपोर के सरगे चल जयतु, तब क नीक होइत ?"

बुधुआ की मा सचमुच सम्हल गई थी। उसने कहा, "तोर बाबू का कहत रहस, मालूम हउ ? कहत रहस कि गरीब खोजे भोजन और अमीर खोजे भूख—"

बुधुआ ने कहा, "बकबक मत। तनि देखिके सीधे चला।"

इसके बाद बुधुआ ने एक काम किया। बकरे को कधे से उतार-कर उसने अपने अँगोछे से उसका गला ठीक से बाँध दिया। इसके बाद अपनी धोती के छोर से बहू की साडी का पल्ला बाँधा। बहू की साडी के पल्ले से लडकी की साडी का छोर बाँधा और फिर लडकी की साडी के छोर से माँ की धोती का छोर बाँध लिया। अब किसी का खो जाना

मुश्किल है। अब जाकर बुधुआ ने चैन की साँस ली। बकरे को फिर उसने कधे पर रखकर उसके चारो पैर मजबूती से पकड लिये और चलना शुरू किया। बोलो, काली माई की जय ! बजरगबली की जय !

बुधुआ की टोली अब हावडा पुल पारकर बडे बाजार के मोड पर आ पहुँची थी। उधर से कई 'हवागाडियाँ' आ रही थी और इधर मे ट्राम। बीच चौराहे पर पुलिस का सिपाही खडा था।

"अरे गया-गया !"

अचानक सारे राहगीर ठिठककर इधर-उधर देखने लगे।

"रोक के ! रोक के !"

"न जाने कहाँ का देहाती आ गया है।"

"सडक पर चलना नही आता और शहर मे चले आये ! कधे पर एक बकरा भी लाद रखा है।"

"अरे भाई, ऐसा न कहो, आजकल ये ही लोग सच्चे ह। इन्हे गँवार देहाती कहकर हम खुद को ही गाली दे लेते हे।"

सडको पर और ट्राम-बसो मे कितने ही तरह-तरह के लोग थे, विचित्र चरित्रो का समावेश। अच्छे-बुरे, साधारण-असाधारण को लेकर ही ससार बना है। वे अपने-अपने आफिस-कचहरी जा रहे थे रुपया कमाने के लिए। उन लोगो का भी क्या कसूर है ! कोई रुपया कमाने जा रहा है तो कोई नाम कमाने। फिर कोई काली माई का प्रसाद पाने ही जा रहा है। आदिम काल में एक दिन यह अनन्त यात्रा शुरू हुई थी। एक दिन पवल-पहाड पारकर एशिया माइनर से उन्होने अपनी यात्रा शुरू की थी। लेकिन वह एशिया माइनर था या मध्य एशिया ? नही, इनसान उससे पहले भी थे। दस हजार साल पहले के इनसान के भी चिह्न मौजूद हे। बुधुआ ने जयचडीपुर से चलना शुरू किया, लेकिन बुधुआ का बाप हरबसलाल जयचडीपुर से भी दूर कहा से पैदल चलकर आया था, पता नही। सिर्फ हरबसलाल ही क्यो, हरबसलाल का बाप भी तो था। फिर हरबसलाल के बाप का बाप ? हजारो और लाखो साल इसी तरह गुजर गये हैं। एक देश से दूसरे देश और एक जनपद से दूसरे जनपद। इष्ट देवता के आगे वे अपनी कामनाओ और वासनाओ का बोझ ढोकर पहुँचे हैं। कहा है—हमे धन दो माँ, हमे ऐश्वर्य दो—हमे रूप दो, ज्ञान दो—

मनुष्य की कामनाओ का अत नही है।

बुधुआ की माँ को भी यही लग रहा था। बुधुआ का बाप भी चालीस साल पहले एक दिन उसे कलकत्ते ले आया था।

उसने पीछे चलते-चलते ही पुकारा, "ओ बुधुआ! ओ बुधुआ!"

कपडो के छोरो को एक-दूसरे से बाँधकर बुधुआ जरा निश्चित होकर चल रहा था। अब बुढिया के पुकारने से वह झल्ला उठा।

"का भइल? चिल्लात काहे बा?"

बुधुआ के पास आते ही बुढिया ने कहा, "देख बबुआ, तोर बाबू कहत रहस कि गरीब खोजे भोजन और अमीर खोजे भूख—"

बुधुआ खीझ उठा। उसने सोचा था, मा पता नही कौन-सी जरूरी बात कहेगी। देख रही है कि यह कलकत्ता शहर है! भीड के मारे दिमाग चकराने लगता है, ऊपर से ये बेकार की बातें।

"अरे, ई मा कउन नयी बात बा, चुप्पहि रास्ता देख के चल। खूब हुशियार होके चल। ई शहर कलकत्ता बा बडा जबर शहर!"

बुधुआ फिर चलने लगा। उधर ट्राम-बसें चल रही थी, शोर-शराबा चल रहा था। सडक के एक किनारे से बुधुआ की टोली चल रही थी। पहले बुधुआ की बहू रगिया, बुधुआ की बेटी दुखिया और सबके बाद बुधुआ की बुढिया माँ थी। बुधुआ ने सबके कपडो का छोर एक-दूसरे से बाँध दिया था। बकरा उसके कधे पर था। उसने कहा, "जय काली माई की! जय बजरगबली की!"

अचानक एक बस उधर से आकर मानो बुधुआ के ऊपर से निकल गयी और साथ ही साथ चारो तरफ से लोग हाय-हाय कर उठे।

"क्यो जी, बेचारा मर गया या जिंदा है?"

"अरे साहब, वहाँ इतनी भीड क्यो है? कोई दब गया क्या?"

"बेचारा! लेकिन कधे पर इस तरह बकरा रखकर क्या कोई चलता है? बुद्धू कही का! साथ मे ये लोग कौन हैं? शायद बहू और लडकी होगी। और वह बुढिया शायद उसकी माँ है।"

देखते-देखते सडक पर भीड जम गई। सडको पर भीड जमाने के लिए बेकार और फालतू लोगों की कमी नही रहती। अब तक जो लोग काम-काज से आ-जा रहे थे, वे भी तमाशा देखने आ खडे हुए।

"क्या हुआ है साहब? बात क्या है?"

वे लोग उधर से आ रहे थे और ये लोग इधर से जा रहे थे। पूरे कलकत्ते मे ही तो पक्की सडकें बिछी है। जिसे जिधर आना-जाना हो, आये-जाये। इस शहर मे हर किसी को हर कही आने-जाने का अख्तियार है। तुम लोग भी चलो।

ये लोग आज मुँह-अँधेरे उठे है। कोई यादवपुर का रहनेवाला है तो कोई गडिया का। कौन कहाँ रहता है, यह कोई नही जानता। एक जगह इकट्ठे होने के वाद सव एक-दूसरे को देख रहे थे। इसके वाद एक छोटा-मोटा नेता आकर सवको लाइन मे खडा कर चला गया था।

कोई एक गला फाडकर चीख रहा था, "इनक्लाव।"

उसके साथ ही वाकी लोग आवाज मिला रहे थे, "जिंदावाद।"

"जरा और जोर से भाई, और जरा जोर से। एक साथ आवाज मिलाकर वोलो—जिंदावाद।"

अरविंद शुरू से ही इस लाइन मे खडा हो गया था। वैसे लाइन मे उसके खडे होने की वात नही थी। किस वात के लिए लाइन लगी है, अरविंद को यह भी मालूम नही था। हारान नस्कर लेन के दो मकानो मे उसका डेरा था। एक मकान गली मे दायी ओर था, दूसरा वायी ओर। याने सात नम्वर मकान मे एक कमरा था और आठ नम्वर मे एक। सात नम्वर मे अरविंद की माँ और उसकी वीस साल की क्वारी वहन रहती है और आठ नम्वर मे अरविंद की वहू रहती है। दोनो घर आमने-सामने है। लेकिन सात नम्वर से आठ नम्वर मे जाने के लिए आठ फुट चौडी गली पार करनी पडती है।

असल मे अरविंद गोश्त खरीदने निकला था। वक्रे का गोश्त। इस आध किलो गोश्त से उसका काम चल जाएगा। वैसे अरविंद के घर गोश्त कभी-कभार ही वन पाता। गोश्त का दाम आजकल वहुत वढ गया है। छ रुपये से कम मे कोई देता ही नही। डाक्टर ने गोपा

को गोश्त खिलाने के लिए कहा है। गोपा को दिल की बीमारी है। उसे प्रोटीन की सख्त जरूरत है। डाक्टर ने कहा है, "आप उसके हजबैंड ठहरे, आप उसकी सेहत का ख्याल नही करेंगे तो कौन करेगा ?"

अरविंद सुसी के बारे मे भी सोच रहा था।

सुसी उसकी सगी बहन है। छुटपन मे वह बडी चुलबुली थी। गोश्त खाने की बडी शौकीन थी। वह भी कई बार कह चुकी है, "भैया कितने दिन हो गए, गोश्त नही खाया।"

घर मे काफी दिनो से गोश्त नही बना है, अरविंद यह जानता था। अरविंद कहता, "लाऊँगा लाऊँगा। एक दिन पूरा एक किलो गोश्त ले आऊँगा, जी भर के खा लेना।"

पूरा एक किलो गोश्त खाने की कल्पना से खुश होकर सुसी के मुह में पानी आ जाता। वैसे गोपा के मुँह मे भी पानी आता है।

एक दिन अकेले मे उसने अरविंद से कहा, "कह तो दिया, लेकिन गोश्त लाओगे कहा से ?"

"क्यो, तुम सोचती हो, मैं ला नही सकता ?"

"ओफ् बडे अकड रहे हो ! मै तुम्हारी अकड बहुत देख चुकी।"

अरविंद खिसियाकर कहता, "तुम्हारी वजह से ही तो तुम्हारी वजह से ही तो कुछ कर नही पाता। तुम अगर जरा—"

बात पूरी होने से पहले गोपा गरज उठती, "बस ! बस ! रहने भी दो !"

"मैंने क्या कोई गलत बात कही है ?"

गोपा और भी जोर से बरसती, "अच्छे मरद हो जी ! मुझसे हर किसी की खिदमत नही होने की ! क्यो, मुझे क्या गरज पडी है ? तुम्हारी माँ है, तुम्हारी बहन है, उन लोगो पर तुम्हारा बस नही चलता ? सारा रोब तुम मुझको ही दिखलाते हो ? मेरी क्या जान नही है ? मैं क्या पेड़-पौधा हूँ ? पत्थर की बनी हूँ ?"

गनीमत है कि आठ नम्बर की आवाज सात नम्बर मे नही पहुँचती। नही तो उधर से गोपा की अधी और बूढी सास भी चिल्लाने लगती—क्या कहा बहू, तुम्हारी यह मजाल ! तुम मेरी सुसी को ताना मार रही हो ?

वैसे देखा जाय तो गोपा की बातें चुभनेवाली भी थी।

गोपा कहती, "क्यो सुसी, तुम्हारी माँ-जायी वहन है इसलिए इतनी प्यारी है, और मै दूसरे घर से आयी हूँ इसलिए सारा जोर मुझ पर ही चलता है न ! म अच्छा करूँगी, कहूँगी, एक वार नही, हजार वार कहूँगी !"

वीवी से जली-कटी सुनकर उस दिन अरविंद का मिजाज खराव हो गया था। वह सब्जी लाने के लिए थैली उठाकर वाहर निकल पडा। बेकार है साली यह जिन्दगी ! बीवी और वहन को एक किलो गोश्त भी नही खिला सकता। धिक्कार है, ऐसे जीने को !

माँ ने पूछा था, "इतनी सुवह कहाँ चल दिया ?"

अरविंद ने पहले तो कोई जवाव नही दिया था।

"अरे सुना नही ! मैं पूछ रही हूँ, कहाँ चल दिया ?"

इस पर अरविंद ने झल्लाकर कहा, "जाऊँगा कहा, भाड मे जा रहा हूँ। तुम लोगो के लिए पिण्डदान का इतजाम करने जा रहा हूँ।"

अरविन्द थैली लेकर निकल तो पडा, लेकिन अटी वावा हरिदास ! सौदा खरीदने को पैसा कहाँ से आएगा इसका पता नही, लेकिन थैली लेकर, रोज निकलना जरूरी है। अरविन्द ने सोचा, 'भद्रकाली मिष्टान्न भडार' जाकर दस रुपये का एक नोट उधार माग लूँगा।

'भद्रकाली मिष्टान्न भडार' वीच वाजार मे है। दूकान का मालिक दिलीप वेरा कच्ची उमर का जवान है। इतने दिन मजे मे चल रहा था। दूकान से मुनाफे की मोटी रकम आती थी जिसमे दिलीप वेरा दोनो हाथो पैसे उडाता था। वीच-वीच मे कभी वह शनिवार के दिन अरविन्द को साथ लेकर रेस खेलने भी जाता था। कीमती सिगरेट पिलाता और टैक्सी मे लेकर घूमता। फिर लौटते समय अरविन्द को जो चीज सवसे ज्यादा पसन्द थी, दूकान मे ले जाकर वही पिलाता। वढिया विलायती शराव। दिलीप उसे जी भरकर पिलाता। अरविन्द विलायती शराव पीने का वडा शौकीन था।

एक के वाद एक, कई पेग खाली हो चुकने के वाद भी दिलीप वेरा पूछता, "एक पेग और चलेगा, अरविंद ?"

अरविन्द कहता, "कितने पेग चढा गया हूँ ?"

"मैं क्या गिन रहा था ? तू ने कितनी पी है, यह तू ही जानता होगा।"

अरविन्द ना-नुकर करते हुए कहता, "लेकिन आज तो तुम पूरे दो हजार रुपये हार चुके हो, आज कैसे पीऊँ ?"

"अबे तू भी क्या वात करता है, मैं दो हजार हार गया, इसलिए तू कम पीएगा ? दिलीप वेरा कभी हिसाव करके माल पीता है ?"

हाँ, तो दिलीप वेरा इसी किस्म का आदमी था। अरविन्द के आडे वक्त मे वह हमेशा काम आया। लेकिन आजकल उसके भी हाथ तग है। आजकल सन्देश, रसगुल्ला या गुलावजामुन कुछ भी नही है। इच्छा रहने पर भी अब वह अरविन्द को रोज-रोज नही पिला सकता। पहले हाथ फैलाते ही रुपये मिल जाते थे। आजकल जो रुपये की तङ्गी है, यह देखने से ही पता लग जाता है। वैसे दिलीप वेरा अव भी रेस खेलने जाता है, लेकिन चोरी छिपे और अकेले-अकेले।

उस दिन सुवह सोकर उठने के वाद अरविन्द ने सोचा था कि दिलीप से जाकर कुछ रुपये उधार माँग लूगा। अरविन्द को यकीन था कि दिलीप उसे खाली हाथ नही लौटाएगा। ज्यादा से ज्यादा थोडी मसखरी ही करेगा। हो सकता है, कहेगा—क्या वात है रे, सुसी की शादी कर रहा है क्या ?

दिलीप वेरा सुसी को लेकर इसी तरह छेडछाड करता था।

अरविन्द कहता, "तुम सुसी को लेकर इस तरह छेडछाड न किया करो दिलीप दा।"

"क्यो, छेडछाड क्यो न करूँ ? सुसी तेरी वहन है इसलिए ?"

अरविन्द कहता, "यह वात नही है, सुसी सुनेगी तो गुस्सा होगी।"

"गुस्सा करेगी तो दो रोटी ज्यादा खा लेगी। सुसी के लिए मैने कितने रुपये खर्च किए है, वोल तो ? उस दिन जो सिफन की साडी पहने वह सिनेमा जा रही थी, वह भी तो मेरी ही खरीदी है। है कि नही, वोल ?"

"इतने जोर-जोर से क्यो वोल रहे हो ? कोई सुनेगा तो क्या कहेगा ?"

"चुप भी कर ! गले का वह हार और साडी भी तो पिछली दुर्गा पूजा पर मैंने ही दी थी ?"

"ओफ् ! मैं कव कह रहा हूँ कि तुमने नही दी।"

दिलीप बेरा उस दिन शायद नाराज हो गया था। उसने कहा, "तव सुसी ने मुझे देखकर उस दिन मुह क्यो फेर लिया ? वडी सती वनी फिरती है ! कालेज की सहेलियो को शायद यह दिखलाना चाहती है कि सारे गहने और साडी उसके लायक भैया ने ही खरीद दिये है !"

दिलीप दा इस तरह वातें करता है कि सुनकर अरविन्द को वडा डर लगता है। अगर किसी वाहरी आदमी के कान मे पड गई तो गजव हो जाएगा। 'भद्रकाली मिष्टान्न भडार' के सामने हमेशा ग्राहको की भीड रहती थी। दिलीप दा जिस-तिस के सामने ऊटपटाँग वक देता है। अरविन्द ने सोचा था, दिलीप दा के पास जाकर चुपके से कहूँगा—दिलीप दा, दस रुपये दोगे ?

दिलीप बेरा शायद पूछेगा, "दस रुपये से सुसी क्या खरीदेगी ?"

"अरसा हो गया, वेचारी ने गोश्त नही खाया, सोच रहा था एक किलो गोश्त खरीदकर ले जाऊँ।"

अरविन्द के दिमाग मे पूरा प्लान था। लेकिन जुलूस देखकर सव गडवडा गया। दिलीप बेरा की दूकान 'भद्रकाली मिष्टान्न भडार' वडी सडक के मोड पर थी। वहाँ जाकर उसने जुलूस की भीड देखी। भीड मे जान-पहचानवाले कई लोग थे, साथ ही वहुत-से अनजान चेहरे भी मौजूद थे।

"अरे अरविन्द वावू, आइए न !"

कलुआ फटिक दूर खडा था। मोहल्ले मे फटिक नाम के दो आदमी रहते है। एक काला है और दूसरा गोरा। गलतफहमी न हो जाय, इसलिए एक को लोग कलुआ फटिक और दूसरे को सिर्फ फटिक कहते थे। हाँ, तो लाइन मे वही कलुआ फटिक खडा था।

अरविन्द ने पूछा था, "तुम लोग कहा जा रहे हो ?"

"कलकत्ते। आप भी चलिए न।"

"क्यो, आज क्या है ?"

भीड जमा करने की कोशिश अभी शुरू ही हुई थी। लोगो को इकट्ठा करने का इतजाम हो रहा था। दो वालटियरो ने आगे वढकर अरविन्द की पीठ पर हाथ रखकर उसे लाइन मे खडा कर दिया। अरविन्द जाकर कलुआ फटिक के पास खडा हो गया।

"कृपाकर लाइन मे रहिए। देखिए, लाइन टूटने न पाये।"

अरविन्द ने कहा, "अरे भाई, मैं तो गोश्त खरीदने निकला था।"

"अरे, गोश्त बाद मे खरीद लेंगे। यहाँ खाने को रोटी नसीब नही हो रही है, और आप गोश्त खरीदने निकले है।"

अरविन्द को जैसे अपने आप पर शर्म आने लगी। उसने कहा, "नही भाई, असल मे डाक्टर ने वाइफ को गोश्त खिलाने के लिए कहा है। कहा है, आपकी वाइफ को प्रोटीन-फूड की सख्त जरूरत है। लेकिन डाक्टर तो हिदायत देकर छुट्टी पा गया। रुपया खर्च करने के लिए तो बस मैं ही ठहरा। आजकल गोश्त खरीदना क्या आसान काम है भाई? दाम सुनते ही होश फाख्ता होने लगता है। फिर भी सोचा कि चलो, साल में एक-दो दिन ही तो—"

"आपकी वाइफ को क्या हुआ है?"

"अरे होगा क्या? ठीक से खुराक न मिलने पर जो होता है, वही हुआ है। दिल की बिमारी हो गई है।"

"दिल की बिमारी है तो चेंज के लिए ले जाइए।"

"तुमने भी खूब कहा। छ रुपये किलो का गोश्त खिला नही पा रहा हूँ और तुम चेंज की बात कर रहे हो! मर्द होता तो कोई बात नही थी, लेकिन औरत की जात, कुछ कह भी नही पाता—"

तब तक जुलूस के चलने की सरगर्मी पड गई।

अरविन्द ने कहा, "तुम लोगो को कितनी देर लगेगी?"

"कोई खास देर नही लगेगी। बारह एक बजे तक लौट आएगे। आते वक्त बस मे चले आएँगे।"

"लेकिन आज अचानक सुबह-सुबह यह सब क्यो? हर बार तो दोपहर के बाद जुलूस निकलता है?"

कलुआ फटिक ने कहा, "आज शनिवार है न—शनिवार के रोज आधे दिन का ऑफिस होता है।"

अरविन्द ने कहा, "लेकिन शनिवार को जुलूस निकालना क्या ठीक हो रहा है? आज तो रेस का दिन है। बाबू लोग रेस खेलने जाएँगे न? दिलीप दा को भी आज फुरसत नही है।"

कलुआ फटिक ने जैसे बात को टालते हुए कहा, "अरे, आप भी खूब है, हम लोगो के लिए क्या शुक्रवार और क्या शनिवार! हम लोगो

के लिए दोनो ही वार वरावर हैं । वार का हिसाव रखें वावू लोग, हम तो फक्कड हे ।"

अरविन्द को कलुआ फटिक की वातें कोई खास जँच नही रही थी। कौन वाबू है और कौन नही, यह ऊपर से देखकर कौन जाँच सकता है ! अरविन्द को भी सभी लोग वडा आदमी समझते हे । कपडे और जूते देखकर तो यही लगता है । अरविन्द अगर वडा आदमी है तो कलकत्ते के सभी लोग वडे आदमी हे !

खैर ठीक है। दिलीप दा से लौटते वक्त रुपये माँग लूगा । अरविन्द ने सोचा ।
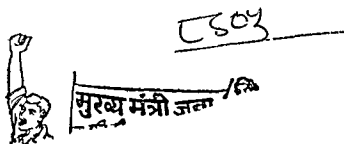
अरविन्द को याद आया, 'भद्रकाली मिष्टान्न भडार' के दिलीप दा ने एक दिन उसे अकेले मे बुलाकर आहिस्ते से कहा था, "क्या रे, आजकल क्या कर रहा है ?"

सुनकर अरविन्द को वडा अजीव लगा था। उसने कहा था, "करूँगा क्या, कभी कुछ किया है जो अव करूँगा ? काम मुझे कौन दे रहा है, वतलाओ न मुझे ?

"लेकिन तुझे काम करने की जरूरत ही क्या है, तेरे घर मे इतनी वडी धीगडी वहन है ।"

अरविन्द ऐसी वातों से शर्माता नही, वल्कि दाँत निकालकर ही-ही करने लगता है। कहता है, "तुम भी कैसी वातें करते हो दिलीप दा, जिसका कोई मतलव नही निकलता । धीगडी वहन है तो मेरा क्या ?"

दिलीप वेरा को हँसी नही आती । मिठाई वेचकर कमाये कच्चे पैसे के मालिक दिलीप बेरा को इतनी आसानी से हँसी नही आती ।

वह कहता "इसमे हँसने की कौन-सी वात है ? मैं एक सीरियस वात कह रहा हूँ और तू है कि बुद्धू की तरह हँस रहा है । हस मत !

इस तरह बात-बात मे दाँत निकालना ठीक नही है।"

"ठीक है दिलीप दा, अब न हँसूगा। कहो, क्या कह रहे थे ?"

"कुछ रकम कमानी है ?"

अरविन्द ने कहा, "क्या करना होगा, कहो।"

दिलीप दा ने कहा, "करना कुछ भी नही है। जरा भी मेहनत नही करनी पडेगी, एकदम फोकट का पैसा है। एक मुर्गा है, कुछ रुपये उडाना चाहता है।"

"मुर्गा ?"

अरविन्द ठीक-ठीक समझ नही पा रहा था।

"अरे, मुर्गा माने मुर्गा। मुर्गा क्या होता है, नही समझता। काफी मालदार आसामी है। जमते-जमते 'दो नम्बर' की रकम मे काई लग रही है। बेचारे को खच करने का रास्ता ही नहीं मिल रहा है।"

अरविन्द इस पर भी समझ नही पाया।

"तो मैं क्या करूँ ?"

दिलीप दा ने कहा, "मैंने उससे तेरे बारे मे कहा है। वह तुझसे दोस्ती करना चाहता है। तू भी उससे दोस्ती करके देख न, अगर तेरा कोई काम बन जाय। कुछ कहा तो नही जा सकता।"

अरविन्द अब कुछ-कुछ समझ रहा था।

उसने कहा, "मेरा क्या काम बनेगा ?"

दिलीप दा बिगड गया। कहा, "काम नही बनेगा ? 'दो नम्बर' रुपये का मालिक क्या तुझसे यो ही दोस्ती करना चाह रहा है ? क्या उसे पूजा नही चढानी पडेगी ? अगर वह इस पर राजी न हो तो तू भी क्यो छोडेगा ? अच्छी तरह से उसे दुह लेना। वह तो पैसा खच करने के लिए बेचैन हो उठा है, लेकिन उसे खरचने का कोई रास्ता मिल नही रहा है।"

अरविन्द अब जरा नरम पडा, बोला, "कितना देगा ?"

दिलीप दा ने कहा, "पहले यह बता कि तू कितना ढील दे पायेगा ? तेरी बहन राजी होगी ?"

अरविन्द ने कान पकडा।

कहा, "तुम भी दिलीप दा क्या कहते हो, कुछ ठीक ही नही है। सुसी सुन लेगी तो बिगड जाएगी और आफत मचा देगी।"

तभी दिलीप दा मानो अचानक बिगड गया।

कहा, "तब मैं भी साफ-साफ कहे देता हूँ, मेरे पास फिर कभी रुपये उधार माँगने न आना, मैं तुझे रुपये नही दे पाऊँगा। सदेश-रसगुल्ला बनना बन्द हो गया है, मेरी खुद की हालत ही खस्ता हो रही है।"

दिलीप को गुस्सा होते देखकर अरविन्द नरम पड गया।

उसने कहा, "तुम नाराज क्यो हो रहे हो दिलीप दा, तुम नाराज हो गए तो मेरा कैसे चलेगा? मा के लिए रोज एक पाव रबडी कहा से लाऊँगा? इसके अलावा सुसी की साडियाँ, गोपा की दवाएँ?"

"गोपा? गोपा को क्या हुआ?"

दिलीप दा उत्सुक हो उठा।

अरविन्द ने कहा, "वाह, तुम्हे बतलाया तो था। गोपा के फेफडो मे खराबी आ गई है, तुम्हे नही बतलाया था? गोपा की दवाएँ खरीदते-खरीदते ही तो साली जान निकल गई! इस पर दो-दो मकानो का किराया। एक सात नम्बर, दूसरा आठ नम्बर, दोनो मकान मालिको ने नोटिस दे रखा है।"

दिलीप को यह सब मालूम था। उसने कहा, "खैर, मुझे जो कहना था, मैंने कह दिया। तेरी समझ मे जो आये कर, नही तो मुझे क्या पडा है?"

अरविन्द ने अपनी आवाज और मुलायम की। उसने कहा, "अरे, जब तुम 'रिकमेड' कर रहे हो तो मुझे क्या उज्र हो सकता है? सिर्फ एक बात, वही शराब-वराब तो नही पीता?"

"तेरी अकल की भी बलिहारी है!"

अरविन्द ने बीच मे ही रोककर कहा, "नही दिलीप दा, मेरा यह मतलब नही है। मेरा मतलब यह है कि भले आदमियो के मोहल्ले मे रहते है न। हारान नस्कर लेन के सात नम्बर मकान मे तो तुम कितनी ही बार जा चुके हो! जरा सी गडबडी हुई कि आफत आ जाएगी।"

दिलीप ने कहा, "भाई, इस चीज की गारटी मैं भी नही दे सकता। पैसेवाला है, उम्र से भी जवान है, सेहतमन्द है, फिर शराब न पीये यह कैसे हो सकता है?"

अरविन्द ने कहा, "पीने की कोई बात नही, तुम सिफ इतना

ही कह देना दिलीप दा कि नशे की हालत मे कही कोई वदतमीजी न कर बैठें—माने, मोहल्लेवालो को कुछ मालूम हो, यह मैं नही चाहता।"

दिलीप ने कहा, "इस वात के लिए तू वेफिक्र रह, मैं भी भले घर का लडका हूँ, मैं क्या इतना भी नही समझता ?"

इतना कह दिलीप वेरा फिर से दूकान मे कैश के पास गद्दी पर जा वैठा। इतनी-सी देर मे 'भद्रकाली मिष्टान भडार' मे बहुत सारे ग्राहक इकट्ठे हो गए थे।

हाँ, तो शुरुआत यही से हुई।

मतलव, यह जो कहानी लिखने बैठा हूँ, जिसके आरम्भ मे बुधुआ कधे पर वकरा लादे कलकत्ते की सडको से गुजरता है और जिस रास्ते से राजभवन की ओर जुलूस जा रहा है, उस जुलूस के दूसरे हजारो लोगा म अरविन्द भी एक है। जो अरविन्द ऊपर से सफेद शट, पावो मे पालिशदार चमचमाते न्यूकट और हाथ की उँगली मे सोने की अगूठी जिसमे गोमेद जडा था, पहने हुए हे और जिसकी जेव खाली है। उससे अगर इडिया की काग्रेस गवनमेंट को गाली देने को कहो, तो वह फर-फर सरकार के सारे दोपो को दुहरा देगा। यह सव उसे मुँहजवानी याद है। उससे अगर रूस, अमेरिका या चीन की पॉलिटिक्स के वारे मे वात करो, तो वह भी उसे याद है। सडको पर, पार्क मे, 'भद्रकाली मिष्टान्न भडार' मे या चाय की दूकान पर बैठे वह घटो काट देगा और दोपहर के एक वजे सात नम्वर मकान मे आकर नहाने-खाने के वाद आठ नम्वर मकान मे जाकर पाँच वजे तक सोएगा। फिर उठकर एक कप चाय पीएगा और फिर साफ कपडे पहनकर वह निकल पडेगा।

और फिर ?

फिर इसके वाद ही तो असली उपन्यास शुरू होता है। वास्तव मे

असली उपन्यास मार्टिन कम्पनी के जयचंडीपुर से शुरू होता है। वही से, जहाँ से बुधुआ वगैरह कंधे पर बकरा लादे कालीघाट में देवी के आगे बलि चढ़ाने आ रहे हैं और इधर से राजभवन की ओर एक जुलूस बढ रहा है।

उन्नीसवी सदी के प्रत्यय की जड में से जैसे एक नये और अविश्वासी समाज का अंकुर फूट निकला। इस समाज का रसोईघर और पानी का नल हारान नस्कर लेन के सात नम्बर मकान में था और आठ नम्बर मकान में उसके सोने का कमरा था।

उस आठ नम्बर मकान के कमरे में उस दिन शाम को गोपा टूटी कुर्सी पर बैठी शरत्चन्द्र का 'श्रीकान्त' पढ रही थी। 'श्रीकान्त' जो एक अच्छी किताब है, गोपा इसलिए नही पढ रही थी। असल में बात यह थी कि दोनो घरो में किताब के नाम पर जो भी था, महज यही थी। किताब का नाम क्या है और किसकी लिखी है, गोपा को शायद यह भी मालूम नही था। खाली बैठे न रहकर कुछ करना चाहिए, महज इसी खातिर वह किताब लेकर बैठी थी।

अचानक अरविन्द अन्दर दाखिल हुआ। साथ में भडकीले कपडे पहने एक आदमी था।

इस अनजान आदमी को देख, गोपा सकपका गई।

अरविन्द ने कहा, "आठ नम्बर मकान यही है। गली का नाम यही है, हारान नस्कर लेन। आपको काफी तकलीफ हुई शिरीष बाबू—"

शिरीष बाबू अद्धी के कुर्ते में पसीने से लथपथ हो रहे थे।

उन्होने आश्चर्य से पूछा, "क्यो ?"

"गाडी गली के बाहर छोडकर आना पडा न, इसी से।"

'अरे, तो इससे क्या हुआ ? गाडी है इसलिए क्या पैदल चलना भूल गया हूँ ? आप भी क्या कहते है अरविन्द बाबू !

इतना कहकर वे एक कुर्सी खीचकर बैठ गए। फिर मुँह ऊपर कर उन्होने छत की ओर देखा।

"क्या पखा और तेज नही हो सकता ?"

अरविन्द ने अपनी गरीबी को हँसकर उडा देने की कोशिश की, 'अरे साहब, इतनी देर से यही बात तो आपसे कह रहा था, हमारा देश बडा ही पाजी देश हो चला है, किसी पर भी यकीन करना

मुश्किल है, सब साले चोर है—"

"क्यो ?"

शिरीष बाबू शायद उसकी बात समझ नही पा रहे थे। पखे के साथ देश का क्या सपर्क हो सकता है, यह उनकी समझ मे तुरत नही आ रहा था।

देखिए न, आजकल लेबर का दिमाग कितना चढ गया है। दस दिन हो गए, मैकेनिक और मिस्त्रियो के घर चक्कर काटते-काटते पैरो की नस ढीली हो गई। इसके बाद बाबू साहब कृपा करके एक दिन आये, जरा हाथ लगाया और पच्चीस रुपये की चपत लगाकर चले गये।"

शिरीष बाबू को इन बेकार की बातो मे कोई मजा नही आ रहा था। उन्होने खुद ही गोपा की ओर देखकर हाथ जोडते हुए कहा, "अरविन्द बाबू, आपने इनसे तो परिचय कराया ही नही—"

अरविन्द ने शर्मिन्दा होकर कहा, 'अरे, मैं भी कैसा भुलक्कड हूँ। अरे यही तो है मेरी वाइफ गोपा, और आप है शिरीष बाबू—"

"शिरीष दासगुप्त।" शिरीष बाबू ने पादपूरण करते हुए कहा।

हा-हा शिरीष दासगुप्त, ज्वेलर्स—"

शिरीष बाबू ने फिर पादपूरण किया, 'ज्वेलस एण्ड वाच डीलस—"

हाँ-हा, ज्वेलर्स एण्ड वाच डीलस! आपका क्या घडियो का कारोबार भी है शिरीष बाबू ?"

शिरीष बाबू ने कहा, "सोने के कारोबार को तो आपकी सरकार ने चौपट कर दिया है, अब घडी बेचकर ही गुजारा करना पड रहा है। हाल मे एक ग्लास फैक्टरी' भी दूसरे के नाम से चालू कर दी है, नाम है 'इण्टरनेशनल ग्लास फैक्टरी'।"

लेकिन घडियो का रोजगार भी तो अच्छा है! आजकल घडिया की कीमत ही कौन कम है ?"

शिरीष बाबू ने बडी मुश्किल से कहा, 'फायदा कहा है ? अब क्या वे दिन रह गए है ? हर महीने दस हजार पैदा करने मे ही जान निकली जाती है। अब कोई फायदा नही है।"

"दस हजार ?"

"और क्या ! इससे कम मे भले आदमी की तरह नही रहा जा सकता। तीन-तीन गाडियो मे क्या कम पेट्रोल जलता है ?"

तभी जैसे शिरीष बाबू ने बेकार की बातें छोडकर असली बात चलायी। उन्होने कहा, "ये सब बातें अब छोडिए अरविन्द बाबू ! दिन भर रुपये के बारे मे सोचते रहना अच्छा नही लगता। हाँ, तो आप कौन-सी किताब पढ रही थी ? अरे, आप खडी क्यो है, बैठिए न—"

अरविन्द को भी जैसे इतनी देर बाद ख्याल हुआ।

"अरे हाँ, तुम खडी क्यो हो ? बैठो न !"

कमरे मे कुर्सियाँ सिर्फ दो थी, जबकि बैठनेवाले तीन थे। इसीलिए गोपा जरा सकुचा रही थी। लेकिन ऐसा मौका आज पहली बार तो आया नही था। इसलिए बेकार मे और ज्यादा वक्त बरबाद न कर गोपा बाकी बची कुर्सी को खीचकर बैठ गई।

"और आप ?"

अरविन्द ने कहा, "मेरी बात जाने दीजिए, मेरा तो घर ही है, सारा दिन बैठा ही रहता हूँ। बल्कि आप लोग बात कीजिए, मैं अभी आया—"

"आपकी 'सिस्टर' कहाँ है ? उनके साथ भी आपने परिचय नही कराया ?"

असल मे शिरीष बाबू जिससे दोस्ती गाठने आये थे, वही गैरहाजिर थी। शिरीष बाबू को लग रहा था, जरूर कही कोई गडबड है, लेकिन 'भद्रकाली मिष्टान्न भण्डार' के दिलीप ने तो कहा था, घर मे एक जवान बहन है।

'मैं अभी आता हूँ शिरीष बाबू ! बस, अभी आया—"

'लेकिन आप जा कहाँ रहे है ?"

अरविन्द ने मुस्कराते हुए कहा, 'डरने की कोई बात नही है, मैं भाग नही रहा हूँ, अभी आ जाता हूँ।"

कहकर शाम के उस झुटपुटे मे दोनो को सोने के कमरे मे छोडकर अरविन्द गली पारकर सात नम्बर मकान मे चला आया। शायद चाय का इन्तजाम करने।

'इनक्लाव !"

'जिन्दाबाद !"

'अरे भाई, जरा जोर से बोलो—जिन्दाबाद ! एक जना कहगा 'इनक्लाव' और आप सभी मिलकर कहगे—जिन्दाबाद !"

इतनी देर मे इधर-उधर से धड-पकडकर पचासेक लोग जमा हो पाये थे। और भी पचासेक होते तो अच्छा रहता। श्यामबाजार की ओर से नार्थ कलकत्ते की टोली आएगी और साऊथ से यह टोली जाएगी। राजभवन पर एक साथ दोनो ओर से 'अटैक' करना होगा जिससे पुलिस दो टुकडियो मे बँट जाए।

यादवपुर के इस मुहल्ले मे उस समय चिलचिलाती धूप थी।

साइकिल से जाते हुए अभी एक आदमी कह गया, "इस जुलूस और 'प्रोसेशन' से कुछ भी नही होना है, वोट देते वक्त सभी काग्रेस को वोट देंगे।"

कलुआ फटिक तुरत चिल्लाया, 'साला जरूर सरकारी गुरगा है रे !"

इसके बाद अरविन्द की ओर नजर पडने पर उसने पूछा, "क्यो अरविन्द बाबू क्या सोच रहे है ?"

अरविन्द ने कहा, 'दिलीप दा के बारे मे सोच रहा था। सोचा था, उनसे कुछ रुपये मिल जाएँगे—"

"दिलीप दा कौन है ?"

अरे वही 'भद्रकाली मिष्टान्न भडार' है न, उसी का प्रोप्राइटर। लेकिन मिल नही पाया, बिना रुपये मिले गोश्त कहा से खरीदूगा ?"

'अरे जनाब, गोश्त-वोस्त खाना अब बद कर दीजिए। दो दिन बाद भात भी मिलना मुश्किल हो जाएगा, यह कहे रखता हूँ। हो सके तो हमारी पार्टी मे शामिल हो जाइए—"

कलुआ फटिक काफी अरसे से पार्टी मे शामिल होने के लिए कह रहा था। लेकिन आज अरविन्द जैसे सारी पार्टियो मे है। तुम्हारी पार्टी मे भी हूँ और उनकी पार्टी मे भी। कोई भी मेरा पराया नही

है। दिलीप दा हो या शिरीप वावू, मुझे सभी से मेल रखना पडता है। मुझे सभी से उधार माँगना पडेगा।

शुरू-शुरू मे शिरीप वावू जरा शर्माते थे। पहले दिन शर्म के मारे गोपा से अच्छी तरह वात भी नही कर पाये। उस दिन जव शिरीप वावू को आठ नम्वर मकान मे बैठाकर चला आया तो अरविन्द ने सोचा कि उसके वहाँ से चले आते ही शिरीप वावू का सकोच कम हो जाएगा। कुछ भी हो, आखिर है तो परायी वीवी न!

सात नम्बर मे आते ही माँ ने पूछा, "क्यो रे, यह रवडी क्या तू खरीदकर लाया है?"

अरविन्द ने कहा, "मैं ही खरीदकर लाता। लेकिन मेरे दोस्त ने किसी तरह माना ही नही—"

"तेरा दोस्त? यह तेरा कौन दोस्त है? वलाई की वात कर रहा है क्या?"

"धत्, तुम भी किसकी वात कर रही हो। वलाई ने आज तक कभी एक किलो रवडी तुम्हारे लिए दी है? उसके पास इतना रुपया कहाँ है? मेरे इस दोस्त के पास जानती हो, कितनी गाडियाँ हे?"

"कौन जाने भैया, मुझे क्या मालूम कि तेरे दोस्त के पास कितनी गाडियाँ है।"

अरविन्द झुँझला पडा, "जो वात जानती नही हो, उस पर वोलती क्यो हो? वाहर जाकर देख आओ, कितनी वडी गाडी है, पूरे पचास हजार की है।"

माँ ने कहा, 'मैं क्या देखूगी! मुझे तो भात की थाली दिखाई नही पडती। कव से कह रही हूँ तुझसे, एक चश्मा तक नही वनवाया गया—"

"अव वनेगा। यह दोस्त ही वनवा देगा। इसके पास ऐसी तीन गाडियाँ है। एक गाडी की कीमत पचास हजार है, तो तीन की कितनी होगी, जरा सोचो! शिरीप वावू खुश हो गए तो तुम्हारा चश्मा क्या, एक मकान भी वनवा सकते है।"

ना वावा, मुझे चश्मा नही चाहिए वल्कि तू वहू और सुसी को एक दिन गाडी मे विठाकर घुमाना, वे कभी मोटर मे नही वैठी है।"

अरविन्द ने कहा, "अरे इसीलिए तो इस दोस्त को घर लाया हूँ।

मैं भी तो यही चाहता हूँ, लेकिन तुम्हारी बिटिया है कि उसकी समझ मे ही कुछ नही आता। अरे, इतना बडा आदमी है, जरा खातिरदारी कर देगी तो कौन-सा गजब हो जाएगा ?"

"मुसी क्या तेरे दोस्तो की खातिरदारी नही करती ?"

"खाक करती है ! वह मेरी बात सुनती तो मेरी यह हालत क्यो होती। उस दिन कहा, मेरा एक दोस्त आएगा, उसे एक कप चाय खुद जाकर देना। लेकिन उसने ऐसा कहाँ किया ? यह जो तुम्हे अफीम खाने की आदत है, मैं कहाँ से तुम्हारे लिए रोज-रोज रबडी लाऊँ ?"

माँ ने अचानक कहा, "सुना है, आजकल बाजार मे रबडी नही मिल रही है। सरकार रबडी बनाने नही दे रही है ?"

"तुम भी माँ, भोली की भोली हो।"

अरविन्द ने आगे कहा, "शिरीष बाबू से अगर कहूँ कि मेरी मा के लिए गधी का दूध चाहिए, तो उसका भी इन्तजाम हो जाएगा। इसी को कहते हैं रुपये की ताकत ! अपने दिलीप दा को देखो, चोरी-छिपे सदेश और रसगुल्ले घर-घर भेजते हैं। दूकान मे जाकर देखो, कुछ भी नही है।"

अचानक जैसे माँ को ख्याल आया। पूछा, "अरे, तू वहाँ क्या कर रहा है ?"

"करूँगा क्या, चाय बना रहा हूँ। तुम्हारी बिटिया से तो इतना भी उपकार करते नही बनता। घर मे एक दोस्त आया है, वह भी कोई ऐरा-गैरा दोस्त नही, करोडपति दोस्त है। उसे एक कप चाय पिलाये बिना कैसे जाने दे सकता हूँ ?"

"लेकिन बहू कहाँ गयी ? उससे क्यो नही कहता ?"

"तुम्हे तो सारा दिन बहू की पडी है ! क्यो, बहू को छोड क्या इस घर मे कोई और नही है ?"

"लेकिन चाय बनाने मे कौन-सी मेहनत लगती है, आखें होती तो मैं ही बना देती !"

"मैं तुमसे कब कह रहा हूँ बनाने को ?"

"नही, मैं कह रही थी, चाय बनाने को तू बहू से भी कह सकता था। तू क्यो जुट गया ?"

"लेकिन घर मे कोई आये तो बैठकर उससे दो बातें करना भी

तो एक काम है, तुम्हारी वहू है इसलिए जरा इज्जत वची है। नही तो यहाँ किसे फुरसत है ?"

इतने मे अरविन्द दो कप चाय लेकर बाहर आया। दोनो हाथो मे चाय के दो गरम कप। सात नम्वर मकान से निकलकर जरा-सा दायी ओर वढते ही आठ नम्वर मकान है। यहाँ अरविन्द का बेडरूम प्लस ड्राइगरूम है। वारिश के दिनो मे छाता लेकर एक कमरे से दूसरे कमरे मे जाना पडता है। कमरे मे बैठने पर गली की ओर वाली खिडकी वन्द कर देनी पडती है, नही तो वाहर से अन्दर विछा तख्त दिखलाई पडता है। लेटने पर अपने को राहगीरो की दया पर छोड देने के अलावा कोई चारा न रहता। वैसे सर्दियो मे खास तकलीफ नही होती। रात को रजाई ओढकर मजे से खर्राटे लेते रहो। लेकिन गर्मियो मे सारी रात पखा चलाते रहने पर भी दोनो एकदम 'रोस्ट' हो जाते। उस समय वदन पर से कपडे हटाकर जरा ठडा हो लें, यह भी मुमकिन नही, क्योकि खिडकी और दरवाजे मे अनगिनत सूराख थे। राह चलते गुडे-वदमाश अगर कृपादृष्टि देना चाह तो उन्हे रोकने का कोई उपाय नही था।

अरविन्द ने अखवार की छोटी-छोटी वत्तियाँ वनाकर उन छेदो को बद कर दिया था, लेकिन वारिश होते ही कागज सड जाता है। कागज सड जाने से छेद ज्यो के त्यो निकल आते। असल मे तभी मुश्किल होती है।

अरविन्द के जो दोस्त आकर वहाँ बैठते, उन्हे इसके वारे मे मालूम नही रहता। अकेला समझकर वे लोग गोपा से छेडछाड करते। अरविन्द अगर चाहे तो वाहर खडा इन सूराखो से देख सकता है कि अन्दर क्या हो रहा है ?

कोई-कोई तो गोपा के विल्कुल पास आकर बैठ जाता। एकदम आमने-सामने।

अरविन्द चाहता भी यही था कि उसके दोस्त गोपा के वदन से सटकर बैठें। वे लोग जितना गोपा मे सटकर बैठते, अरविन्द को उतनी ही खुशी होती। उसके दोस्त अगर गोपा का हाथ पकड लेते या उसके मुह के पास मुँह ले जाकर वहुत धीरे-धीरे वातें करने लगते, तव तो उसकी खुशी का ठिकाना ही नही रहता।

इसीलिए तो चाय लाने का वहाना करके अरविन्द आठ नम्बर मे सात नम्बर के कमरे मे चला गया था। जाते वक्त दरवाजे और खिड़कियाँ अच्छी तरह से बद कर गया जिससे दोनो को जरा आड मिल जाय, जिससे दोनो सटकर बैठने की हिम्मत कर सकें।

अचानक जैसे अरविन्द ने भूत देख लिया।

"अरे सुसी, तू ? आज जल्दी आ गई ?"

सुसी याने सुसीमा। पहले नाम था सुशीला। नाम मा ने ही रखा था। लेकिन सुसी को वह नाम पसद नही आया। यह भी कोई नाम है, एकदम पुराना। वाद मे यह सुशीला ही सुसीमा हो गई। भैया को चाय ले जाते देख, सुसी समझ गई कि फिर कोई दोस्त आया है।

सुसी अरविन्द की वगल से निकलकर अन्दर जा रही थी, लेकिन भैया ने उसे जाने नही दिया।

उसने कहा, 'वाहर सडक पर एक वडी-सी गाडी देखी ?"

"हाँ, लगता है खूब पैसेवाला है।

अरविन्द ने कहा 'हाँ, ऐसी तीन गाडियाँ है, वेशुमार दौलत है। कह रहा था, अपनी 'सिस्टर' से मिलवा दीजिए—"

'तुम्हे कितने रुपये मिले ?"

"तुझे तो एक ही वात सूझती है। क्यो, एक वार सामने जाकर दो वात करने से तेरा क्या विगड जाएगा ? कोई खा तो जाएगा नही, सिर्फ जाना और चाय देकर चली आना। सच, और कुछ नही करना होगा। कसम से कहता हूँ।"

सुसी के वदन से सेंट की महक आ रही थी। उसने सिल्क की साडी पहन रखी थी, पाँवो मे चप्पलें भी नयी थी। पलक झपकते मे यह सब देखकर अरविन्द को वडा आश्चर्य हुआ।

उसने कहा, ठीक है, मैं किसी से दो मिनट वात करने को कहूँ तो तुझे बुरा लगे, लेकिन तू अपनी मर्जी से कितनो के साथ घूमती है, क्या इसका मुझे पता नही है ?"

सुनकर सुसी जैसे आग हो गई। उसने कहा, "मैं खुद घूमती हू ?"

"घूमती नही है ? सभी ने तुझे घूमते देखा है।"

"वताओ, किसने देखा है मुझे घूमते ? किसके साथ घूमते देखा

है ? तुम्हे बतलाना ही पड़ेगा। बगैर बताये मेरा नाम बदनाम करने से काम नही चलेगा। बोलो, किसने देखा है, किस हरामजादे ने देखा है ?"

"और किसी ने देखा होता तो कोई बात न थी, खुद दिलीप दा ने देखा है।"

"तुम्हारा दिलीप दा तो पूरा जानवर है।"

"क्या कहा ?"

दोनो हाथो मे गरम चाय के दो प्याले लिये अरविन्द भभक उठा। हाथो मे अगर चाय के कप न होते, तो पता नही क्या करता। उसने कहा, "तेरे कहने का मतलब है दिलीप दा ने झूठ कहा है ! तब ये रोज नयी साडियाँ कहाँ से आती है ! ये चप्पलें कौन देता है ! तेरे कालेज की फीस हर महीने कौन भरता है ?"

"माँ, माँ, देखो भैया क्या कह रहा है ?"

अन्दर से बूढी माँ की आवाज सुनाई दी, "क्यो खोका, फिर झगडने लगा है ?"

अरविन्द ने गुस्से मे दाँत किटकिटाते हुए कहा, "जाओ, और बहाने की जरूरत नही है। शिरीष बाबू एक किलो रबडी लाये है, मजे से चाटो। मेरी किस्मत ही खराब है, तो कोई क्या कर सकता है !"

कहकर अरविन्द वहाँ और नही रुका, सात नम्बर मकान पार कर वह आठ नम्बर के सोनेवाले कमरे के सामने आकर खडा हो गया। अँधेरी गली मे कोई भी न था। एकदम सुनसान था। असल मे हारान नस्कर लेन है भी एक बहुत ही सँकरी गली और यह थी उसकी भी शाखा गली। हारान नस्कर लेन से निकलनेवाली एक बहुत ही सँकरी और अँधेरी बन्द गली।

चाय के कप हाथ मे लिये अरविन्द दरवाजे के आगे चुपचाप खडा हो गया। धीरे से जरा-सा धक्का देते ही दरवाजा खुल जाता, लेकिन पता नही, क्या सोचकर वह खिडकी के पास जा खडा हुआ। खिडकी भी अन्दर से बन्द थी। अरविन्द को मालूम था कि कहाँ और किस सद से देखने पर अन्दर का सब कुछ देखा जा सकता है।

सद मे आख लगाकर अरविन्द हैरान रह गया।

अरे, शिरीष बाबू तो ज्यो के त्यो एक ही जगह बैठे हैं ! दोनो जरा मटकर भी नही बैठे। लगता है यह गोपा सारा गुड गोबर कर देगी। अकल नाम की चीज से तो जैसे इसका वास्ता ही नही पडा है। अरे बाबा, मैं तो तुम लोगो को मौका देने के लिए ही बाहर चला आया, और तुम लोग हो कि हाथ पर हाथ धरे मुह ताक रहे हो ? इन उजबको से क्या गृहस्थी चलती है ? झाड़ू मारो ! झाड़ू मारो इस तकदीर को !

फिर पैर से धक्का देते ही दरवाजा खुल गया।

शिरीष बाबू ने मुडकर कहा, "यह क्या है, आप खुद ही चाय लेकर आये ?"

"जरा देर हो गई। सिर्फ चाय लेकर ही चला आया। कुछ लाऊँ ? समोसे वगैरह ?"

"नही-नही, वह सब हजम नही कर पाऊँगा।"

"ठीक है तब चाय ही लीजिए। मैं जाकर पान और सिगरेट ले आता हूँ—"

"अरे नही, सिगरेट मेरे पास है।"

"तब पान ले आऊँ, बस गया और आया—"

शिरीष बाबू ने कहा, "इससे तो आप अपनी 'सिस्टर' को बुला लाते और भेंट हो जाती।"

अरविन्द ने कहा, 'बहन को ढूढने ही तो गया था, लेकिन अभी तक वह कालेज से नही लौटी।"

"अरे, इतनी रात तक कालेज ?"

अरविन्द ने कहा 'आजकल के स्कूल-कालेजो का भी कुछ ठीक है साहब एकदम गऊशाला हो गए हैं। सिर्फ धधेबाजी है, धधेबाजी। हम लोगो के जमाने म भी कालेज थे, तब कितनी पढाई होती थी आप ही कहिए। लेकिन आजकल की तो बात ही निराली है। कालेज के मास्टर भी वैसे ही कामचोर हो गए ह। इसके अलावा ट्राम और बसा की भीड के मारे इज्जत-आबरू बचाकर बेचारी औरतो का घर लौटना मुश्किल हो गया है—"

तभी जैसे अचानक याद आ गया। उसने कहा, "आप चाय पीजिए तब तक मैं पान ले आता हूँ, बस गया और आया।"

कहकर अरविन्द दरवाजे के दोनो किवाड भिडाकर फिर निकल गया।
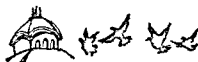
अरे रे रे

डलहौजी स्क्वायर के फुटपाथ से एक विशालकाय साँड दौडा आ रहा था। सीग मार ही देता! बुधुआ ने झटका देकर लडकी को अपनी ओर खीचा।

इसके वाद फिर बकरे के दोनो पैरा को जोर से पकड़ लिया।

'बुद्ध् कही के। एसन झापड मारव कि मुँह टेढ हो जाई।"

जरा देर पहले ही बुधुआ की मा वस के नीचे आते-आते वच गई थी। रास्ता चलते लोग हे-हे करने लगे थे। अभी अगर लडका साँड की चपेट मे आ जाता तो क्या होता! वह तो भगवान ने वचा लिया नही तो—"

हर एक के कपडे के छोर एक-दूसरे मे बधे थे। इधर-उधर जाने का रास्ता नही था। झटका लगने से बूढी मा का ध्यान उधर गया। इतनी देर से वह रास्ते की चमक-दमक मे खोई थी।

उसने पूछा, का भइल रे बुधुआ ?"

'देख ले हरामी के बच्चा के दिमाग देख ले, आन्धर होव के रास्ता मे चलत वा गाडी के नीच पर जइहन त चीर चापुट हो जाई, वड वन्हिया होई हरामी के वच्चा के तबै होश आई।"

मा ने कहा, 'बुधुआ ऊ घर कवना चीज के हव रे ? अतन वडका घर!"

बुधुआ ने मकान की ओर को देखकर बडे भारी जानकार की तरह कहा कवनो वडका गउरमिटी आपिस होई।"

बुधुआ की माँ शायद चालीस साल पहले के कलकत्ते की यादगार के साथ आधुनिक कलकत्ते का मिलान करके देख रही थी। उस वार वह अपने आदमी हरजमलाल के साथ घूघट काढकर यहा आयी थी। बुधुआ की बहू की तरह वह घूघट काढे, सडक पर ठीक इसी तरह चली थी। लेकिन आज के कलकत्ते और उस जमाने के कलकत्ते मे

दुखमोचन के बदन पर खाकी वर्दी थी। छाती पर दफ्तर का नाल-खुदा बडा-सा पीतल का बिल्ला लगा था।

"चल बेटा, तनी अपना डेरा पर चलके पानी-वानी पी ले—"

अचानक इस तरह किसी अपने आदमी से मुलाकात हो जाएगी, यह बात बुधुआ की कल्पना के बाहर थी।

"घरवा आपन हो का काका ?"

"अरे ना हो बबुआ, आपिस के कवाटर हव। येही बिलायती बैंक मे काम करत आज तीस साल हो गइल कवाटर ना देइब—"

दुखमोचन आदमी भला था। शायद ड्यूटी पर जाने के लिए निकला था, रास्ते मे इन लोगो को देखकर अपने घर चलने के लिए कहने लगा। कालीजी का मदिर तो अभी काफी दूर है, डेरे पर चलकर थोडा सुस्ता लो, फिर आगे बढना। यहा से करीब तीन कोस रास्ता तो होगा ही!

बुधुआ की टोली दुखमोचन के घर की ओर मुड गई। जान-पहचान का आदमी है, सुनकर बुढिया ने घूघट खीच लिया। दुखमोचन हरबसलाल को जानता था, "अरे राम रे! भइया चल बस ले, अभी उनकर उमिरिये कतना रहे! खैर, एक-न-एक दिन जाए के सब ही के होई।"

तब तक दुखमोचन का डेरा आ गया। घर माने एक बडे बैंक की बिल्डिग की सीढियो के नीचे बाथरूम और पाखानो से लगी चहार-दीवारी से घिरी एक जगह, ऊपर छत थी।

"बबुआ- इ तोहरे घर हौ, अराम से बइठा—"

"काका, कालीघाट पहुँचत-पहुँचत त ढेर देरी हो जाई काका।"

"अधिक दूर ना, थोडही दूर बा, अराम से पहुँच जइब।"

हाँ, तो दुखमोचन सचमुच ही अच्छा आदमी था। परदेश मे ऐसा आदमी मिलना भाग्य की बात है। आजकल कौन किसे पूछता है? पता नही, कहाँ से लोटा भरके ठडा पानी ले आया। बकरे को बाहर खोलकर उसके आगे थोडे से चने डाल दिये। तैयार बकरा है।

"बबुआ, तोर बकरा तो बढिया बा, कतना के मिलल ? पच्चीस-तीस रुपया त लाग गइल होई ?'

"ना हो काका, बीस मे मिलल हव, बेसी त ना दिहनी हा ?"

हव लेकिन बबुआ, पडन से हुशियार रहि ह—"

कहकर दुखमोचन उठ खडा हुआ—उस ड्यूटी पर जाना था।

बुधुआ ने कहा, "लौटानी पर देवी माई के मास प्रसाद ले के आइब काका—"

हुक्का-पानी करके बुधुआ की माँ भी ताजा हो गई थी। बीबी बुधिया और बेटी रगिया के पैरो म भी जैसे नया जोश आ गया। बुधुआ ने बकर को फिर से कधे पर चढा लिया। चने खाकर वह भी जरा ताजा हो गया था।

"अच्छा काका, अब चलत बानी।"

"अच्छा बबुआ, बोला काली माई की जै।"

बुधुआ भी बोल उठा, "काली माई की जै।"

कलकत्ता शहर जसे एक बडे अजगर की तरह है। अगर सोता है तो सोता ही रहता है। लेकिन कलकत्ता जब भूखा होता है तो फिर उसे ताल-मात्रा का ख्याल नही रहता। वैसे यहा पर सब कुछ बडे कायदे के मुताबिक होता है। सुबह टाला टैंक से नल के माफत पानी आना शुरू होता है। मोटे-मोटे होस-पाइपा से गगा का पानी छिडकाना शुरू हो गया। अखबार बेचनेवाले हाकर अपनी साइकिल रोककर तिमजिली और चौमजिली इमारता के फ्लैटो मे मोड-मोड-कर अखबार फेंकते ह, फिर दम साधे साइकिल भगाते। जहा-तहा सडको के किनारे कच्चे कोयला की अँगीठिया सुलगती नजर आने लगी। मिठाईवाले और हलवाई पिछले दिन के बासी समोसे और कचौडिया कौआ के आगे फेंककर पुण्य अजन करने की कोशिश करते ह। और तभी धीरे-धीरे शहराती लोग अपने रोजमर्रे का काम-काज शुरू करते ह। हारान नस्कर लेन के सात नम्बर के घर मे तब अरविन्द की बूढी मा अफीम की खुमारी उतर जाने पर खाँसना शुरू करती है। खासते-खासते बेचारी का दम फूल आता है। उस खाँसी की

आवाज से ही सुसी की नीद टूट जाती है। वह उठकर आँख मलती नल की ओर हाथ-मुँह धोने जाती है। और तभी आठ नम्बर के घर से गोपा इधर आती है। रोज की तरह अँगीठी सुलगायी जाती है। और नल के पास पडे वतनो मे लगी जूठन के लालच मे पता नही कहाँ से काँव-काव करते वीसियो कौवे आ जुटते है।

जरा और उजाला होने पर सडक पर ट्रामे और वसें चलने लगेंगी। झुण्ड के झुण्ड लोग हाथ मे थैला लिये साग-सब्जी लाने निकल पडेंगे। सुवह-सुवह इतने सारे लोग कहाँ से आ जाते ह, यह शायद खुद कलकत्ता शहर भी नही जानता। ये लोग कहाँ से आते ह और कहाँ जाते है, काफी सिर खपाने के वावजूद यह वात शहर कलकत्ते की समझ मे नही आती।

यह जो बुधुआ एक वकरा कधे पर लादे हावडा मैदान से चला आ रहा है, ये लोग हमेशा-हमेशा से इसी तरह आते रहे ह। यह शिरीष वावू जो अपनी वडी गाडी से उतरकर हारान नस्कर लेन की अँधेरी और वन्द गली मे खो जाते ह, वे क्या खो गए यह कलकत्ता नही जानता, सिर्फ वे ही क्यो ? 'भद्रकाली मिष्टान भडार' का मालिक दिलीप वेरा नोटो की गड्डी सम्हाले किस फिराक मे वैठा है, यह भी कौन कह सकता है ? इसके अलावा सडक पर जुलूस मे शामिल थे जो वेकार और निकम्मे लोग लाल-नीले फेस्टून उठाये वडे जोश-खरोश से इनक्लाव-जिन्दावाद चिल्ला रहे है, य ही लोग आखिर किस आकपण से और किसका विरोध करने जा रहे ह, यह शायद उन्हे खुद भी मालूम नही है।

खैर, नही जानते तो न जानें, लेकिन कलकत्ता हमेशा से यह तमाशा देखता आ रहा है, आज भी देख रहा है। आज भी वह देख रहा है कि सात नम्वर हारान नस्कर लेन से सुसी सज-धजकर निकली। नित नयी साडिया और नित नयी चप्पलें उसे कहाँ से मिलती ह, यह उसका भैया, उसकी भाभी या उसकी वूढी माँ, कोई भी नही जानता। सुसी यह जताना भी नही चाहती।

सुसी जव वस म चढती ह, तव उसकी पीठ पर चोटी लहराती है और हाथ मे एक कापी रहती है, जिसमे वह कालेज के प्राफेसरा के 'नोट्स' लेती है। इसके अलावा हाय म एक वडा फूला हुआ वॉटिी वग होता है।

वस न जाने कितने कालेजो के गेट पार कर जाती है, फिर भी सुसी वस से नही उतरती। 'पूर्ण' थियेटर के सामने वह वस से उतरती है। इसके वाद पूरव तरफ की सँकरी टेढी-मेढी गली मे घुस जाती है। गली के अन्दर दोना ओर दुमजिली, तिमजिली इमारतें ह। यह गली दायें-वायें मुडती, किधर से किस सडक मे जा मिलती है, यह वात कभी-कभी इस गली के वाशिन्दे भी नही वतला पाते। लेकिन सुसी को अच्छी तरह मालूम है कि उसे कहाँ जाना है।

एक तिमजिली इमारत के सामने जाकर सुसी खडी होगी। फिर वगलवाली गली मे थोडी दूर जाते ही एक सीढी दिखायी देगी। उस सीढी से सीधे तिमजिले पर जा पहुँचेगी। वहा कॉलिंग वेल का एक वटन है, जिसे दवाएगी। वटन दवाते ही कोई जवाव नही मिलेगा। दरवाजे मे एक छेद है, जिसमे मोटा काच लगा है। वही से, अदर से वेणु दी भाककर उसे देखेगी। अगर देखगी कि कोई जान-पहचान का है तो वह चट से दरवाजा खोल देगी।

आज भी वेणु दी ने कहा, "क्यो री? इतनी सुवह कैसे आ गई?"

वेणु दी के पास काफी पैसा है यह वात अन्दर का सामान और फर्नीचर देखकर समझ मे आ जाती है।

सुसी ने कहा, "वेणु दी, आपके पास ही आयी थी।"

"यह तो देख रही हूँ। तूने आकर वडा अच्छा किया। लेकिन तेरा चेहरा इतना सूखा क्यो लग रहा है?"

"कल जिस आदमी के साथ तुमने भेज दिया था, वह अच्छा नही है, वेणु दी—"

"निखिल! निखिल की वात कर रही है? क्या, क्या हुआ?"

सुसी ने कहा, "वात हुई थी कि उसके साथ सिर्फ सिनेमा देखूगी और कुछ नही करूँगी, लेकिन सिनेमा छ वजे खत्म हुआ तो उसने क्या कहा जानती हो?—कहने लगा—लेक चलो—"

वेणु दी ने कहा, 'ओ माँ, उसकी यह मजाल?"

सुसी ने कहा, हाँ, मैने तो कह दिया कि लेक जाने की वात तो विलकुल नही थी। ठीक हुआ था मै तुम्हारे साथ सिनेमा देखने जाऊँगी। पूरे खर्चे के अलावा मुझे दस रुपये और देने पडेंगे। यह मेरा रेट है। ठीक कहा न मैने!"

"विलकुल ठीक कहा है तूने, फिर क्या हुआ ?"

"कह दिया कि लेक जाने के लिए दस रुपये फी घटा और देना होगा। पता नही, वहाँ अँधेरे मे ले जाकर क्या करे। फिर सारी झझट मेरे ही गले लगेगी। मुझे तो वडा डर लग रहा था। इस पर तुम्हारे निखिल ने क्या कहा, जानती हो ? कहा कि इस वक्त रुपये नही है, वाद मे दे दूगा। इन घघो मे पैसा वाकी छोडने से कही काम चलता है ? लडकियो का साथ करने का इतना शौक है तो जेव मे रुपये लेकर निकलना चाहिए न ? मैं तो साफ वात पसद करती हूँ।"

'फिर क्या हुआ ?"

"इस पर क्या कहता है, जानती हो ? कहने लगा—मुझे तुमसे प्यार हो गया है, तुम्हे छोडकर जाने को जी नही चाह रहा है। कहने लगा—चलो, किसी होटल मे आज की रात एक साथ काटी जाए। मैंने कहा, ऐसे प्यार मे आग लगे। वहुत प्यार उमड रहा है तो पहले रुपये निकालो।"

जरा रुककर सुसी कहने लगी "इसके वाद क्या हुआ, जानती हो ? मेरे वदन मे हाथ लगाकर छेडछाड करने लगा।"

"यह मजाल ! कसकर एक तमाचा क्या नही जड दिया ?"

सुसी ने कहा, 'मैंने सोचा, तुम्हारा क्लायट है, शायद तुम नाराज हो जाओ।"

"मैं क्या नाराज होने लगी ? मेरे साथ एक तरह की वात करके गया और वहा पहुँचकर दूसरी ही वात करने लगा। यह तो अच्छी वात नही है। नही सुसी तूने ठीक किया। इस वार निखिल आया तो मुँह पर जूता रगड दूगी। छी-छी, मुझे यह कारोवार करते इतने दिन हो गए ऐसा कमीनो का सा वर्ताव करते किसी को नही देखा। अव की आया तो साफ कह दूगी, यही सव करना है तो साना-गाछी-चितपुर जाओ, यहा यह गदी हरकत नही चलने की। मेरी लडकिया भले घर की है। महज मुसीवत की मारी तुम लोगा के साथ थोडा मन वहलाने के लिए घूम-फिर लेती है तो इसका मतलव यह नही कि अपनी इज्जत विगाडेंगी।"

सुसी ने कहा, 'मैंने भी तो यही कह दिया—"

'तू ही क्यो, अपने लडको से मैं भी तो यही कहता हूँ। कह देती

हूँ, यह सोनागाछी-चितपुर नही है। मेरी लडकिया यह काम करती हे तो मत सोचो, रुपये के लिए वे अपनी इज्जत बेचेंगी। दो पैसे जमाकर मेरी लडकियाँ भी एक दिन जमीन खरीदेंगी, मकान वनवाएँगी, ब्याह-शादी करेंगी, गृहस्थी वसाएँगी—"

इसके वाद जरा रुककर वेणु दी वोली, 'खाकर आयी है न ?"

"हाँ, वेणु दी। कालेज जाने का वहाना कर खाना खाकर ही निकली हूँ।"

"अच्छा किया। आ बैठ!" कहकर वेणु दी ने पखा तेज कर दिया।

वेणु दी के यहा जो लोग आते है, उनकी खातिर-तवज्जुह के लिए भरपूर इतजाम है। इस लाइन के सभी को यह मालूम है। इसीलिए क्लायट सर्किल मे वेणु दी काफी मशहूर है। फिर भी जरा बेकायदे की वात होने पर वेणु दी बुरी तरह विगड जाती है। अठारह साल हो गए, वेणु दी यह धधा कर रही है, अच्छे-बुरे सभी तरह के क्लायटो से उसका पाला पडा है। कितनी ही वार उन लोगो से गैरकानूनी काम भी हो गए। लेकिन सभी को वडी सख्ती से वेणु दी काबू मे किए रही, जिससे आज उसका इतना नाम है।

वेणु दी कहती, 'इसीलिए तो ब्लैक मार्केट करनेवालो को म अपने यहाँ घुसने नही देती। मैं तो साफ कहती हूँ, तुम अगर स्टुडेंट हो तो मेरे यहाँ आओ। मेरे सभी लडके स्टुडेंट है। और लडकिया भी—"

सुसी ने कहा, "तुम्हारा निखिल भी स्टुडेंट है क्या ?"

वेणु दी ने कहा, 'कहता तो है कि स्टुडेंट है, वैसे उसके कालेज मे जाकर रजिस्टर तो मैं देख नही आयी। लोगो की वात का यकीन करके ही मैं उन्हे यहाँ घुसने देती हूँ—"

"यही तो तुम्हारी गलती है, वेणु दी। आजकल किसी की जवान का भला क्या भरोसा ?"

"ठीक कहती है बेटी, ठीक कहती है। आजकल जमाना वडा खराव आ गया है—"

तभी वगल के कमरे मे टेलीफोन की घटी वज उठी। वेणु दी जल्दी से दूसरे कमरे मे चली गयी।

इसके वाद वेणु दी की आवाज सुनाई दी, "हलो, कौन ? समीर ? अरे, कैसे हो आजकल ? इतने दिन वाद कैसे ? अरे भैया, वेणु दी

को क्या एकदम ही भूल गए ?"

इसके बाद थोडी देर के लिए सनाटा रहा। कई बार हा-ना होती रही। आखिर मे सुनाई दिया, 'अरे हा, हा, आओ न! वेणु दी के यहा आने म शर्म कैसी ?"

सुसी कान लगाए सुनती रही।

'हे-हे। मैं जब मौजूद हूँ तुम्हे किसी तरह की चिंता करने की जरूरत नहीं है भैया! लडकी? हा, एक लडकी तो इस वक्त मेरे पास बैठी हैं। अरे, अपनी सुसी है। सुसी को तो तुम पहचानते हो न? थर्ड इयर की स्टुडेंट है। लेकिन रात के दस न बजाना भैया। ठीक है, तुम चले आओ। यहा तुम्हारे आने पर बात होगी। अच्छा, फोन रखा—"

रिसीवर छोडकर वेणु दी हँसती हुई इस कमरे मे आयी।

बोली, 'अच्छा ही हुआ, तू भी ठीक समय पर आयी है।"

सुसी ने पूछा, कौन था वेणु दी ?"

'अरे वही समीर है समीर। समीर को नही पहचानती? बडे अमीर घर का लडका है। बाप उसका गजटेड आफिसर है, रात-दिन लदन-अमरीका करता रहता है उसी का लडका। तेरे साथ जचेगा भी खूब!

सुसी ने पूछा, "लेकिन रुपये ?'

"तू जो मागेगी, वही मिलेगा।'

सुसी ने कहा, "सिर्फ सिनेमा देखना है या होटल भी जाना होगा ?"

"यही तो तुझमे खराबी है बेटी। पहले से ही रुपये की रट लगाती है। पहले उसे आन दे, उससे बातचीत कर, कैसा लडका है, देख ले, तब न ?'

सुसी ने कहा, "लडका देखकर मुझे क्या करना है वेणु दी? मैं तो उससे शादी करने नही जा रही हूँ। वह जब करूँगी, तब करूगी। अभी तो सिर्फ पैसे से मतलब है।"

"आखिर तुझे पैसे की इतनी जरूरत क्यो है? अभी तो तू कालेज मे पढती है, फिर भी तुझे रुपये की इतनी जरूरत क्या पडती है ?"

"वाह रुपये की जरूरत नही है? तुम कह क्या रही हो? एक साधारण सी साडी खरीदने म ही आजकल कितने रुपये लगते है, बताओ न? तीस रुपये से कम मे क्या एक जोडी सैडिल आती है ?

इसके अलावा मकान का किराया है, तेल-नोन-लकडी, माँ के लिए खडो। तिस पर भी बेचारी बूढी माँ को एक चश्मा भी नही खरीद दे पा रही हूँ। मेरा कौन बाप बैठा है, या बाप की छोडी जमीदारी रखी है ?"

"लेकिन तेरा भैया इस समय क्या करता है ? क्या अभी तक उसी तरह बेकार घूमा करता है ?"

"अरे, भैया की कुछ न पूछो। नित नये दोस्त जुटा लाते ह और मेरे पीछे पडते ह। दो मिनट के लिए घर बैठना मुश्किल कर रखा है। मेरी कमाई से अमीर बनना चाहते हे।"

वेणु दी ने कहा, "भूलकर भी उसके फदे मे न फँसना। अपनी मेहनत की कमाई का पूरा पैसा पोस्ट ऑफिस मे जमा करती जा, जिस से आखिर मे तेरा भला हो। फिर यादवपुर की ओर कोई मौके की छोटी-मोटी जमीन लेकर मकान बनवा लेना। एक बार अपने पैर पर खडी हो जाए, तो अच्छे-अच्छे लडके तुझसे शादी करना चाहगे। अरे, मैं ही कितने लडका को जानती हूँ। तू सिर्फ दो पैसे जमा कर ले। मैं खुद खडी होकर तेरी शादी कराऊँगी।"

सुसी ने कहा, "मेरा भी यही इरादा है, इसीलिए तो हमेशा पैसा-पैसा करती हूँ—"

वेणु दी ने कहा, "फिर जरा देर मेरे बिस्तर पर जाकर आराम कर ले बेटी, समीर ने दो 'बजे तक आऊँगा' कहा है। दूसरी साडी देती हूँ, उसे पहन ले, नही तो तेरी मुर्शिदाबादी साडी लतड-पतड हो जाएगी। उसके आने से पहले हाथ-मुँह धोकर जरा क्रीम-पाऊडर लगाकर फिटफाट हो लेना, चल उठ।"

सुसी ड्राइगरूम से वेणु दी के सोनेवाले कमरे मे चली गयी।
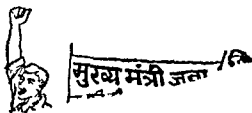
'भद्रकाली मिष्टान भडार' के दिलीप दा ने दूर ही से अरविन्द को देख लिया था।

उसने आवाज लगायी, "अरे अरविन्द, कहा जा रहा है ?"

"यही जरा इनक्लाव-जिदावाद करने जा रहा हूँ दिलीप दा।"

"आखिर तुझ पर यह पागलपन कव से सवार हो गया ?"

अरविन्द ने कहा, "अरे, यही कलुआ फटिक खीच लाया।"

पास खडा कलुआ फटिक अपने सफेद दात निकालकर ही-ही करने लगा।

दिलीप दा ने कहा, "क्यो रे कलुआ फटिक, इस वेचारे को अपने साथ क्यो घसीट रहा है ?"

"वताओ दिलीप दा, इतनी देर कर यह हाथ मे थैली लटकाये गोश्त खरीदने जा रहा था। यही देखकर मैंने कहा, मेरे साथ आओ, नही तो दो दिन वाद गोश्त क्या, भात भी नसीव न होगा।"

उधर तभी नेता जैसे किसी आदमी ने चिल्लाना शुरू किया, 'वोलो भाई, इ न क्लाव।"

'जिदावाद।"

"काग्रेस सरकार।"

"गद्दी छोडो।"

दिलीप वेरा हँसने लगा। आवाज धीमी पडने पर अरविन्द से उसने कहा, 'कव तक वापस आएगा ?"

अरविन्द ने कहा, "कलुआ फटिक कहता है, वारह-एक वजे तक लौट आएँगे। आते समय पाँच नम्वर वस से आएँगे।"

"खाना ?"

अरविन्द की तरफ से कलुआ फटिक ने जवाव दिया, "पार्टी की ओर से चाय और पावरोटी का इतजाम है—फिर एक दिन अगर नही भी खाया, तो क्या आता-जाता है दिलीप दा ? सारा वगाल महीनो से फाका कर रहा है और हम लोग उसी वगाल की सतान होकर एक जून भी विना खाये नही रह सकते ?"

"करो न फाका, रोकता कौन है ?"

कहकर दिलीप दा जा ही रहा था कि पीछे से अरविन्द ने कहा, "दिलीप दा, तुमसे एक काम था।"

"मुझसे ? मुझसे ऐसी कौन जरूरत आ पडी ? रुपये ?"

लाइन से निकलकर दिलीप वेरा के कान के पास मुँह ले जाकर

अरविन्द ने कहा, 'असल मे गोश्त खरीदने घर से निकला था दिलीप दा! यह देखो, हाथ मे थैली भी है—"

'तो गोश्त न खरीदकर इस झमेले मे क्यो आ फँसा है ?"

"लेकिन गोश्त खरीदने का पैसा कहाँ है ? छ रुपये किलो हैं। इसलिए सोच रहा था, तुमसे अगर दस रुपये उधार मिल जाते—"

दिलीप ने कहा "पैसे नही है तो गोश्त खाने का शौक क्यो है ?"

"नही दिलीप दा, सच कहता हूँ, मुझे ऐसा शौक नही है। वहू का शरीर दिनो दिन सूखता जा रहा है। कोई भी वढिया चीज उसे खिला नही सकता। इसीलिए सोचा—"

"पहले के कितने रुपये वाकी है, कुछ याद है।"

"सब चुका दूगा। एक बार मोटी-सी रकम हाथ आते ही तुम्हारे सारे रुपये वापस कर दूगा। सच दिलीप दा, यकीन मानो, तुम्हारे रुपये मैं मार नही जाऊँगा—"

"ठीक है, यह सब बाद मे सुनूगा। अभी जहा जा रहा है, हो आ।" इतना कहकर दिलीप वेरा अपनी दूकान की ओर चला गया।

जुलूस अब आगे वढेगा। अरविन्द अपनी जगह पर जा खडा हुआ। किस्मत मे जो लिखा है, हो जाए। इस पार या उस पार। अरविन्द को आजकल कुछ भी अच्छा नही लगता। इस तरह उधार लेकर कब तक काम चलाया जा सकता है। इससे तो अगर सब कुछ तहस-नहस हो जाता, तो कोई रास्ता निकल आता। कलुआ फटिक ठीक कहता है। सारे के सारे कलकत्ते को अगर एक बार उलट दिया जाता तो अच्छा होता। याने पैसेवालो का इलाका इधर चला आता और यह इलाका पैसेवालो के इलाके मे चला जाता, तो कितना मजा आता। सीधे-सीधे तो ऐसा कुछ होना नही है। शिरीष बावू को ही देखो न! कितना पैसा है, लेकिन वह भी नही फँसता।

अरविन्द ने उसकी कितनी खातिरदारी की। पहले दिन खुद जाकर चाय बना लाया था। दौडता हुआ जाकर मोड पर की वनारसीलाल की दूकान से पान ले आया था।

याद आया, उसने वाहर खिडकी के छेद से झाँककर देखा था। भोले बाबा की तरह वैसे का वैसा बैठा था। अरे, बाबा, जरा वदन पर हाथ ही फेर! आमने-सामने दोनो को बैठाकर, दरवाजा बद कर चला

उसने श्रावाज लगायी, "अरे अरविन्द, कहाँ जा रहा है ?"

"यही जरा इनक्लाव-जिंदावाद करने जा रहा हूँ दिलीप दा !"

"आखिर तुझ पर यह पागलपन कब से सवार हो गया ?"

अरविन्द ने कहा, "अरे, यही कलुआ फटिक खीच लाया ।"

पास खडा कलुआ फटिक अपने सफेद दात निकालकर ही-ही करने लगा ।

दिलीप दा ने कहा, "क्यो रे कलुआ फटिक, इस वेचारे को अपने साथ क्यो घसीट रहा है ?"

"वताओ दिलीप दा, इतनी देर कर यह हाथ मे थैली लटकाये गोश्त खरीदने जा रहा था । यही देखकर मैंने कहा, मेरे साथ आओ, नही तो दो दिन वाद गोश्त क्या, भात भी नसीव न होगा ।"

उधर तभी नेता जैसे किसी आदमी ने चिल्लाना शुरू किया, ' वोलो भाई, इ न क्लाव !"

' जिदावाद !"

"काग्रेस सरकार ।"

"गद्दी छोडो ।"

दिलीप वेरा हँसने लगा । आवाज धीमी पडने पर अरविन्द से उसने कहा, "कव तक वापस आएगा ?"

अरविन्द ने कहा, "कलुआ फटिक कहता है, वारह-एक वजे तक लौट आएँगे । आते समय पाच नम्वर वस से आएँगे ।"

"खाना ?"

अरविन्द की तरफ से कलुआ फटिक ने जवाव दिया, "पार्टी की ओर से चाय और पावरोटी का इतजाम है—फिर एक दिन अगर नही भी खाया, तो क्या आता-जाता है दिलीप दा ? सारा वगाल महीनो से फाका कर रहा है और हम लोग उसी वगाल की सतान होकर एक जून भी विना खाये नही रह सकते ?"

"करो न फाका, रोकता कौन है ?"

कहकर दिलीप दा जा ही रहा था कि पीछे से अरविन्द न कहा, "दिलीप दा, तुमसे एक काम था ।"

"मुझसे ? मुझसे ऐसी कौन जरूरत आ पडी ? रुपये ?"

लाइन से निकलकर दिलीप वेरा के कान के पास मुँह ले जाकर

अरविन्द ने कहा, 'असल मे गोश्त खरीदने घर से निकला था दिलीप दा ! यह देखो, हाथ मे थैली भी है—"

'तो गोश्त न खरीदकर इस झमेले मे क्यो आ फँसा है ?"

"लेकिन गोश्त खरीदने का पैसा कहाँ है ? छ रुपये किलो है। इसलिए सोच रहा था, तुमसे अगर दस रुपये उधार मिल जाते—"

दिलीप ने कहा "पैसे नही है तो गोश्त खाने का शौक क्यो है ?"

"नही दिलीप दा, सच कहता हूँ, मुझे ऐसा शौक नही है। वहू का शरीर दिनो दिन सूखता जा रहा है। कोई भी वढिया चीज उसे खिला नही सकता। इसीलिए सोचा—"

"पहले के कितने रुपये वाकी है, कुछ याद है !"

"सव चुका दूगा। एक वार मोटी-सी रकम हाथ आते ही तुम्हारे सारे रुपये वापस कर दूगा। सच दिलीप दा, यकीन मानो, तुम्हारे रुपये मैं मार नही जाऊँगा—"

"ठीक है, यह सव वाद मे सुनूगा। अभी जहाँ जा रहा है, हो आ।" इतना कहकर दिलीप वेरा अपनी दूकान की ओर चला गया।

जुलूस अव आगे वढेगा। अरविन्द अपनी जगह पर जा खडा हुआ। किस्मत मे जो लिखा है, हो जाए। इस पार या उस पार। अरविन्द को आजकल कुछ भी अच्छा नही लगता। इस तरह उधार लेकर कव तक काम चलाया जा सकता है। इससे तो अगर सव कुछ तहस-नहस हो जाता, तो कोई रास्ता निकल आता। कलुआ फटिक ठीक कहता है। सारे के सारे कलकत्ते को अगर एक वार उलट दिया जाता तो अच्छा होता। याने पैसेवालो का इलाका इधर चला आता और यह इलाका पैसेवालो के इलाके मे चला जाता, तो कितना मजा आता। सीधे-सीधे तो ऐसा कुछ होना नही है। शिरीष वावू को ही देखो न ! कितना पैसा है, लेकिन वह भी नही फँसता।

अरविन्द ने उसकी कितनी खातिरदारी की। पहले दिन खुद जाकर चाय वना लाया था। दौडता हुआ जाकर मोड पर की वनारसीलाल की दूकान से पान ले आया था।

याद आया, उसने वाहर खिडकी के छेद से झाँककर देखा था। भोले वावा की तरह वैसे का वैसा वैठा था। अरे, वावा, जरा वदन पर हाथ ही फेर ! आमने-सामने दोनो को वैठाकर, दरवाजा वद कर चला

आया, कोई देखनेवाला नही, कोई कुछ कहनेवाला नही, परायी वहू है तो क्या हुआ ? डरने की क्या वात है ? और फिर खुद में उसका आदमी जव यही चाहता हूँ, तो फिर इतना शरमाने-झिझकने की क्या जरूरत ? लेकिन वह तो नही, सिफ सिस्टर, और सिस्टर ! क्यो, गोपा क्या देखने मे अच्छी नही है ? जरा दुवली-पतली है, यही न ? इसी गोपा के वदन पर अगर थोडा मास चढा दिया जाए तो कितने ही लोग पागल हो जाएँगे, इसे हाथो हाथ लिए फिरेंगे ।

इसीलिए तो पिछले कई दिनो से अरविन्द गोश्त खरीदने की सोच रहा था । गोपा को कुछ दिन अगर मास, दूध और अडे खिलाये जाएँगे, तो फिर फिक्र करने की कोई वात नही रहेगी । तव इस सुसी की खुशामद नही करनी पडेगी । इस गोपा को दिखलाकर ही लाखो रुपये कमाए जाएँगे । फिर उस रुपये से मकान वनेगा, एक गाडी होगी । तव यही सुसी आकर भैया की खुशामद करेगी । और तव अरविन्द उसे लात मारकर भगा देगा । कहगा—अव किसलिए आयी ? अव भैया की खुशामद करने से कुछ नही होने का । याद नही है, कितनी वार कहा था, जरा मेरे दोस्ता की खातिरदारी किया कर । जरा हँसकर वातें करने से, उनके साथ एकाध सिनेमा देख आने से या घूम-फिर आने से तेरा क्या विगड जाता ? लेकिन तव तो मेरी वात नही मानी ? अव मेरे घर क्यो आयी है खुशामद करने ?

पान खरीद लाने के वाद अरविन्द ने एक वार फिर अन्दर झाँक-कर देखा था ।

शिरीष वावू चाय पी चुके थे । गोपा भी प्याला खाली कर चुकी थी ।

शिरीष वावू पूछ रहे थे, "लगता है, आपको पढने का काफी शौक है ?"

गोपा ने कहा, "नही, शौक नही है, कोई काम-काज नही था, इसलिए जरा यह किताव पलट रही थी—"

"कौन-सी किताव है, देखू ।"

किताव आगे वढाते हुए गोपा ने कहा, "श्रीकान्त ।"

"श्रीकान्त ? ठाकुर-देवता की कोई किताव होगी ?"

"नही, शरत् चटर्जी का लिखा उपन्यास श्रीकान्त है ।"

"शरत चटर्जी ? यह कौन है ? पूर्वी वगाल का कोई है ?"

"आपने शरत् चटर्जी का नाम नही सुना ?"

शिरीप वावू ने पुस्तक हाथ मे लेकर उसे उलटते-पलटते हुए कहा, "मुझे ठाकुर-देवताओ पर विश्वास नही है, बुढापा आने पर यह सब पढूँगा। अभी तो सिनेमा देखने की उम्र है।"

तभी जैसे अचानक याद आया। उन्होने पूछा, "अरविन्द वावू कहाँ गये ?"

"आपके लिए पान लाने गये है।"

"पान लाने मे इतनी देर ? दूकान शायद काफी दूर है ?"

गापा ने मुस्कराते हुए कहा, "नही—"

शिरीप वावू ने पूछा, "आप हँस क्यो रही ह ?"

"आपके वारे मे सोचकर ही हँस रही हूँ।"

"क्यो, मैंने क्या किया ?"

"आपका ख्याल है कि वे वहुत जल्दी वापस आ जाएँगे ?"

शिरीप वावू ने कहा, "क्यो ? देर लगेगी क्या ?"

"हाँ, उन्ह वापस आने मे देर होगी।"

शिरोप वावू ने कहा, "कितनी देर होगी ?"

गापा ने फिर मुस्कराते हुए कहा, "काफी देर होगी, एक घट मे पहले उनका लौटना मुश्किल है—"

शिरीप वावू की समझ मे नही आ रहा था कि क्या करें। दिलीप वेरा ने कहा था कि अरविन्द वावू की एक वहन है ? असल मे 'भद्र-काली मिष्टान्न भडार' के दिलीप वेरा ने ही अरविन्द से उनका परिचय करा दिया था। लेकिन उसे क्यो सामने नही लाता। इन लोगो का इरादा तो ठीक नही लगता।

अचानक तभी लगा किसी ने दरवाजे को जरा-सा खोला, फिर लगा जैसे कोई दरवाजे की सद मे से झाक रहा है। शिरीप वावू चौक उठे।

"कौन ?"

और तभी उन्होने अरविन्द को पहचान लिया। दरवाजे के किवाडो को जरा-सा खोलकर अरविन्द इशारे से उन्हे वुला रहा था।

चौकने जैसी वात ही थी। अदर न आकर वाहर से हाथ का इशारा करके बुलाने के क्या माने होते है ?

दरवाजा खोलकर शिरीष बाबू ने बाहर आकर देखा, जो सोचा था, वही हुआ। हाथ मे पान की गिलौरिया लिये अरविन्द खडा है।

शिरीष बाबू को पान की गिलौरियाँ देकर उनके कान के नजदीक मुँह ले जाकर अरविन्द ने कहा, "हाथ समेट क्यो बैठे है ?"

पान मुँह मे भरते हुए शिरीष बाबू ने कहा, "बैठा न रहूँ तो क्या करूँ ?"

अरविन्द ने आवाज को और भी धीरे कर करीब-करीब फिस-फिसाते हुए कहा, "अरे किस-बिस लीजिए न—"

अचानक उधर से और भी तेज आवाज आयी, "इनक्लाब—"

साथ ही पूरी भीड ने आवाज लगायी, "जिन्दाबाद—"

पास खडे कलुआ फटिक ने कहा, "क्या हुआ अरविन्द बाबू ? क्या सोच रहे है ? नारा लगाइए—"

तभी आवाज आयी, "अनाज की कीमतें—"

अरविन्द पर से सोचते रहने की खुमारी उतर चुकी थी। उसने चीखकर कहा, "कम हो।"

"मुनाफाखोरो की—"

"सजा हो।" सबकी आवाज मे आवाज मिलाकर अरविद चिल्लाया।

बहुत दिन पहले कभी वहा जगल था। पास ही गगा बहती थी। ब्रिटिश गवनमेट ने गगा के किनारे एकान्त जगह देखकर इडियन वाइसराय के लिए पैलेस बनाया था। उन दिना उसका नाम 'वाइस-राय पैलेस' था। फिर १९११ मे इडियन कैपिटल दिल्ली चली गयी तो उसका नाम 'गवनर्स हाऊस' हो गया।

तब तक गगा भी काफी दूर चली गयी थी। कलकत्ते की छाती पर 'यूनियन जैक' वाला झडा काफी मजबूती से गड गया था। लेकिन

ब्रिटिश एम्पायर की यह खूटी इडिया मे कव अपने ही आप ढीली पड गई, इसे अपने ही मुल्क के दस नम्बर डाऊनिंग स्ट्रीट की कोठी का कोई अग्रेज भी जान नही पाया। अचानक एक दिन यह देखा गया कि सिर पर वम वरस रहे हे और पैरा तले की मिट्टी खिसकी जा रही है। तव अपने ही मुल्क मे भगदड मच गई। फिर इडिया वर्मा, सीलोन, सिगापुर मलाया और घाना अग्रेजो को एशिया का साम्राज्य छोडना पडा।

कलकत्ते मे काग्रेस की मीटिग हुई। सवने कहा, अग्रेजो, भारत छोडो! क्विट इडिया—'

इडिया छोडने को तो वे लोग तैयार थे ही, फिर नये सिरे से मीटिग करने की क्या जरूरत पडी?

लेकिन नही, जव जाना ही है तो कोई ऐसी निशानी छोडकर जाएँगे जिससे हमेशा हम लोगो की याद वनी रहे।

"वह क्या थी जूडी?"

जूडी हॉवसन का जन्म नटिघमशायर मे हुआ था। पोस्ट-वार जमाने का इगलिश मैन। लन्दन मे जव हिटलर के वम वरस रह थे, उसकी उम्र वहुत कम थी। आज उन दिना की थोडी-वहुत याद वाकी है, लेकिन वह वहुत धुँधली है।

नयी-नयी शादी कर वीवी के साथ कभी की पैतृक जमीदारी मे घूमने आये थे। जिस होटल मे वे ठहरे थे, चौरगी मे काफी वडी जमीन पर उसकी इमारत है। वाहर से आये टूरिस्ट-ट्रैफिक इसी होटल मे ठहरते है। 'कैलकटा' का नाम सुनते ही टूरिस्ट लोगो की जवान पर 'स्ट्रैण्ड होटल' का नाम आ जाता है।

स्ट्रैण्ड होटल मे हर सीजन मे अच्छी रौनक रहती है। अव की वार टूरिस्ट ज्यादा आये है। दूसरे लोगो के साथ जूडी हॉवसन भी आया है। साथ आयी है उसकी नयी ब्याही वीवी क्लारा डैनहम।

दिन-भर होटल के अदर वन्द रहा नही जा सकता। इसके अलावा अदर के एयर कडीशण्ड कमरे से 'कैलकटा' को अच्छी तरह देखा नही जा सकता। इसलिए लच के वाद जूडी हॉवसन 'स्ट्रैण्ड होटल' के 'ऑर्किड' की छत पर खडे, नीचे सडक की ओर देख रहा था।

पास ही उसकी नयी ब्याही वीवी क्लारा खडी थी।

क्लारा ने पूछा, "ब्रिटिश गवर्नमेंट कौन सी निशानी छोड़ गई है?"

"वन-आइड कैनन।"

"इसके माने?"

'एक आखवाली तोप। कल 'गवर्नर्स' हाऊस के सामने जो तोप देखी थी न, उसकी सिर्फ एक ही आँख है।"

"तुम्हे कैसे पता लगा जूडो?"

जूडी हॉवसन को बहुत कुछ मालूम है। इडिया आने से पहले ही यहा के बारे मे उसने काफी जानकारी हासिल कर ली थी, बहुत-सी बातें सीख ली थीं। पहले का जमाना होता, तो जूडी हॉवसन यहाँ पर आई० सी० एस० ऑफिसर होकर आता। आकर शायद उसी 'गवर्नर्स' हाऊस' मे रहता। फिर 'डिफेन्स ऑफ इडिया ऐक्ट' के मुताबिक इडियनो को गिरफ्तार करता।

छत के पैरापेट के सहारे खडे दोना, चारो ओर नजर दौडाकर देखने लगे। जूडी और उसकी नयी ब्याही बीवी क्लारा। 'दिस इज कैलकटा'। 'दिस इज इडिया'। जूडी के पूर्वपुरुषो का एम्पायर। इसी कैलकटा' से एक दिन करोडो पाउण्ड जाकर इग्लैंड के बैंको मे जमा हुए ह और उसी दौलत के बूते पर उसके बाप-दादो ने नॉटिघमशायर के खेत-खलिहानो मे गुलछर्रे उडाये है। आज सब कुछ खत्म हो चुका है। इडिया आज हमारा 'लॉस्ट-एम्पायर' होकर रह गया है।

'लुक जूडी, लुक देयर।" यहा से पूरा कैलकटा दिखाई पड रहा है। सडको पर ट्राम चल रही है, बसें चल रही है, गाडिया चल रही ह और आदमी आ-जा रहे है। सडक के उस पार हरी-हरी घास से भरा मैदान है। उससे जरा हटकर है 'ऑक्टरलोनी मॉनुमेंट'। अकल हॉवसन इडिया मे मिलिटरी सेक्रेटरी थे। अकल को इडियनो के बारे मे सब कुछ पता था। छुट्टिया मे 'होम' आने पर अकल इडियन लोगा के बारे मे बातें करते थे। वहा के लोग बेहद आलसी और झगडालू किस्म के होते ह। इडिया को अगर आजाद कर दिया गया तो वहाँ बडी गडबडी मच जाएगी। 'मोस्ट बैकवर्ड रेस' है।

अब वही मुल्क इडिपेण्डेण्ट हो गया है और उस इडिपण्डेण्ट इडिया को देखने अकल हॉवसन का भतीजा आया है।

"लेकिन ब्रिटिश गवर्नमेंट कानी तोप आखिर क्यो छोड गई?"

जूडी हॉवसन ने कहा, "अकल को मालूम था कि एक दिन फिर से गवर्नर्स हाऊस के सामने नेटिव गवनमट को गोली चलानी पडेगी। उन्हे मालूम था कि ये लोग आपस मे ही लड मरेंगे। अकल कहते थे कि इन लोगो से सरकार नही चलेगी।"

"हाउ सिली!"

क्लारा डैनहम काफी खूबसूरत लडकी है। हँसती है तो गालो पर गड्ढे पड जाते है। हवाई जहाज से ये लोग कल ही दमदम एरोड्रोम पर उतरे है। उसके बाद वी० आई० पी० रोड से सीधे इस होटल मे चले आये है। व्हाट ए नैस्टि सिटी एण्ड ए नैस्टि होटल! इसी सिटी की तुम्हारे अकल इतनी तारीफ करते थे। लेकिन यह टाऊन आखिर इतना गदा क्यो है? कल दोनो ने पूरे शहर को घूम-घूमकर देखा है। पीपुल आर वेरी पुअर। यही शहर एक दिन सेकेण्ड सिटी इन दी ब्रिटिश एम्पायर कहलाता था। हिज मैजेस्टीज प्राइड!

"लुक लुक जूडी, व्हाट्स दैट?"

जूडी हॉवसन ने देर न की। उसने फौरन अपना कैमरा सम्हाल लिया। वेरी ब्यूटिफुल पिक्चर!

"वट, व्हाट्स दैट? वह क्या है जूडी?"

जूडी हॉवसन के अकल कभी इसी इडिया मे ब्रिटिश गवनमेट के मिलिटरी सेक्रेटरी थे। बहुत सारी घटनाओ का जिक्र अकल किया करते थे, लेकिन ऐसी किसी घटना का जिक्र तो उन्होने कभी नही किया। इस फोटो की कीमत बहुत ज्यादा होगी। कॉण्टिनेण्ट मे ऐसा फोटो ऊँची कीमत पर बिकेगा।

'स्ट्रैण्ड होटल' का एक वेटर बॉय अन्दर कमरे मे काम कर रहा था। जूडी ने उसी को बुलाया, "कम हियर! इधर सुनना। व्हाट्स दैट? वह क्या है?"

गुणधर काफी पुराना कर्मचारी है। पिछले तीस साल से इस होटल मे साहबो की मिजाजपोशी करता आ रहा है। सफेद चमडी की मेम साहब देखते ही सबसे पहले उसने सलाम किया, फिर छत के पैरापेट के पास जाकर नीचे देखने लगा।

"क्या? हजूर किस चीज के बारे मे कह रही है?"

"देयर, देयर—"

गुणघर देखते ही एक क्षण मे समझ गया। उसने कहा, 'दैट नथिंग हजूर, वह कुछ भी नही है। बकरा है। 'गोट'। गोइंग कालीघाट।"

"कालीघाट ? ह्वाट्स दैट ?"

"गॉडेस, मदर काली, हजूर! उधर 'गोट' वलि देने से मन की 'डिजायर' पूरी होती है।"

जूडी हॉवसन ने पता नही क्या समझा। स्ट्रेन्ज। ए स्ट्रेन्ज साइट! वट वेरी ब्यूटिफुल।

नीचे सडक पर बुधुआ अपनी ही धुन मे उत्तर से दक्षिण की ओर जा रहा था। सब लोगों के कपडो के छोर एक-दूसरे से बँधे थे। होटल के पास आते ही पीछे से बूढी माँ ने पूछा, "अरे बुधुआ, ई कइसन घर हव रे। का होला ईहा ?"

बुधुआ ने मुडकर उस मकान को अच्छी तरह देख लिया। मकान के ऊपर खडे दो गोरी चमडीवाले साहब और मेम उन लोगो की ओर हैरत भरी नजरो से देख रहे थे। माँ की वात पर बुधुआ खीझ उठा।

उसने कहा, "चुपचाप चला ना।"

बुढिया फिर भी खामोश नही हुई। अचम्भे से मकान की ओर देख रही थी—"बाप रे! अतना वड घर! अतना वड घर केकर हो सकेला! जरूर ई कलकाता के जमिदार होइ!"

बुधुआ बोला, "ना रे, इ वडका आपिस हव, साहेवन के आपिस!"

साहब लोग हिन्दुस्तान छोडकर सात समुद्र पार चले गये है, बुधुआ जैसे लोगो को यह जानने की कोई जरूरत नही थी। अपनी बात कहकर वह आगे बढ गया। काली माई के मन्दिर की ओर।

जूडी हॉवसन ने तब तक इंडिया के कई फोटो लिये। इंडिया और इंडिया के बुधुआ के। लन्दन, न्यूयार्क और वेस्ट जर्मनी के वाजार मे रीयल इंडिया के ये फोटोग्राफ ऊँची कीमत पर बिकेंगे।

लेकिन जिस फोटो से इंडिया का और भी सच्चा परिचय मिलता, जूडी हॉवसन ने वह फोटो नही लिया। इसी होटल के अन्दर कल रात

जूडी हॉवसन और क्लारा डेनहैम ने कई पिक्चर देखे थे, जो लेने लायक थे। सारी दुनिया की सैर को निकले जूडी और क्लारा हवाई जहाज से इडिया म आकर रुके है। लेकिन इडिया की धरती के अदर जा सुरग हे और उस सुरग के अन्दर जो साजिशें चल रही ह, उसका पता नटिघमशायर के इस टूरिस्ट दम्पति को नही था। अगर पता होता, तो अमेरिका मे वने उस कैमरे से वह उसका भी फाटो उतार लेता और वह भी ऊची कीमत पर विकता।

जूडी ने वुधुआ का फोटो ता ले लिया, लेकिन वह अरविन्द वगैरह का फोटो नही ले पाया।

वजह यह है कि अरविन्द वगैरह बुधुआ की तरह अजीवो-गरीव नही दीखते। ये लोग जव चौरगी की सडक से गुजरते हे, तो उनके धोवी के धुले सफेद फक कपडे और पालिश से चमचमाते जूता तथा ताजा वनायी दाढी देखकर किसी के मन मे उनकी असलियत जानने की ख्वाहिश पैदा नही होती। वेणु दी वगैरह जव भवानीपुर के फ्लैट मे नया फर्नीचर सजाकर अपनी गृहस्थी चलाती, तो किसी को जरा भी शुवहा नही होता था कि इस सजे-सजाये फ्लैट मे इस तरह की साजिशें भी हो सकती ह। या सुसी जैसी लडकिया जव स्टुडेंट वनकर समीर जैसे लडको की वगल मे बैठकर सिनेमा देखती या 'स्ट्रैण्ड होटल' मे 'पाम ग्रोव' के नीचे वैठी कॉफी पीती, तव जूडी हॉवसन की समझ मे यह वात नही आती कि इन लडकिया का एक घटे का रेट कितना है। उन्हे यह भी पता नही चलता कि कौन ता इन्ह सप्लाई करता है और किन लागो मे इनकी खपत होती है।

जिस दिन जूडी हॉवसन और क्लारा डैनहम इस होटल मे आकर ठहरे, उसी दिन यहाँ पर समीर के साथ सुसी भी आयी थी।

"सिनेमा कैसा लगा ?"

सरकारी आफिसर का लडका समीर इस लाइन के लिए कोरा था। यह शौक भी उसके लिए अभी नया ही था। वेणु दी ने इससे पहले भी उसके साथ कइया को भेजा था। पिछली सारी लडकिया ने सिनेमा देखने के वाद न्यू मार्केट जाना चाहा, वहा पहुचकर जो सामने देखा, खरीदना चाहा। लेकिन यह लडकी वैसी नही है।

सिनेमा हॉल से निकलने के वाद समीर ने पूछा था, "अव यहाँ से

हाँ चलोगी ?"

कोई और लडकी होती तो फौरन कहती—चलो न्यू मार्केट चला जाए।

लेकिन सुसी ने कहा, "जहाँ ले चलोगे।"

"हाथ मे यह नोटवुक कैसी है ?"

"कालिज की नोटवुक है।"

"सचमुच कॉलेज मे पढती हो या दिखाने के लिए ?"

सुसी ने कहा था, "देखती हूँ, इसके वाद तुम मेरी व्यक्तिगत वात भी जानना चाहोगे।"

समीर ने कहा था, "सच कहो न, तुम्हारा घर कहाँ है ?"

सुसी ने कहा था, "वेणु दी के यहाँ फोन करने पर मुझे मालूम हो जाएगा।"

"तुम अपना पता नही वतलाओगी ?"

"वतलाने का नियम नही है।"

"लेकिन मुझे लगता है, मैंने तुम्ह कही देखा है।"

"दखा होगा, जो हमे पैसा देता है, हम उसी के साथ घूमती ह, सिनेमा जाती ह, होटल म खाती ह। हम तो सुख के साथी हैं।"

"खैर, अव कहा चलना है ?"

"कहा न,जहाँ चलोगे।"

"कितनी देर रुक सकती हो ?"

"वेणु दी ने नही वतलाया ?"

"किस वारे मे ? मुझे तो याद नही आ रहा है।"

"मेरे रेट के वारे मे ? शाम के छ वजे के वाद मेरा रेट दस रुपये घटा है और रात के दस वजने के वाद मैं किसी की नही हू।"

"रेट तो तुमने काफी ज्यादा कर रखा है।"

"हर चीज का रेट वढ गया है, हमारा ही रेट नही वढेगा ? अगर इस रेट पर राजी हो तो जहाँ मर्जी ले चलो—"

हाँ, तो इसके वाद ही समीर सुसी को यहाँ ले आया था। 'स्ट्रण्ड होटल' के इस 'पाम ग्रोव' मे।

उधर जूडी हावसन भी ठीक तभी अपनी वीवी के साथ वहाँ आकर वैठा था।

समीर ने कहा, "ये लोग टूरिस्ट है, इडिया देखने आये है।"

सुसी ने पूछा, "ये लोग भी तुम्हारी ही तरह पैसेवाले है ?"

"मैं पैसेवाला हूँ, यह तुमसे किसने कहा ?"

"पैसेवाले नही हो, तो मेरे ऊपर इतने रुपये कैसे खच कर रह हो ? यहाँ क्या हर कोई आ सकता है ? आज तुम ले आए हो, इसलिए मैं यहाँ आ पाई हूँ, वर्ना मेरे पास क्या यहा आकर कॉफी पीने लायक पैसा है ?"

समीर ने एक सिगरेट सुलगाई। फिर कहा, "सिगरेट पीयोगी ?"

"सिगरेट पीने के पाँच रुपये और देने होगे।"

"ठीक है, मिल जायँगे। लेकिन हर वात मे तुम इस तरह रुपया-रुपया क्यो करती हो ?"

"मैं रुपये के लिए कहती हूँ तो बुरा हो जाता है, लेकिन दुनिया भर के लोग जो रुपये के लिए मर रहे है ? तव क्या होता ? मैं क्या दुनिया के वाहर हूँ ?"

"वह देखो, वह मेम कैसे सिगरेट पी रही है। वह तो तुम्हारी तरह सिगरेट पीने के लिए रुपया नही माँग रही है।"

"वह तो उस अग्रेज की वीवी है।"

'ठीक तो है, दो घटे के लिए तुम न हो, यहाँ मेरी वीवी ही वन जाओ।"

"मेरी क्या आफत पडी है ! शादी ही करनी होगी तो तुम जैसे आदमी से क्यो करने लगू ! तुम लोग तो सिफ लडकियो के पीछे पैसा फूकते हो। लम्पट से किस दुख मे शादी करू !"

समीर ने कहा, "मै अगर लम्पट हूँ तो तुम क्या हो ? सती ?"

सुसी ने कहा, "खवरदार, चिल्लाओ नहीं—"

लेकिन झगडा और आगे नही वढ पाया। अचानक दूर से शिरीष वावू आते दिखाई दिए। सुसी देखते ही पहचान गई। वैसे उन्हे सुसी ने सिफ एक वार ही देखा था। गली के वाहर उनकी वडी-सी गाडी खडी थी और शिरीष वावू आठ नम्वर घर से निकल रहे थे।

भैया के दोस्त है। भैया सुसी को देखते ही परिचय करा देने के लिए आगे वढ आया था, "यही है मेरी सिस्टर, आइए शिरीष वावू,

इससे आपका परिचय करा दू और ये हैं सुसी, मेरे मित्र शिरीष वावू—"

सुसी को आज भी याद है, शिरीष वावू के मुँह से जैसे लार टपक रही थी। मुँह मे पान होने से लाल-लाल लार।

हाथ जोडते हुए शिरीष वावू आगे वढ आए थे।

"तो आप ही सुसीमा देवी हे। अरविन्द वावू से आपके वारे म सुना है।"

सुसी ने वडे वेमन से हाथ जोडकर होठो पर सूखी मुस्कराहट लाने की कोशिश की थी।

"शायद कालेज से लौट रही है ?"

तभी अरविन्द ने कहा था, "जानते ह शिरीष वावू, आजकल स्कूल-कालेज के मास्टर कुछ पढाते-वढाते नही हे। वैठे वैठे नोट्स लिखते रहते ह और विलकुल फोकट की तनख्वाह खाते ह।"

शिरीष वावू ने कहा था, "दुनिया मे ऑनेस्ट लोग अव वचे कितने हैं अरविन्द वावू ? हम जैसे कई लोग अगर चले जायें तो दुनिया वीरान हो जाएगी—"

शिरीष वावू शायद देर तक वातें करना चाहते थे।

लेकिन तभी अरविन्द ने कहा था, "अरे सुसी, घूमने चलेगी ? शिरीष वावू की गाडी वाहर खडी है, कह तो मैं भी चलू। थोडी देर म लौट आयेंगे—"

शिरीष वावू ने मानो वात का छोर पकडते हुए कहा, "हाँ, चलिए न। गाडी तो मेरी है ही, सिफ वैठनेवाले ही नही ह।"

अरविन्द ने झट से कहा, "गाडी मे वैठनेवाले ही नही ह तो वेकार तीन-तीन गाडियाँ खरीदने की क्या जरूरत थी ?"

"यह कौन देखता है ? फिर इतने सारे रुपये लेकर मैं करूँगा भी क्या ?"

सात नम्वर मकान के दरवाजे पर खडे-खडे ही वातें हो रही थी।

अरविन्द ने फिर कहा था, "क्यो री सुसी, चलेगी ?"

"चलिए न।" शिरीष वावू के मुँह से और ज्यादा लार टपकने लगी थी।

सुसी ने कहा था, "माफ कीजिएगा, मैं इस वक्त काफी टायर्ड

हूँ—"

इतना कहकर सुसी जो घर के अदर चली गई तो फिर वाहर नही निकली।

इसके वाद कितनी ही वार शिरीष वावू उसके घर आए, मा के लिए हँडिया भर-भर रवडी लाए। माँ ने कितनी वार कहा, "वेटा, तेरा यह दोस्त तो वडा अच्छा है। इसकी रवडी वडी मीठी होती है।"

अरविन्द कहता, "मीठी हाने से क्या होता है माँ ? तुम लोग तो कोई भी उसकी खातिर ही नही करती।"

माँ भमक उठती, "क्यो ? खातिर नही करते के माने ? वहू उसके लिए चाय नही वनाती ?"

"वहू के चाय वना देने से क्या होता है ?"

"तो मैं और क्या खातिर कर सकती हू ? मेरी तो अव आखें भी नही रही। तुझसे कितनी वार कहा है, एक चश्मा वनवा दे, तूने कभी सुना है ?"

इस पर अरविन्द को भी गुस्सा आ जाता। वह कहता, "तुम बूढी हो गई, आखो से दिखाई भी नही पडता। तुमसे कौन खातिर करन को कह रहा है कि ऐसा कह रही हो ? लेकिन तुम्हारी धीगडी विटिया तो घर मे मौजूद है, वह जरा चाय और पान नही पहुँचा सकती ? इतने से ही वेचारा खुश हो जाता है।"

"लेकिन वहू तो चाय दे आती है। सुसी हो या वहू, कोई भी दे आए, वात तो एक ही है।"

अरविन्द और भी चिढ जाता, "फिर वही वात, सिर्फ वहू और वहू। उस वेचारी को दिल की वीमारी है, यह पता है ? दिल की वीमारी मे क्या वेचारी इतनी मेहनत कर सकती है ? तुम्हारी विटिया रानी से क्या इतना-सा काम नही हो सकता ? वह क्या इस घर की कोई नही है ? वहू ही सारा दिन पिसे ?"

हा, तो शिरीष वावू को ही इस होटल मे देखकर सुसी को वडा अजीव लगा। लगा, जैसे शिरीष वावू अकेले नही है। साथ मे कोई और भी है। एक औरत। लेकिन शिरीष वावू का तो कहना था कि उनके वीवी नही है।

समीर की अभी उठने की इच्छा नही थी। लेकिन सुसी ने कहा, उठो, चल—"

समीर ने कहा, "क्यो, इतनी जल्दी किस वात की है? दस रुपये टे की वात तय हुई है, सो मिल जायगे।"

"नही, अब चलो, मुझे घर जाना है।"

वात पूरी होने से पहले ही शिरीप वावू ने पास आकर कहा, "अरे सुसीमा देवी, आप यहाँ? मजे मे तो ह?"

सुसी की पीठ पर जैसे अचानक किसी ने वेंत से मारा, ऐसे वह मुडी।

"आप किससे वात करना चाहते है?"

"सुसीमा देवी आप ही का नाम है न?"

"आप क्या कह रहे है? सुसीमा देवी कौन है?"

"आपका नाम सुसीमा देवी नही है? घर मे आपको 'सुसी' कह कर पुकारा जाता है।"

सुसी ने हैरानी का स्वाग किया, कहा, "आप किससे क्या कह रहे ह? आप कौन हैं?"

शिरीप वावू के भी आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन्होने कहा, "यह क्या? आप मुझे नही पहचान पा रही ह? मेरा नाम शिरीप दासगुप्ता है। अरविन्द वावू आप ही के भाई हैं न? आठ नम्वर हारान नस्कर लेनवाले आपके मकान पर उस दिन गया था। याद नही आ रहा है?"

सुसी ने कहा, "मुझे कुछ नही याद आ रहा है। आपको शायद गलतफहमी हो गई है?"

"वाह, आप इतनी जल्दी भूल गईं। घर पर आपकी वूढ़ी माँ ह, रवडी ले जाकर मैंने उनके पैर छुए थे।"

"खवरदार, फिजूल की वातें न कीजिए। लगता है, आप नशे मे ह। चलो समीर दा, हम लोग चलें—"

"क्या कहा?"

अपमान के मारे शिरीप वावू का नशा हिरन हो गया था। पस के वूते पर उन्होने वहुत कुछ वुरा-भला किया है, लकिन इस तरह खुले आम वेइज्जती कभी नही हुई।

"ठीक है, देख लूगा ! बहुत रबडी ले गया हूँ तुम्हारी माँ के लिए, बहुत पैर छुए है—"

जूडी और क्लारा जरा दूर बैठे सॉफ्ट ड्रिंक पी रहे थे। पास ही 'पाम ग्रोव' के नीचे ऑर्केस्ट्रा पर 'जाज' बज रहा था। अचानक झगडे की आवाज सुनकर टूरिस्ट दम्पति की ताल टूट गई।

"लुक जूडी, वहाँ क्या हो गया है। लुक, लुक देयर !"

क्लारा देख रही थी। जूडी ने भी मुडकर देखा। आखिर 'नेटिव' ह न ! अकल कहा करते थे कि इसी वजह से पहले 'नेटिव' लोगो को इस होटल मे घुसने नही दिया जाता था। दे ऑलवेज फाइट विद वन अनेदर। जब देखो तभी कुत्तो की तरह झगडते रहते ह।"

जूडी ने कहा, "दे आर लाइक दैट—"

क्लारा ने कहा, "वट, ह्वाई डू दे क्वारल ? ये लोग इतना क्यो झगडते ह ?"

जूडी ने कहा, "अकल कहा करते थे, ये बगाली किसी का भला नही देख सकते। किसी का भला होने पर ये जलने लगते ह। मोस्ट क्वारलिंग रेस इन इडिया। यहाँ की सबसे झगडालू जात है।"

"स्ट्रेंज !"

जूडी ने कहा, "इस बेगॉल मे स्ट्रेज नाम का कुछ नही है। एनीथिंग मे हैपेन एनी टाइम—"

फिर कहा, "आज शाम को देखा था न कि गवर्नर्स हाऊस के सामने सडक की ओर मुँह किए एक तोप रखी है। वह चाइनीज तोप है। उसी तोप से हम लोग इतने दिनो तक इन बगालियो को काबू मे करते रहे। अब इडिया गवनमेट भी ठीक उसी तरह इसी तोप से इन लोगो को काबू मे रख रही है।"

"लेकिन ब्रिटिश गवनमेट ने आखिर इडिया छोडा क्यो था जूडी ?"

जूडी ने कहा, "इन बगालियो की ही वजह से। ये लोग किसी की हुकूमत नही मानते। हमारी गवनमेट की ऑथरिटी नही मानते थे, अब ये अपनी गवनमेट की ऑथरिटी भी नही मानते। अकल ने मुझे सब बतला दिया है।"

"स्ट्रेंज, वेरी स्ट्रेंज !"

लेकिन उधर 'पाम ग्रोव' के नीचे तब तक काफी जोरो से तू-तू मे-मैं होने लगी थी। सुसी जितने जोर से चिल्लाती, शिरीष बाबू भी उतना चिल्लाते। होटल का मैनेजर, केयर-टेकर, बॉय, ब्रेयरा, नौकर सभी झगडे की आवाज सुनकर दौडे हुए आए।

शिरीष बाबू इस होटल मे काफी दिनो से आते है, उन्हे यहा सभी जानते है। ह्वाट्स अप सर ? क्या हुआ साहब ? दिस लेडी ? हू इज शी ? कौन है वह ? हू आर यू ?

सुसी की आँखें भर आई थी।

उसने कहा, "चलो समीर दा, हम लोग चलें। इसी वजह से मै किसी के साथ होटल मे नही आती।"

समीर ने बाहर आकर पूछा, "लेकिन वह आदमी क्या तुम्हे जानता है ?"

"पता नही, कही पर किसी को देख आया है और यहाँ मेरे पीछे पड गया।"

"लेकिन वह तुम्हारे घर का पता, तुम्हारा, तुम्हारे भाई और भाभी सभी का नाम बता रहा था।"

सुसी ने कहा, "वह सब जाने दो, मेरे रुपये लाओ, मैं घर जाऊँगी।"

"कितने रुपये हुए ?"

सुसी ने कहा, "सिनेमा देखने के दस रुपये, और इन चार घटा के चालीस रुपये। न जाने कहाँ-कहा के बदमाश लोग आकर इस होटल मे जुटते है। मै अब फिर कभी यहाँ नही आऊँगी। बाजारू लडकियो के साथ सब यहाँ मौज उडाने आते है और भले घर की लडकियो को तग करते ह। लाओ, रुपये लाओ !"

रुपये गिनकर सुसी चट से सामने आकर रुकी बस मे चढ गई।

"इनक्लाब !"
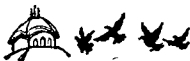
"जिन्दाबाद !"

धीरे-धीरे लोगो की तादाद बढते-बढते 'प्रोसेशन' काफी लम्बा हो

गया। वीच की लाइन मे लगा अरविन्द भी भेडिया-धसान के साथ आगे वढ रहा था। आज की सुवह खराव नही रही। रोज-रोज वही रुपये की चिन्ता अच्छी नही लगती। सुवह से लेकर शाम तक, जव देखो तव रुपया और रुपया—कभी यह चाहिए, कभी वह—

आजकल हर चीज की कीमत भी वान की तरह सर-से ऊपर उठ जाती है, लेकिन जल जाने पर वान जैसे गिरने लगता है, वैसे कीमत नही गिरती। कीमतें इस तरह वढ रही है कि मत पूछो। एक-वार वढने पर खैर, कम होने का सवाल ही नही उठता। डाक्टर ने कहा था, गोपा को रोज थोडा-वहुत गोश्त खिलाओ। दूकानो पर वकरे सजाये रखे रहते है। सडक की ओर मुंह वाए दूकानदार ग्राहक फँसाने की कोशिश भी करते ह। साथ ही, देखते-देखते सारी दूकान खाली हो जाती है।

उस दिन वाजार मे उस कुजड के साथ झगडा हो गया।

आसपास के किसी गाव का रहनेवाला था। अपने गॉव से सब्जी लादकर शहर के वाजार में बेचने आया था।

वही कह रहा था, "वावू, दू कहाँ से! ढाई? रुपये सेर चावल आता है। एक वक्त अरवी के पत्ते खाकर दिन काट रह है।"

अरविन्द ने कहा था, "तो क्या हम लोगो का पैसा सस्ता है?"

सच ही तो किन मुश्किलो से, कितने जोड-तोड बैठाकर दो पैसे पैदा किए जाते ह, यह अरविन्द ही जानता है। शिरीप वावू जैसे लोगो का क्या है। यहाँ हारान नस्कर लेन मे आ रहे है, तो खद्दर पहनकर राजभवन मे भी जा रहे ह। राजभवन! अरविन्द कभी राजभवन के अन्दर गया नही था, सिर्फ वाहर से देखा है। एक वार वह दिलीप दा का टेलीफोन विल जमा करने उधर गया था, तव देखा था। राजभवन के गेट के पास ही एक वडी सी तोप रखी थी।

अरविन्द ने लोहे के फाटक के वाहर खडे अन्दर की ओर देखा था।

अचानक देखा, एक गाडी आयी जिसमें शिरीप वावू वैठे है।

"शिरीप वावू! शिरीप वावू!"

गाडी वही थी जिसमे वैठकर शिरीप वावू अरविन्द के घर गये थे।

"शिरीप वावू, मैं हूँ अरविन्द। कहाँ जा रहे ह शिरीप वावू?"

आवाज सुनकर शायद गाडी जरा देर के लिए रुकी, शिरीष वावू ने मुडकर देखा भी, लेकिन वे जैसे अरविन्द को पहचान नही पाए। अरविन्द की ओर एक वार देखकर भी दूसरे ही क्षण उधर से शिरीष वावू ने नजर घुमा ली। न जाने कौन किसे पुकार रहा है। पास ही भूधर वावू वैठे थे।

भूधर वावू ने कहा, "लगता है, आपको किसी ने पुकारा।"

"कहाँ ? किसने ?"

हडवडाते हुए शिरीष वावू ने इधर-उधर देखा। फिर कहा, "देखिए न, 'पब्लिक वर्क' करते-करते न जाने कितने लोगो के सम्पर्क मे आना पडता है, हर वक्त सवको पहचान भी नही पाता।"

गाडी तव तक राजभवन की चेक-पोस्ट को पार कर काफी अन्दर चली गई थी।

शिरीष वावू ने पूछा, "आपने चीफ मिनिस्टर को सव कुछ समझा दिया है न ?"

भूधर वावू सरकारी हलके के नामी आदमी है। हर जगह उनका आना-जाना है। कव, किससे, कौन-सा काम लिया जा सकता है, यह उनकी उँगलियो पर है। काम निकालने के मामले मे तो वह जैसे 'मैजिक, जानते है। मैदान मे एक्जिविशन होनी है, वहाँ किसे कौन-सा स्टॉल चाहिए, भूधर वावू को पकडो, सस्ते मे काम करा देंगे। रुपये की कमी की वजह से मकान नही वनवा पा रहे है, सरकारी लोन चाहिए, दरख्वास्त दीजिए, 'वेस्ट पेपर वास्केट' मे चली जाएगी। लेकिन अगर भूधर वावू तक पहुँच सकते है, तो सारा काम चुटकी वजाते हो जाएगा। सचमुच मे जिसे पहुँचवाला आदमी कहते है, भूधर वावू वही हैं।

लेकिन शिरीष वावू की वात अलग है। शिरीष वावू का भला करना खुद अपना भला करना है।

"जमीन के वारे मे पहले से कह रखा है न, भूधर वावू ?"

भूधर वावू ने कहा, "मैने जव कह दिया कि जमीन आपको मिलेगी तो मिलेगी ही। चीफ मिनिस्टर भले ही जो कुछ कहे, आपको जमीन से मतलव है न ?"

शिरीष वावू जो वात सभी से कहते है, वही उन्होने भूधर वावू से

भी कही। कहने लगे, "आप तो जानते ही हैं भूधर बाबू, यह सब मै अपने खाने-पहनने के लिए तो कर नही रहा हूँ। मेरे न तो बीवी ही है, न बच्चा ही, जिनके लिए रुपये जोडू। इसके अलावा ज्यादा पैसा हो जाने से आदमी की आदत खराब होती है। मुझे उस सबसे क्या लेना है? औरत क्या चीज होती है, में जिन्दगी भर मे भी नही जान पाया। किसी चीज का नशा या शौक भी नही है, जिसके लिए रुपये की जरूरत पडे। बचपन मे शराब की दूकानो पर पिकेटिंग करने के अपराध मे जेल गया था। वहाँ से वापस आने पर सोचा, नौकरी नही करूँगा, करना ही है तो कोई धधा करूँगा। सर पी० सी० राय का भी तो यही कहना था। इसीलिए—"

भूधर बाबू ने कहा, "ये सारी बाते मैंने चीफ मिनिस्टर के कान तक ऑलरेडी पहुचा दी है—"

"शराब की दूकान पर पिकेटिग करते हुए जेल गया था, यह भी?"

"आपको बतलाया न कि जमीन आपको मिलेगी। आपकी फैक्टरी बनेगी, यह कोई आपका निजी काम थोडे ही है? यह तो देश का काम है। नयी इडस्ट्रीज से तो गवर्नमेट को ही फायदा है। गवर्न-मेट ने ही तो प्रोडक्शन बढाने के लिए कहा है।"

शिरीष बाबू का डर तब भी कम नही हो रहा था। उन्होने धीरे से पूछा, "कुछ देना-लेना होगा क्या?"

भूधर बाबू चौक उठे। उन्होने कहा, "किसे? चीफ मिनिस्टर को? आप पागल हुए है क्या?"

"नही-नही, मेरा वह मतलब नही है। मेरा क्या दिमाग खराब हो गया है? चीफ मिनिस्टर को रिश्वत देने की बात भला मैं सोच भी सकता हूँ?"

भूधर बाबू ने कहा, "डिपार्टमेट मे केस जाने पर देखा जाएगा। इस बारे मे मै आपको वक्त आने पर खबर दूगा।"

"इसके लिए मैने कुछ नगद रुपये अलग रख छोडे है।"

"जी हा, अलग ही रखिए, जिससे अचानक जरूरत पडने पर देरी न लगे।"

"असल मे मुझे डर किस बात का लग रहा है, जानते है? रेजिडेंशियल

क्वाटस के लिए सरकार प्लॉट्स बना रही है। उसकी जगह फैक्टरी बना रहा हूँ, यह बात डिपाटमेट अगर दवा दे तो वेहतर होगा।"

"जरूर दवा दी जाएगी। वैसे अभी तक स्कीम वाहर आऊट भी नही हुई है। अभी किसी को कैसे पता लग सकता है? अखवारा म विज्ञापन निकलने से पहले ही अगर प्लॉट एलाट हो जाए तव ता मजा है, नही तो क्या फायदा?"

राजभवन के पोर्टिको के नीचे गाडी पहुँचने पर भूधर वावू उतरे। उन्हाने कहा, "आइए, गाडी यही पर रहने दीजिए। जरा चक्कर काट कर जाना पडेगा, चीफ मिनिस्टर उस ओर रहते हैं।"

अरविन्द गेट के वाहर खडा आश्चर्य से अदर की ओर देख रहा था। गाडी के आँखो से ओझल होते ही उसने उधर से नजर हटा ली। गेट के अदर चेक-पोस्ट के सामने पुलिस कास्टेवल खडा था। वह अरविन्द की ओर शक की नजर से देखने लगा।

इसके वाद उसकी ओर वढकर पूछा, "यहा किसलिए खडे ह? खडे-खडे क्या देख रहे है? किससे काम है?"

अरविन्द विना कोई जवाव दिये जल्दी ही एक ओर हट गया। एक वडी-सी तोप सडक की ओर मुँह किए खडी थी। अरविन्द को लगा, वह तोप जैसे अपनी एक आख से मेरी ओर देख रही है। एक आँख से जैसे मुझे निशाना वना रही है।

पता नही, उसे वहाँ क्यो रखा गया है? डरान के लिए! लेकिन किसे? गरीवो को? या चोर-डाकुओ को?

तोप चाहे जिसे निशाना वना रही हो, चाहे जिसे डरा रही हो, अरविन्द को वहाँ जाने की क्या जरूरत है! अत मे शायद उसे ही गोली का निशाना वनना पडे! अरविन्द के मरने पर कोई भी विरोध नही करेगा, कोई भी कभी प्रतिवाद नही करेगा। दुनिया म उसका है ही कौन! हालाकि उसके भरोसे एक पूरा परिवार किसी तरह जी रहा है। उसके मरने पर वह भी नही रहेगा। तव मा के लिए रोज रवडी का इतजाम कौन करेगा? दो-दो घरा का किराया कौन देगा? गोपा वेचारी, जो वैसे ही इतनी कमजोर है, कैसे पट पालेगी? वेचारी करे भी क्या, अगर जरा और मोटी होती, तो शायद शिरीष वावू उसे पसद कर लेते।

वहा से यादवपुर लौटकर अरविन्द ने दिलीप को यही बतलाया।

'भद्रकाली मिष्टान्न भडार' के मालिक के लिए ये बाते कोई नई नही है। उसने कहा, "तुझे तो टेलीफोन का बिल जमा करने भेजा था, तू राजभवन क्यो जा पहुँचा ?"

अरविन्द ने कहा, "सोचा, इतना दूर आया हूँ, जरा डलहौजी स्क्वायर भी देखता चलूँ।"

"ट्राम के किराए मे कितने पैसे खच हुए ?"

अरविन्द ने कहा, "मैंने किराया बचा लिया है—"

"कैसे बचा लिया ?"

"किराया दिया ही नही।"

"सो कैसे ? बिना किराया दिए तुझे ट्राम मे बैठने दिया ?"

अरविन्द ने कहा, "नही, यह बात नही है, कडक्टर जैसे ही किराया मागता, मैं फौरन ट्राम से उतर पडता। फिर पीछेवाली ट्राम मे चढ जाता। इसी तरह चढते-उतरते चला आया—"

"ठीक है, बहुत अच्छा किया। ला, बिल ला—"

अरविन्द ने बिल दे दिया। फिर कहा, "वह शिरोप बाबू है न, उन्होने मुझे आज देखकर भी नही पहचाना, जबकि मेरे यहा आने पर मैं खुद अपने हाथ से उनके लिए चाय बनाता हूँ।"

"वह सब तो ठीक है। लेकिन तय हुआ था कि अपनी बहन के साथ उनका परिचय करा देगा, सो क्या हुआ ?"

अरविन्द ने कहा, "अब मैं क्या करूँ दिलीप दा, सुखी को तो तुम जानते ही हो। एक नम्बर की हेकड और जिद्दी लडकी है। किसी भी तरह राजी नही हुई। मैंने बहुतेरा समझाया, बहुत बडे आदमी है, गाडी मे बैठकर जरा घूम आ, लेकिन उसने माना ही नही—"

"बेचारे पूरे बारह रुपये की एक किलो रबडी तेरी माँ के लिए ले गए—"

"सचमुच बड़ा अच्छी रवडी थी। खूब मलाई थी।"

"हट कम्बख्त! रवडी ले गए थे तेरी मा के लिए और तून खा ली?"

"मैंने कहाँ खाई! माँ ने दी थी। मैने क्या अकेले खाई थी? मैं, गोपा और सुसी सभी ने खाई।"

"क्यो, शिरोप वाबू की रवडी खाते तेरी वहन को शर्म नही आई? तू जो कुछ भी कह, तेरी वहन का हिसाव-किताव ठीक नही है।"

अरविन्द ने कहा, "वह तो मैं भी हजार वार कहता हूँ। उसमें अगर जरा सी भी वुद्धि होती, तो फिर क्या था दिलीप दा। इतनी वडी जवान लडकी के घर मे रहते मेरी यह दुर्दशा होती? अरे, उससे कुछ छिपा तो है नही, उसका भैया पैसे-पैसे के लिए मुँहताज है, उसकी भाभी की सेहत दिनो दिन विगडती जा रही है, पैसे न होने से माँ के लिए चश्मा तक नही वनवा सका। इतना सव देखकर भी उसे अपने घर वालो पर दया नही आती।"

दिलीप वेरा ने कहा, "मेरी एक वात याद रखना अरविन्द, तू जिस वहन के लिए इतना कर रहा है, तेरी वही वहन एक दिन तुझे अँगूठा दिखाकर चली जाएगी—"

अरविन्द ने कहा, "मैं जानता हूँ दिलीप दा, मेरी किस्मत ही खराव है। किसी का क्या क़सूर?"

"तेरी वहन चोरी छिपे लोगो के साथ होटलो मे जाती है। तुझे इसका पता है?"

"अरे नही, यह तुम क्या कह रहे हो दिलीप दा? जो भी हो, सुसी इतनी गिरी हुई नही है।"

"नही है के मतलव? तुझे सवूत चाहिए?"

अरविन्द ने कहा, "अरे नही, वह जो सिल्केन साडी पहनती है, शायद इसीलिए कह रहे हो—"

दिलीप दा ने कहा, "नही, खुद शिरोप वावू ने उसे वाहरी आदमी के साथ होटल मे ह्विस्की पीते देखा है।"

"छि! तुम भी कैसी वातें करते हो दिलीप दा? सुसी की इतनी हिम्मत नही हो सकती।"

"ठीक है, शिरीष बाबू से मिलने पर उन्ही की जबानी सुन लेना। शिरीष बाबू तुझसे खुद कहेंगे। शिरीष बाबू तो झूठ नही बोलेंगे।"

अरविन्द जैसे आसमान से गिरा। कुछ देर तक तो उसके मुंह से बात ही नही निकली। उसने सुसी को गोद मे खिलाया है, वही सुसी चोरी-छिपे शराब पीएगी, अरविन्द को यह बात सोचने मे भी तकलीफ हो रही थी। वह थोडी देर हैरत से दिलीप बेरा की ओर देखता रहा।

"दिलीप दा, तुम सच कह रहे हो ?"

दिलीप दा ने 'हो-हो' कर हँसते हुए कहा, "अरे, इसमे घबडाने की कौन सी बात है ! एक तेरी ही बहन शराब पी रही है क्या ? सभी पीती है। नही तो कितने मा-बाप है, जो आज अपनी लडकियो का खर्च बर्दाश्त कर सकते है ? कितने माँ-बाप की ऐसी हैसियत है ?"

अब भी अरविन्द का विस्मय दूर नही हुआ था।

"अच्छा, अब घर जा। तीन बज रहे है, खाना खाया है या नही ?"

सारा दिन अरविन्द डलहौजी स्क्वायर मे चक्कर लगाता रहा, सुबह से अभी तक खाया-पीया भी नही था। उसका सिर भन्नाने लगा था। बिना कुछ कहे वह सीधे हारान नस्कर लेन की ओर चल दिया। सुसी शराब पीती है सुसी शराब पीती है सुसी शराब पीती है
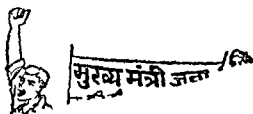
लंबा जुलूस कलकत्ते की ओर ही बढ रहा था। जुलूस की लाइन मे लगा अपने ही विचारो मे खोया अरविन्द भी जनस्रोत के साथ बढ रहा था। चलो, कलकत्ते चलो। हम लोग इतनी दूर से कलकत्ते जा रहे है। वहाँ पहुँचने से ही हमारी सारी माँगे पूरी हो जाएँगी। चलो भाई, कलकत्ते चलो—

इनकलाब !

जिन्दाबाद !

सभी ने एक साथ आवाज मिलाकर नारा लगाया, कलकत्ते चलो !

और सिर्फ़ अकेला अरविन्द ही क्यो ? अनादि काल से सभी का
तो यही एक लक्ष्य रहा है। सभी कलकत्ते आते है। कलकत्ता ही ता
वगालियो का स्वर्ग है। भिखारी वनने के लिए भी यहा आना
पडेगा, अमीर वनने के लिए भी यही आना पडेगा। पढाई-लिखाई
करनी हे तो कलकत्ते चले आओ। पढाई-लिखाई भूलनी हो तो कलकत्ते
चले आओ। साधु वनने के लिए भी यहाँ आना पडेगा और चोर वनन
के लिए भी। वडे पुराने जमाने से न जाने कहाँ-कहाँ के लोग यहाँ
आते रहे ह। यही, इस कलकत्ते मे। जिस तरह एक दिन ईश्वरचन्द्र
विद्यासागर यहा आए, उसी तरह आए महाराज नन्दकुमार। मार-
वाडी, गुजराती, पारसी, सिक्ख, हिन्दू, मुसलमान, जैन, बौद्ध, वैष्णव
और ब्राह्मण मे से कौन ऐसा है, जो यहाँ नही आया ? सवकी गति
का एक यही तो लक्ष्य रहा है। कलकत्ते आने पर ही जैसे सवको
मोक्ष मिलता है।

जाने किस देश मे पैदा हुए जूडी हॉवसन को भी जैसे कलकत्ते आए
विना मोक्ष नही मिल रहा था। हजारो पाउण्ड खच करके वह ठीक
इस वक्त अगर यहाँ पर न भी आते, तो ऐसा कौन-सा नुकसान
होना था।

लेकिन इतिहास के अटल नियम के अनुसार जिस तरह वुधुआ
को अपना जयचडीपुर का झोपडा छकरोड यहाँ आना पडा है, उसी
तरह जूडी हॉवसन और क्लारा डैनहम को भी यहा आना पडा है।

रात को 'डिनर' के वक्त अपने चारो ओर का वातावरण देखकर
जूडी हॉवसन को वडी हैरत हो रही थी।

सुवह से ही होटल के वैरो ने उन्हे जैसे घेर रखा था। एक
टीन सिगरेट मँगाने पर वे पाँच वार सलाम ठोकते। जवकि अकल
हॉवसन वगाल के गवनर के मिलिटरी सेक्रेटरी थे, उस जमाने मे
इन्ही के न जाने कितने भाई-वन्धुओ को गोली से उडाया गया था।
इन लोगो को शायद पता नही है कि इसी हॉवसन के अकल न
कितने ही लोगो को कलकत्ते की सडको पर अपने ही हाथो गोली स
उडाया है।

"सडको पर गोली चलायी ?"

पूरा कलकत्ता उन दिनो एक किला था। उत्तर नाथ मे श्यामवाजार

के मोड से लेकर साऊथ मे टालीगज के आखिरी छोर तक पूरे इलाके मे पुलिस खून करने के लिए लोगो को खोजती फिरी। 'नेटिव' को देखते ही गोली से उडा देती। लेकिन पुलिस की गाडी देखते ही 'नेटिव' गलियो मे जा घुसते थे। फिर इन लोगो का पता नही लगता था। हम लोग मशीनगन लिए इनका पीछा किया करते थे। ये लोग घरो से ईंट और पत्थर के टुकडे फेंकते जिससे हमारे काफी सिपाही मारे गए, कितनो की आखें जाती रही।

क्लारा ने कहा, "तब क्या तुम लोग इन्ही लोगो के डर से 'इडिया' छोडकर चले गए ?"

ये सब बातें काफी पुरानी है। अकल हॉबसन जब उन दिनो के किस्से सुनाया करते थे, तो जोश से उनका गला रुँधने लगता था। लेकिन अब ये बातें इतिहास का पुराना चैप्टर बनकर रह गई है। अब वे दिन कहाँ है ?

भतीजे जूडी ने एक दिन पूछा था, "अकल, तुम लोग इडिया छोडकर चले क्यो आये ?"

"क्यो चले आये, यह तुम इगलैंड के प्राइम मिनिस्टर से पूछो। इतिहास की रफ्तार तब बदल चुकी थी। हम लोगो ने ही उन 'नेटिवो' को अग्रेजी भाषा सिखाई। बेचने के ख्याल से करोडो की तादाद मे किताबें छाप-छापकर उन लोगो को पढाने के लिए भेजी। वैसे उससे करोडो पाउण्ड का फायदा भी हुआ। लेकिन एक बडा भारी नुकसान हो गया, उन किताबो को पढकर उन 'नेटिव्स' की आखें खुल गई। उन लोगो ने सोचना शुरू कर दिया कि हम लोग भी इनसान है। धीरे-धीरे उन्ही लोगो मे मैट्सिनी, गैरीबाल्डी और विलियम द काकरर पैदा होने लगे।"

"विलियम द काकरर ?"

सुनकर जूडी हॉबसन को बडा अजीब लगा था। हू इज ही ? वह कौन है ?

अकल ने बतलाया था, "अरे, वही तो था हम लोगो का दुश्मन। हम लोगो का डेडलिएस्ट एनिमी—दैट सुभाष बोस ? दे कॉल हिम नेताजी। हम लोगो ने नेहरू की परवाह नही की, गाधी की परवाह

नही की, लेकिन सुभाष वोस की परवाह करनी पडी। इन 'नेटिवो' मे वह रायल बेंगल टाइगर था।"

उस रायल बेंगल टाइगर के वतन मे ही जूडी और क्लारा हनीमून मानने आये हैं। यहा जो भी चीज नजर आती, अच्छी तरह उसकी जाँच-पडताल करते है। यही है, उस रायल वेंगल टाइगर का वतन, यह कलकत्ता। लेकिन इसे देखकर तो वैसा नही लगता। यहा के लोगा की शक्ल-सूरत देखकर तो नही लगता कि ये लोग रायल वेंगल टाइगर के वशज हैं। गड्ढो मे धँसी आँखे, कमजोर और मरियल चेहरे, सीक जैसे हाथ-पैर। इन लोगो का यह हाल कैसे हो गया ? यहा होटल मे वैठकर ये ही लोग तो काल गर्ल के साथ शराव पीते ह और पागलपन करते हे, इसके वाद आपस मे झगडते ह—

"जूडी, ऐसा क्यो हो गया ?"

जूडी ने कहा, "तुम्हे वतलाया था न कि हम लोग यहा से चले भले ही गए है, लेकिन एक चीज छोड गए ह—"

"क्या ? कौन-सी चीज ?"

"वही तोप। देट वन-आइड कैनन। गवनर्स हाऊस मे उस कानी तोप को छोड गए, वही चाइनीज तोप, जो सडक की ओर मुह किए खडी है। उस तोप के नीचे एक डॅगन है, उस डॅगन के ऊपर ही तोप रखी है। एक दिन इसी तोप से हमने हजारो लोगो को गोली से भूना है। अव 'नेटिवों' की सरकार वन गई है, अव ये लोग भी गोली चला रहे है—रायल वेंगल टाइगर के वशजो को हमारी तरह ये लोग भी गोलियो से भून रहे है—"

"क्यो, ये लोग अपने ही लोगो को क्यो मार रहे है ?"

"इसी को तो कहते हैं किस्मत का खेल। आयरनी ऑफ फेट।"

तभी वेटर ने सिगरेट का टीन टेवल पर रखकर सलाम ठोका।

"सलाम सरकार।"

जूडी हॉवसन के एक रुपया वख्शीस के देते ही उसने और भी झुककर सलाम ठोका। "सलाम हजूर, सलाम।"

इसके वाद वेटर खुश होकर जाने लगा।

जूडी ने कहा, "एक मजा देखोगी, क्लारा ?"

कहकर उसने वेटर का पुकारा, "व्वाय, इधर आओ—"

लेन मे शाम ही से सन्नाटा छा जाता है। ब्लाइण्ड लेन म जाने पर और भी सूना-सूना लगता था। बूढी माँ अपनी अधी आँखें लिय दरवाजे के पास बैठी अफीम की पीनक मे शाम ही से ऊँघती रहती। कहती, "तू सोने जा बेटा, मैं दरवाजा खोल दूगी।"

"तुम कैसे खोल दोगी ? तुम्ह क्या दिखाई देता है जो दरवाजा खोल दोगी ? अगर गिर पडो तो मुझे ही देखना पडेगा। सारी मुसीबत मेरे ही सिर पर है। डाक्टर और दवा के लिए तो मुझे ही भागना पडेगा, या तुम्हारी लाडली बेटी जाएगी डाक्टर बुलाने ?"

बुढिया ने कहा, "तू भी कैसी बात करता है, वह बेचारी ठहरी लडकी की जात और तू है लडका। तुझसे उसका क्या मुकाबला ? वह अपनी पढाई करेगी या घर के धधे देखेगी ?"

"लेकिन इतनी रात तक वह क्या पढने जाती है ? रात को भी क्या उसका कालेज खुला रहता है ?"

"अरे, रात को कालेज क्यो खुला रहेगा ? कालेज के बाद बेचारी लडकिया को पढाने जाती है, तुझे नही मालूम ?"

"लडकियो को पढाने ? सुसी ने तुम्हे यही समझाया है क्या ?"

"बेचारी लडकियो को न पढाए तो अपना खर्च कहा से चलाएगी ? तूने कभी पूछा है उसके पास पहनने को साडी है या नही, उसके पाँवा मे जूते है या नही ?"

अरविन्द ने कहा, "तुम क्या सोचती हो कि लडकियो को पढाकर ऐसी कीमती साडिया आती है ? तुमने कभी उसकी साडिया देखी है ? जानती हो, उसकी एक-एक साडी की कीमत कितनी होगी ? अगर नही जानती तो अपनी वहू से पूछकर देखो।"

"अपने पैसे से अगर वह साडी खरीदती है, तो तेरा क्या जाता है ?"

"अपने पैसे से साडियाँ खरीदती है, बडा अच्छा करती है, लेकिन घर के खर्चे मे मेरा भी तो हाथ बटा सकती है। कितनी मुश्किल से मै खर्चा चला रहा हूँ, तुम लोग अगर एक बार समझ पाती। डाक्टर ने तुम्हारी वहू को गोश्त खिलाने के लिए कहा है, लेकिन क्या मे उसे गोश्त खिला पा रहा हूँ ? इतने दिन हो गए, तुम्ह दिखाई नही देता, लेकिन तुम्हारे लिए एक चश्मे का पसा क्या जुटा

पा रहा हूँ ? खाना पकाते-पकाते और वरतन साफ करते-करते तुम्हारी वहू की देह स्याह पड गई है, लेकिन क्या मैं एक खाना वनानेवाली का इन्तजाम कर पा रहा हूँ ? खैर, तुम्हें यह सव सुनाने से फायदा भी क्या है ? तुम्हें तो मेरी गलतियाँ ही दिखाई देती है, अपनी विटिया मे दोष नही देखती। तुम्हारी विटिया जो भी करे सो ठीक है। लेकिन इतना याद रखो माँ, यही तुम्हारी लडकी एक दिन हम सवके मुँह पर कालिख पोतकर रहेगी, तव समझना।"

माँ वेचारी सुनती रही। उसने कोई जवाव नही दिया। कुछ देर वाद उसने कहा, "भाग्य की वात है वेटा, ये मेरी आखें फूट न गई होती, तो तेरी वहू को घर के ये घधे नही झेलने पडते। मैं खुद ही सव सम्हाल लेती। खाना भी पका लेती, वरतन भी माँज लेती। इन आखो के विना मैं जिंदा भी मरे के समान हो गई हूँ—"

अचानक वाहर गली मे किसी के पाँवो की आहट सुनाई दी।

अरविन्द ने कहा, "यह लो, राजदुलारी आ गई—"

माँ ने कहा, "ऐसा क्या कहता है वेचारी को ? दो दिन वाद व्याह हो जाएगा तो अपने घर चली जाएगी, जव तक यहा है हँस-खेल ले, वाद मे पराए घर की वहू वनने पर पिलना ही पडेगा।"

खट्-खट्-खट्-खट्-खट्—

कोई जोर से दरवाजे की कडी खटखटा रहा था।

"देख रही हो माँ, मेमसाहव आधी रात के वाद घर लौट रही है, इस पर भी जरा कुडी खटखटाने का ढङ्ग तो देखो। जैसे घर म उसके लिए दस-पाच नौकर वैठे हो—"

दरवाजे तक जाते-जाते अरविन्द अपने को कावू मे न रख पाया। वह जोर से चिल्लाया, "जरा सब्र कर वावा। तेरे किवाड खोलने के लिए यहा पर दस-पाच नौकरानिया नही वैठी है।—आखिर मेम-साहव का कालेज खत्म हुआ। आजकल पढाई वडे जोरो से हो रही है, हमने तो जैसे कभी पढाई की ही नही। हमें जैसे नही मालूम कि कालेज कव खुलता है और कव वद होता है—ठहर जा—"

लेकिन दरवाजा खोलते ही अरविन्द के पावो तले की जमीन खिसक गई। हाथ मे वैटन सम्हाले एक पुलिस कान्स्टेवल खडा था।

उसे देखते ही अरविन्द दो कदम पीछे हट आया। इससे पहले

कभी पुलिस कान्स्टेबल से उसका पाला नही पडा था। पुलिस की जगह तो सडको और चौराहो पर है। वहाँ वह ठीक है। लेकिन यहाँ घर के अदर पुलिस का क्या काम ? मैंने न तो शराव की भट्ठी खोल रखी है, न मैं ब्लैक मार्केटिङ्ग करता हूँ। सोने के बाट भी मैंने खरीद कर नही रख छोडे हे। फिर क्यो मुझे पकडने आए है ये लोग ?

गली के घुप्प अँधेरे मे सिपाही की शक्ल और भी भयकर लग रही थी।

पीछे से अधी वुढिया चिल्लाई, "क्यो री सुसी, लौटने मे इतनी देर क्यो करती है, जरा जल्दी नही लौट सकती ?"

उस सिपाही ने कहा, "मैं थाने से आ रहा हूँ, वडे वावू ने आपका वुलाया है, चलिए—"

डर के मारे अरविन्द का गला रुँध आया। उसने कहा," मुझे ? क्यो ? मैंने क्या किया है ?"

"यह सव हमे क्या मालूम ? जल्दी कीजिए—"

अरविन्द वहा खडे-खडे ही कापने लगा।

इसकी शुरुआत सन् १९४३ से ही हुई थी। सन् १९४३ से इन लोगो का कलकत्ते आना शुरू हुआ था। उन दिनो शिरीष वावू वगैरह मिलिटरी काण्ट्रक्टर थे। लोगो के मुह का कौर छीनकर उसे साऊथ-इस्ट एशिया कमाण्ड के सिपाहियो के लिए गोदामो मे रखा जाता था। और तभी से सिर्फ दो मुट्ठी भात के लिए लोगो का कलकत्ते आना शुरू हुआ। अरविन्द जैसो ने वे दिन नही देखे। देखे है, उसकी बूढी माँ ने, वुधुआ की मा ने और स्ट्रैण्ड होटल के वेटर और खानसामाओ ने। उसके वाद भी अठारह-उन्नीस साल गुजर चुके। लेकिन लोगो का कलकत्ते आना अभी भी नही रुका। न जाने कहाँ-कहा से लोग लाइन लगाए, इनक्लाव-जिन्दावाद करते चले आते है। कहाँ हुगली, कहाँ चुचुडा, कहा मुर्शिदावाद, कहा जलपाईगुडी और कहाँ वदवान, सभी का लक्ष्य एक ही है।

सभी एक नारा लगाते रहे है—इनक्लाव ! जिंदावाद !

इस आवाज से दिल्ली मे बैठे शासको के कान मे जूँ तक नही रेंगी। इन्द्रप्रस्थ के राष्ट्रपति भवन मे प्रेसिडेण्ट के एअर कण्डीशण्ड कमरे की दीवारो पर वारवार सिर पटककर ये आवाजे वापस आ जाती। इद्रप्रस्थ मे बैठे फाइनन्स मिनिस्टर के पोटफोलियो मे भी इन आवाजा की वजह से एक वार ची-चपड भी नही हुई।

लेकिन अमेरिका के 'ह्वाइट हाऊस' मे बैठे प्रेसिडेंट आइजन-हावर के कानो मे यह आवाज पहुँच गई। इतनी वडी अडर-डेवेलप्ड कट्री कम्युनिस्ट ब्लॉक मे चली जाती है, तो उससे इडिया का क्या नुकसान होता है! असली नुकसान तो अमेरिका का ही है। व्रिटिश गवनमेट ने इडिया छोड दिया है। सिर्फ इडिया ही हैं क्यो, अफ्रीका, मलाया, सीलोन और वर्मा सभी देश तो खाली पडे ह। और, जगह खाली रहने पर कोई न कोई तो वहा जाकर झपट्टा मारेगा ही। उनका वाजार छीन लेगा, इसलिए कुछ तो करना ही चाहिए।

इसलिए सारी एम्बैसियो के नाम कॉन्फीडेंशियल डिसपैच जारी किए गए। फौरन रिपोट भेजो। वहा के जनसाधारण की जिदगी की रफ्तार कैसी है, वे लोग क्या चाहते है, उन लोगो मे ज्यादातर किस विषय को लेकर चर्चा होती है, जानने की कोशिश करो। यह वडा ही जरूरी है। इन्द्रप्रस्थ के शासको की गतिविधि के वारे मे स्पाईंग करो।

लौटते डिसपैच मे रिपोट आ गई।

खवर सव ठीक है योर एक्सेलेन्सी! डरने की कोई वात नही है। 'एव्रीथिंग इज ऑलराइट इन दि स्टेट ऑफ डेनमाक एण्ड गॉड इज इन हेवेन।' इस दुनिया मे सव लोग मजे मे है, फिर ऊपर भगवान तो ह ही। इन्द्रप्रस्थ के राजाधिराज निश्चित है। एव्रीवन इज वेरी हैपी। यहाँ के सभी लोग पीस चाहते ह। वडे-वडे डैम वना रहे ह, हेवी इडस्ट्रीज चालू हो रही है। इन लोगो का ख्याल है, एक दिन हेवी इडस्ट्री की माफत ही रेलवे को इलेक्ट्रिफाई करेंगे और घर-घर हाइड्रो-इलेक्ट्रिक स्कीम की विजली पहुँचेगी। 'वाण्डुङ्ग कान्फ्रेन्स' म पचशील का प्रस्ताव पास हो चुका है। सभी उसमे मशगूल ह। अव उन्हे फिक्र करने की जरूरत नही है। सव ठीक हो जाएगा। मिनिस्टरो के रिलेटिव वडी-वडी नौकरियाँ पा रह हैं।

उनकी सतानें दोनों हाथों से फॉरेन एक्सचेंज उडा रही है। वे लोग आज इग्लैंड जा रहे ह तो कल अमेरिका, डिनर खा रहे ह और पार्टी दे रहे ह। अब तक जो लोग खद्दर छोडकर और कुछ पहनते नही थे, आज वे ही लोग सिर्फ टरिलिन टरिकॉट के सूट पहनते ह। लेकिन

"लेकिन क्या ?"

"लेकिन यही कि इस कलकत्ते की वजह से वडी मुश्किल हो गई है।"

"क्या ? क्या हुआ ? अरे, कलकत्ता तो इडिया का ब्रेन है न। इडिया का ब्रेन-सेंटर ! उस ब्रेन मे ही अगर गडवड हो गई तो कसे काम चलेगा ?"

यहाँ से फिर लम्बे-चौडे डिसपैच रवाना हुए। यस सर, ब्रिटिश एम्पायर की सेकॅड सिटी कलकत्ते मे अब घुन लग चुका है। यहाँ के लोगो ने एक दिन आजादी के लिए जान दी है और जान ली है, टेररिस्ट पार्टी बनाकर लाट साहवो पर गोली चलायी है। इन्ही लोगो ने एक दिन ब्रिटिश इम्पीरियल सर्विस के लोगो को थर-थर कँपा दिया था। लेकिन इस कलकत्ते मे ही आज सबसे ज्यादा फ्रस्ट्रेशन है। इस शहर मे न पानी है, न हवा और न जमीन। वच्चो के खेलने के लिए एक पार्क तक नही है। धुएँ की वजह से लोगो को टी० वी० हो रही है। यहाँ की फुटपाथ मानव शिशुओ का जच्चाघर वन रही है। यहा की लडकियो ने कालेज जाने के वहाने कॉल-गर्ल का धधा शुरू कर दिया है। घर-घर जो लोग वैक्सीनेशन के वहाने जाते ह, वे दलाल हैं। उन लोगो ने लडकिया सप्लाई करने का काम शुरू कर दिया है। यहाँ के लोग कही खाना वनाते हैं तो कही सोते हैं। पेट की खातिर ये अपनी वीवी तक से धधा करवाने मे नही झिझकते। यहाँ की विधवा और बूढी मा को एक चश्मा खरीदने तक का पैसा नही मिलता, लेकिन उसी घर की लडकी तीस रुपए की चप्पलें पहनती है। और कोई रास्ता न देखकर ये लोग प्रोसेशन निकालते हैं, जुलूस वनाकर मैदान की ओर जाते हैं और जव मैदान की मीटिंग खत्म हो जाती है, तो वगाल के गवर्नर हाऊस के सामने सडक पर वैठकर चिल्लाते हैं—

"इनक्लाव—"
"जिदावाद—"
"मुनाफाखोरो को सजा हो—"
"अनाज के भाव कम हो—"
"मुख्यमत्री जवाव दो—"
"नही तो गद्दी छोड दो—"

रिपोर्ट पहुचने के वाद 'व्हाइट हाउस' मे मीटिंग हुई। वडी ही कॉन्फीडेंशियल मीटिंग। यही मौका है। सारे साऊथ-ईस्ट एशिया मे अभी वैकुम है। पूरा इलाका एकदम खाली पडा है। यह मौका छोडना नही चाहिए। तीन दिन तक मीटिंग चलती रही। इस वीच न जाने कितने डिस्पैच आए और गए। सलाह-मशविरा पूरा होने के वाद वाशिंगटन के 'व्हाइट हाऊस' मे एक नई फाइल खोली गई। एकदम नई फाइल, नई दवा। इस दवा का नाम इससे पहले किसी ने नही सुना था! एकदम नया नाम।

यह तय हुआ कि हम लोग कलकत्ते के लिए मिल्क पाऊडर भेजेंगे, गेहूँ भेजेगे, चावल भेजेंगे, दवाएँ और तम्वाकू भेजेगे। कलकत्ते के लोगो की रोजमर्रे की जरूरत की सारी चीजे भेजेंगे। किताबे और एक्सपर्ट भेजे जाएँगे। इसके लिए इंडिया को कोई कीमत नही चुकानी होगी। इसके लिए जो मुनासिव कीमत मिल सकती है, वह रकम कलकत्ते के लोगो की सुख-सुविधाओ के लिए खर्च की जाएगी। उन वेचारो को भरपेट खाना मिल पाए, साफ हवा और पानी मिले और भले आदमियो की तरह सिर छिपाने के लिए कोई ठिकाना मिल जाए तो वे लोग कम्युनिस्ट नही होगे, सव अमेरिका की जय-जयकार करेंगे। जॉज वाशिंगटन और लिंकन की जय वोली जाएगी। जनरल आइजनहावर की जय वोली जाएगी। युनाइटड स्टेट्स ऑफ अमेरिका जिदावाद के नारो से आसमान गूजने लगेगा।

इस दवा का नाम है पब्लिक लॉज-फोर एइट्टी। यानी पी० एल० ४८०।

यह १० जुलाई सन् १९५४ की वात है।

"फिर?"

फिर यहा के लोग अमेरिका गए। अमेरिका के लोग यहा आए

कलकत्ते को बचाना ही होगा। यहाँ के लोगों को जिंदा रखने के लिए उन्हें पानी देना होगा, उनके लिए हवा का इंतजाम करना पडेगा, नहीं तो कलकत्ते की फुटपाथों के जच्चेखाना में न जाने कितने नवजात भारत अकाल ही काल के ग्रास बनेंगे।

दूसरी तरफ यहाँ के लोग गए चगाइल, बाउडिया, उलुबेडिया और हुगली, बर्दवान और चुचुडा की ओर। शिवपुर, बजबज और हावडा की ओर। जूट मील के मजदूर कहने लगे, चलो भाई कलकत्ते चलो। कलकत्ते के मैदान में मीटिंग होगी। हम लोग अपनी सरकार के आगे माँग रखेंगे। सरकार को बतलाना पडेगा कि हमें जो तनख्वाह मिलती है, उसमे गुजर करना बडा मुश्किल है। हमारी तनख्वाह बढाई जायें। डियरनेस एलाउन्स इनक्रीज किया जाए। अनाज की कीमतें कम की जाय। सस्ते भाव में चावल और गेहू दिया जाए। हम इनसान है, हमें इनसान की तरह रहने दिया जाए। चलो भाई, कलकत्ते चलो

न जाने कहाँ-कहाँ से लोग लाइन लगाए कलकत्ते की ओर आने लगे। उधर शियालदह, बशीरहाट, बारासत, नारकेलडागा और इधर हुगली, चुचुडा, श्रीरामपुर, हावडा और दक्षिण में यादवपुर, और सुदरबन, कैनिंग से लोग आने लगे। पूरा कलकत्ता जैसे लोगो की लम्बी-लम्बी कतारो के बीच फँस गया।

इन्ही की एक कतार मे फँसा अरविन्द मन ही मन न जाने क्या सोचता आगे बढ रहा था। पास ही चल रहा था कलुआ फटिक। चीखते-चीखते उसका गला बैठ गया था। इस पर भी वह लगातार चिल्लाए जा रहा था।

अरविन्द की ओर नजर जाते ही उसने पूछा, "क्या हुआ अरविन्द बाबू ? क्या सोच रहे है ? आवाज लगाइए—"

लेकिन आवाज लगाए तो आखिर किसके लिए ? क्यो लगाए ? किसके कान में उसकी आवाज पहुँचेगी ? वह कौन है ? उसका घर कहा है ? कौन उसके पास पहुँच सकता है ?

दिलीप बेरा ने कहा, "फिर ?"

अरविन्द की नजरो के आगे से उस वक्त सब कुछ मिट चुका था। उसकी आखो के आगे सिर्फ दिलीप बेरा का चेहरा उभर आया।

दिलीप बेरा ! यादवपुर के 'भद्रकाली मिष्टान्न भंडार' का मालिक ।

यह दिलीप दा न होता, तो उस दिन उसे कौन बचाता ! कौन उसकी इतनी मदद करता । लेकिन अन्दर ही अन्दर ये गुल खिल रहे हैं, यह कौन जानता था ?

असल मे इस सबके पीछे भूधर बाबू थे । भूधर बाबू बडे पहुँचे हुए आदमी हैं । ऊपर से बेचारे बडे ही परोपकारी आदमी हैं । कोई अगर उनके घर जा पहुचता है तो बेचारे गद्‌गद हो जाते हैं ।

फौरन पूछते हैं, "आपके लिए मैं क्या कर सकता हूँ ?"

कलकत्ते मे रहनेवाले इनसान की समस्याओं का कोई अंत नही है । समस्याओं के इस सागर मे से अगर उसे कोई उबार सकता है तो वह भूधर बाबू ही । द्वापर के पतितपावन श्री मधुसूदन ने ही इस कलिकाल मे शायद भूधर विश्वास के नाम से अवतार लिया है ।

भूधर बाबू किसी को खाली हाथ नही लौटाते । समस्या सुनते ही फौरन कहते हैं, "ठीक है, मैं सब ठीक कर दूंगा—"

सीमेंट के अभाव मे अगर किसी का मकान बनना रुका है, किसी को कॉरपोरेशन के कौन्सिलर के जरिए टैक्स कम कराना है या किसी को मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल मे फ्री बेड चाहिए या किसी को न्यू अलीपुर मे छोटा-सा प्लॉट चाहिए, किसी के थर्ड डिवीजन मे पास लडके को मेडिकल कॉलेज मे एडमीशन दिलाना है, या किसी को अमेरिका जाने का विसा चाहिए—इसी तरह की न जानें कितनी समस्याएँ हैं, जिन्हें सुलझाना आम इनसान के बस की बात नही है । इन कामों को करने से माउण्ट एवरेस्ट की चोटी पर चढना शायद आसान है ।

इसीलिए एक दिन शिरीष बाबू ने असाध्य-साधक भूधर बाबू को टेलीफोन किया ।

भूधर बाबू ने कहा, "आप भी कैसी बात करते हैं शिरीष बाबू ! आप क्यों तकलीफ करते हैं, मैं ही आपकी ओर चला आऊँगा—लेकिन आप काम तो बताइए—"

"आपको आने पर ही बताऊँगा । आप कब आ रहे हैं ?"

"आपको कब फुर्सत होगी ?"

"जब आपको फुर्सत होगी, मैं तभी खाली हूँ ।"

आखिर वह दिन भी ठीक हो गया। उस निश्चित दिन को ही भूधर बाबू से शिरीष बाबू की मुलाकात हुई। यह भेंट बडी शुभ रही। बगाल की ग्लास इडस्ट्री के लिए यह भेंट बडी ही फायदे की रही। काँच तो तरह-तरह के होते ह। लेकिन उससे किसी का क्या फायदा होता है। धीरे-धीरे बाजार छोटा होता जा रहा है। पहले बगाल का बना काँच बम्बई, मद्रास और दिल्ली हर जगह बिकता था। बगाल की मीला मे बने कपडे की खपत भी पहले पूरे हिन्दुस्तान मे थी। बाद मे वहाँ भी जैसे-जैसे ग्लास फैक्ट्रियाँ और कॉटन मिलें बनती गई, मार्केट भी छोटा होता गया। कम्पिटीशन होने लगा। कौन किस मिल के माल की खपत कितनी कम करा सकता है, इसी की कोशिश चलने लगी। धीरे-धीरे एक दिन हालत यहा तक पहुँची कि बगाल के बाहर अपना मार्केट रहा ही नही।

भूधर बाबू ने पूछा "अब ?"

शिरीष बाबू ने कहा, 'अब दूसरा रास्ता देखना पडेगा।"

"लेकिन वह दूसरा रास्ता क्या होगा, कुछ सोचा है ?"

"सोचा क्यो नही है ? अरे, दिन-रात मेरे पास और काम ही क्या है ? काफी सोचने-विचारन के बाद मैंने एक रास्ता निकाला है। चीफ-मिनिस्टर से कहकर आपने लेक-टाऊन वाली जमीन ता दिलवा दी, लेकिन एक और भी काम करना है—"

"कौन-सा काम ?"

शिरीष बाबू ने अपना पूरा प्लान बतलाया। किपलेक्स ग्लास का नाम सुना है ? जिसे 'अनब्रेकेबल' ग्लास कहते ह, माने जो काच टूटता नही। यह ग्लास मैन्युफैक्चर करने म एक तरह का सॉल्यूशन काम आता है। यह एक तरह का गोद है, जो इडिया मे नही मिलता। बाहर से मँगाना पडता है और फॉरेन से मँगान के लिए इम्पोट लाइसेंस की जरूरत पडती है।

"आप सीधे-सीधे यह क्यो नही कहते कि आपको इम्पोट लाइसस चाहिए।"

शिरीष बाबू ने कहा, "नही, बात यह नही है—"

"तब कौन-सी बात है ?"

"इसीलिए तो आपको बुलाया है, नही तो मैं ही यह काम कर

सकता था। असल मे वात यह है कि एक गुजराती फर्म 'मनुभाई दयाभाई एण्ड कपनी' ने इसका लाइसेंस ले रखा है। पूरे मार्केट को उन्ही लोगो ने कैप्चर कर लिया है और किसी को वहा घुसने ही नही देते।"

"आपने क्या इम्पोर्ट लाइसेन्स के लिए दरख्वास्त दी है ?"

शिरीष वावू ने कहा, "अरे दरख्वास्त करने से ही क्या लाइसेन्स मिल जाता है ? इडिया गवनमेण्ट के ऑफिसर क्या इतनी आसानी से कोई काम करने देते है ? वहा सीधी उँगली कभी घी निकलता है ? आप जैसे दो-एक लोग है जिनकी वजह से गुजारा हो रहा है—और भी दस आदमियो की रोटी चल रही है।"

जरा देर रुककर उन्होने फिर कहा, "हाँ, एक वात कहे दे रहा हूँ, इस काम मे अगर कुछ देना-लेना पडे तो वतलाने मे सकोच न करिएगा—"

भूधर वावू ने क्षुब्ध होते हुए कहा, "शुरू मे ही आपने देने-लेने की वात चला दी। ये काम क्या सिफ रुपये के वल पर होते है ? कलकत्ते मे तो हजारो लखपति और करोडपति पडे है, लेकिन चौवीस घटे के अन्दर कौन राशन की दूकान का लाइसेन्स हासिल कर पाता है ? इनमे से कितनो को कल शाम तक नई टैक्सी का लाइसेन्स मिलता है ? मैं चैलेंज करके कह सकता हूँ, किसी माई के लाल मे इतनी हिम्मत नही हे—"

शिरीष वावू को जैसे कुछ आशा मिली। उन्होने कहा, "तव मैं निश्चित रहूँ ?"

"वह तो ठीक है, लेकिन लाइसेन्स आपको कव तक चाहिए ?"

शिरीष वावू को वडी हैरानी हुई। उन्होने कहा, "सचमुच आप यह काम कर पाएँगे ?"

"फिर वही वात! आपको इम्पोट लाइसेन्स चाहिए या और कुछ ?"

"लेकिन यह मामला वेस्ट वेंगल गवनमेट का नही है, सीधे सेंटर का है। विना फाइनन्स मिनिस्टर की रजामदी के कुछ नही हो सकता। आजकल फॉरेन एक्सचेंज का जो हाल है, वह तो आप जानते ही है। वडी सख्ती है।"

"इसीलिए तो मैं भी कह रहा हूँ, भूधर वावू मामूली आदमी

जरूर है, लेकिन अभी तक आपने उसकी करामात नहीं देखी। खैर, वह भी देख लीजिए। आपका काम जैसे भी हो, हो जाएगा।"

"हो जाएगा?"

भूधर बाबू ने कहा, "जमीन के मामले में भी आपने कहा था कि काम हो नहीं पाएगा। बाद में हुआ या नहीं? और वह भी सिर्फ साठ हजार रुपये जैसी मामूली रकम खर्च करके।"

"यह तो मैं हजार बार स्वीकार करता हूँ भूधर बाबू, वह काम सिर्फ आप ही की वजह से हो पाया है।"

"वैसे इस काम में भी आपके ज्यादा रुपए खर्च नहीं होंगे, बहुत हुआ तो कुल मिलाकर पांच लाख रुपए।"

शिरीष बाबू ने जैसे निश्चिंत होकर कहा, "अरे, सिर्फ पांच लाख क्या, इम्पोर्ट लाइसेन्स के लिए तो मैं आठ या दस लाख रुपये तक खर्च करने को तैयार हूँ।"

भूधर बाबू ने कहा, "वह तो आप करेंगे ही, अपने नए फाइनेन्स मिनिस्टर ने 'एक्सपेंडीचर टैक्स' हटाकर आप लोगों के लिए रास्ता खोल दिया है। पूरी रकम कैपीटल में जुड़कर इनवेस्टमेंट की मद में चली जाएगी—"

"खैर, आप मुझे खबर कब दे रहे हैं?"

भूधर बाबू ने कहा, "मुझे दो हफ्ते का टाइम दीजिए। दिल्ली का एक चक्कर लगाना पड़ेगा। लौटते ही आपको खबर करूंगा—"

ये बातें शुरू-शुरू की हैं। शिरीष बाबू का घड़ी और ज्वेलरी का कारोबार चल जरूर रहा है, लेकिन सिर्फ नाम के वास्ते। दिल्ली, बम्बई और मद्रास की कई कम्पनियाँ मशहूर हो गईं जिन्होंने शिरीष बाबू का बाजार गिरा दिया। काफी सोचने-समझने के बाद उन्होंने यह रास्ता निकाला।

सोचने लगे—अब बम्बई वालों को 'मानोपॉली' देख लूंगा।

भूधर बाबू ने अपनी बात रखी। शिरीष बाबू ने उनके दिल्ली जाने, दिल्ली में ठहरने और दूसरे खर्चे के लिए भी एक मोटी रकम उनकी जेब में रख दी।

एक दिन दमदम एअरपोर्ट से भूधर बाबू 'कैरेवल' प्लेन में बैठे।

कलकत्ते मे गाडी तो वहुतेरा के पास है, लेकिन यह वात शायद ही कोई जानता होगा कि उसमे लगनेवाला काच कहाँ से आता है। वे नही जानते कि यह काच वम्वई से आता है या दिल्ली से, या कलकत्ते मे ही वनता है ? उनके लिए गाडी का होना ही काफी है। अगर काच टूट भी गया तो गाडी को कारखाने मे छोडकर काम खत्म। विल आने पर चैक भेज दिया जाएगा।

लेकिन शिरीप वावू के दिमाग मे यह आइडिया वहुत पहले आया था। रुपये कमाने के नए-नए आइडिया तो शिरीप वावू के दिमाग मे रात-दिन आते ही रहते ह । देश की आर्थिक व्यवस्था वदलने के साथ ही पैसे कमाने के तरीके भी वदलने पडते है। इसी का नाम विजनेस है।

भूधर वावू सात दिन वाद ही वापस आ गए। वे वडे खुश नजर आ रहे थे।

आते ही वोले, "सारा इन्तजाम कर आया हूँ—"

"लाइसेंस मिल गया ?"

"लाइसेन्स क्या दिल्ली से मिल जाएगा ? पहले यहाँ के आफिस से एनक्वायरी होगी ! लोकल इस्पेक्टर आपकी फैक्टरी इस्पेक्ट करने आएगा। उसकी रिपोर्ट दिल्ली जाएगी, तव कही जाकर लाइसेंस मिल पाएगा।"

"इस्पेक्टर अगर खराव रिपोर्ट लिख दे ?"

"वह ऐसा न कर पाए, इसका इन्तजाम करना पडेगा।"

"यह कौन करेगा ? मेरी फैक्टरी देखकर तो वह अच्छी रिपोट देगा ही नही। मेरी फैक्टरी इतनी अप-टू-डेट कहा है—"

भूधर वावू वोले, "आप जव रुपये खर्च करने के लिए तैयार है तो वह खराव रिपोट क्यो देने लगा ?"

"लेकिन सवाल यह है कि रुपये उसके पास पहुँचें कैसे ?"

भूधर वावू ने कहा, "मैं इसका इन्तजाम भी कर आया हूँ, आप एकदम वेफिक्र रहे। फिलहाल आप मेरे पास एक लाख रुपये छोड दीजिए। जिस-जिसको देना हे, में दूगा। आप सिर्फ एक ऐसा आदमी ठीक कर दे, जो इन्स्पेक्टर के साथ-साथ रहेगा और उस पर पानी चढाता जाएगा—"

"इसके लिए सोचना नही पडेगा। ऐसा आदमी मेरे पास है।"

हा, तो भूधर बाबू काम करनेवाले आदमी ह। किसी को पता भी न लगा और वे न मालूम किस सुरग के रास्ते जाकर किससे क्या इन्तजाम कर आए। दिल्ली की ट्रेड एण्ड कॉमस मिनिस्ट्री की फाइलो मे पता नही, किसने कौन-सी कारस्तानी की और कहाँ-कहा से कैसा जोर लगाया कि किसी को कानाकान खबर तक न हुई।

बस, कुछ ही दिना बाद कलकत्ते के आफिस मे ट्रेड एण्ड कामस मिनिस्ट्री का सील-मुहर वाला अर्जेण्ट लेटर आया। लिखा था, मेसस अमुक कपनी की फैक्टरी का इन्स्पेक्शन करके फौरन रिपोट भेजो।

भूधर बाबू ने शिरीष बाबू को टेलीफोन किया।

"देखिए, मैं बोल रहा हूँ। चिट्ठी आ गई है। आपका आदमी तैयार हे ?"

इधर से शिरीष बाबू ने जवाब दिया, "जी हा, सब रेडी है।"

"तो बुधवार की सुबह आपके यहाँ इन्स्पेक्शन हो रहा है। आप गाडी और आदमी तैयार रखे। फिर जो कुछ करना होगा, मैं करूँगा।"

"ठीक है।"

फोन रखकर शिरीष बाबू ने पुकारा, "गोस्वामी—"

गोस्वामी शिरीष बाबू के आफिस मे काफी जूनियर कमचारी है। जूनियर होते हुए भी वह शिरीष बाबू का विश्वस्त आदमी है। गोस्वामी की तीन पीढिया मे कभी कोई स्कूल या कालेज नही गया। स्कूल या कालेज जाने की उन लोगो को जरूरत भी नही पडी। बिना पढे-लिखे अगर काम चल सकता है, तो फिजूल पढाई के लिए पैसा क्या बरबाद किया जाए ? गोस्वामी जैसे लोग कलकत्ते मे मज से खा-पी रह ह और फल-फूल रहे है, यही इस बात का सबूत है कि आज के जमाने मे पढने-लिखने का कोई आवश्यकता नहीं है। अगर कहते हो कि ऐसा है तो हम बडे आदमी क्यो नही बन गए या हम दूसरे की नौकरी क्या कर रहे है, तो शिरीष बाबू की ओर देखो। शिरीष बाबू ही कौन ज्यादा पढे लिखे ह ? असली चीज तो भाग्य है, भाग्य! तुम्हारे नसीब मे अगर मुसाहबी करना बदा है, तो चाहे कितना ही पढो या लिखो, तुम्हे करनी मुसाहबी ही पडेगी।

गोस्वामी ने शिरीष बाबू के चेम्बर म आकर नमस्कार किया।

शिरीष वाबू ने कहा, "गोस्वामी, याद है, मैने क्या-क्या कहा था ?"

"जी हाँ, अच्छी तरह याद है।"

"इसी बुधवार, यानी पद्रह तारीख को इन्स्पेक्टर आ रहा है। उस दिन जरा साफ कपडे पहनकर आना। समझा गया नही ? बुधवार याद रहेगा न ?"

बुधवार को इन्स्पक्टर के आने पर क्या क्या करना होगा, यह समझकर गोस्वामी वापस अपने सेक्शन मे आ वैठा। गोस्वामी ने पहले भी इस तरह के काम किए हैं। जव कभी कोई इन्स्पेक्टर या खास आदमी आया, मालिक ने उसी को धकेला है। शिरीष वाबू जैसे लोगा की फैक्टरी म इन गोस्वामिया का अस्तित्व एक छोटे से नट या वोल्ट से ज्यादा नही है। लेकिन इन्ही लोगो के भरोसे फैक्टरिया चालू हैं। इन्ही की कृपा से कलकत्ते की सडको पर विजली और नलो मे पानी चालू है। इन्ही लोगा की कृपा से आप लोग अपनी गृहस्थी चला पा रहे हैं। ये ही लोग अँधेरा है, और ये ही लोग उजाला है। इन्ह नौकरी दिये वगैर शिरीष वावुओ की गाडी का पहिया अटक जाएगा। वैसे, शहर मे इनकी हैसियत एक डस्टविन से ज्यादा नही है।

हा, तो अपने सेक्शन मे आकर 'डस्टविन' ने मजे से एक वीडी सुलगायी और बुधवार की कल्पना करते-करते एक कश लगाया। उसके वाद धत् कहकर वीडी फेक दी। अपने पुराने जूते से वीडी को कुचलते हुए गोस्वामी ने चपरासी को आवाज दी।

चपरासी के आते ही गोस्वामी ने कहा, "शक्ति, एक पैकेट सिगरेट तो ले आ, साली वीडी पीने मे अव मजा नही आ रहा है।"

शक्तिपद ने पूछा, "फैन्सी सिगरेट लाऊँ ?"

"जो सवसे अच्छी हो, याने कीमती हो।" कहकर गोस्वामी ने एक मुडा हुआ पाच का नोट शक्ति की ओर फेका।
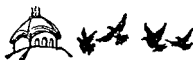
बुधुआ की टोली चौरगी से गुजर रही थी। दायी ओर मेदान था और वायी ओर डामर की चौडी सडक।

बुढ़िया ने पुकारा, "बुधुआ, ऊ काहे का मकान हव ?"

बुधुआ ने मुड़कर देखा ।

"दफ्तर, साहब लोगन का दफ्तर हउए ।"

नजर घुमाते ही उसने देखा, एक गोरा साहब और उसकी मेम खड़े-खड़े उन्हीं लोगों की ओर देख रहे हैं । हाथ में एक काला डब्बा जैसा कुछ है, जिसे आँखों के आगे लगाकर साहब उन लोगों की ओर जैसे निशाना लगा रहा है ।

बुढ़िया ने फिर पूछा, "ऊ आदमी का करत बा ?"

जानकार की तरह बुधुआ ने जवाब दिया, "फोटो खीचत हउए ।"

बुधुआ ने जयचंडीपुर में फोटो खींचते देखा है । कोलियरी के साहब लोग गाड़ी में बैठकर जयचंडीपुर आते और जो दिखलायी देता, उसी का फोटो लेकर चले जाते । खुद बुधुआ ने ही कितनी बार फोटो खिंचवाया है । साहब लोगों के आगे वह नंगे बदन कुदाल कंधे पर रखे खड़ा हो जाता था । अपनी धोती, जो वैसे ही घुटनों तक होती थी, वह जांघों से भी ऊपर चढ़ा लेता था । लाल मुँहवाले साहब लोग फोटो खींचते ।

काले बक्से से 'खिट' की आवाज आते ही बुधुआ आगे बढ़कर हाथ फैला देता—

"हजूर, पैसा—"

बुधुआ जानता था कि मेरा फोटो खींचने पर ये मुझे पैसा देंगे । इसीलिए कहता, "हजूर ! पैसा ।"

गोरा साहब कभी अठन्नी तो कभी चवन्नी उसकी ओर उछालकर अपने दोस्तों के साथ हो-हल्ला करता हुआ चला जाता ।

बकरे को कंधे पर चढ़ाये बुधुआ ने कैमरे की ओर मुंह करके दांत निकाल दिए । फोटो खींचना मिनट भर का काम है, बुधुआ यह बात जानता था । जूडी ने जैसे ही अपनी आंखों के आगे से कैमरा हटाया, बुधुआ ने हाथ फैला दिया, "हजूर, पैसा ।"

साहब और मेम दोनों हँसने लगे । जूडी हॉबसन जानता था कि ये लोग भिखारी हैं । ए रेस ऑफ बेगर्स ! अमेरिका, ब्रिटेन और रूस से भीख मांगकर ये लोग पेट पाल रहे हैं । दिस इज इंडिया, दिस इज बेंगल, दिस इज कैलकटा ।

अचानक एक आवाज सुनकर जूडी ने नजर घुमा ली।

"लुक, लुक, क्लारा—ए प्रोसेशन—"

जुलूस के आगे-आगे बडा सा लाल फेस्टुन था, जिसे दो आदमी सभाले थे। उस पर देशी भाषा मे न जाने क्या लिखा था। भीड के लोग चीख रहे थे।

"ये लोग क्या कह रह है? ह्वाट डु दे से?"

पीछे खडे बॉय ने समझाया। कहा, "ये लोग कह रहे ह इनक्लाव, जिंदावाद—"

"और क्या कह रहे ह?"

जुलूस और भी नजदीक आ गया था।

मुनाफाखोरो को सजा हो।
अनाज के भाव कम हो।
मुख्यमन्त्री जवाव दो।
नही तो गद्दी छोड दो।

जूडी हॉवसन ने झट से अपना कैमरा सँभाल लिया। फोकस ठीक कर एक के वाद एक फोटो लेने लगा। जुलूस काफी वडा था। साऊथ की ओर से आकर नार्थ की ओर जा रहा था।

क्लारा ने पूछा, "ह्वेयर आर दे गाइग जूडी?"

जूडी ने फोटो लेते हुए जवाव दिया, "टुवर्ड्स गवर्नर्स हाऊस। गवर्नर्स हाऊस की ओर।"

"वहाँ जाकर ये लोग क्या करेंगे?"

"दे विल स्क्वाट देयर। रास्ता रोककर वैठ जायँगे।"

"फिर?"

"फिर पुलिस इन लोगो को हटाने के लिए टियर गैस छोडेगी, लाठी चार्ज होगा और जरूरत हुई तो फायरिंग भी होगी—"

"फिर?"

"फिर भीड के लोग गुस्से मे ट्राम और वसो को जला देंगे। जगह-जगह आग लगेगी। कैलकटा विल टर्न इनटु ए वैटलफील्ड।"

क्लारा ने कहा, 'तुम इतना सव कैसे जान गए? तुम क्या पहले कभी कलकत्ते आये थे?"

"नही, अकल ने मुझे यहाँ का सारा हाल बतलाया था। अकल बगाल गवनमेण्ट के मिलिटरी सेक्रेटरी थे न। अकल के जमाने म काग्रेस पार्टी के लोग इसी तरह जलूस और प्रदर्शन किया करते थे। आज जबकि काग्रेस रूलिंग पार्टी है, दूसरी पार्टिया ने वही टैक्टिक्स अपना ली है।"

नीचे सडक पर उस वक्त बडे जोर का शोरगुल हो रहा था। हजारो लोग एक साथ चिल्ला रहे थे—इनक्लाव, जिदावाद ! स्ट्रण्ड होटल की बैलकानी जैसे उस आवाज से गमक रही थी।

ग्लास फैक्टरी के गोस्वामी को कभी-कभी स्ट्रैण्ड होटल आना पडता है। उस दिन उसके कपडे एकदम और ही तरह के होते है। सेलून जाकर दाढी बनवानी पडती है, क्रीम, स्नो और पाऊडर लगाना पडता है। उस दिन गोस्वामी को उसके पडोसी भी नही पहचान पाते।

कहते, "अरे वाह गोस्वामी, तुम्हे तो पहचाना ही नही जा रहा है।"

गोस्वामी कहता "अरे भाई, अपने राम तो हुक्म के बदे है।"

"गाडी भी शायद साहब की ही है ?"

गाडी और उसके ड्राइवर को देखकर ही अदाजा लगाया जा सकता है कि गाडी किसी बडे आदमी की है। मुहल्ले के लोगो ने इसी गोस्वामी को मैले-कुचैले कपडे पहने नगे पाव घूमते देखा है। एक दिन ऐसा था कि उसके पास बाल कटाने के पैसे भी नही थे। हा, गोस्वामी को खाना नसीब हो या न हो, वह बीडी बराबर पीता था। उन दिना इस घर की भाभी या उस घर की मौसी गोस्वामी को इधर-उधर की चीजें लाने के लिए पसे देती थी। किसी को सिनेमा का टिकट चाहिए तो गोस्वामी को पैसा दे देती। गोस्वामी जाकर लाइन मे खडा होता और टिकट लाकर भाभिया मौसिया को देता।

दोपहर के वक्त उन टिकटो को लेकर वे सब सिनेमा देखने जाती। इस काम के बदले गोस्वामी को भी दुअन्नी-चवन्नी मिल जाती थी।

फिर उसी गोस्वामी को एक फैक्टरी मे नौकरी मिल गई। तब उसने शादी का। बाल-बच्चे हुए। पैरो मे अच्छे जूते और बदन पर अच्छे कपडे दिखलाई देने लगे। कभी-कभी बीडी की जगह गोस्वामी को कीमती सिगरेट पीते भी देखा गया।

गोस्वामी कहता, "साहब के काम से बडी-बडी जगह जाना पडता है। बिना अच्छे कपडे पहने काम नही चलता।"

"कहा-कहाँ जाना पडता है?"

"जब जैसा काम पडे। जहाँ हुक्म होता है, वही चला जाता हूँ। कभी-कभी राजभवन भी जाना पडता है।"

राजभवन का नाम सुनकर सभी को हैरत होती। कोई पूछ भी लेता, "राजभवन किसलिए जाना पडता है?"

गोस्वामी फख्र से कहता, "बडे-बडे आदमिया से मुलाकात करनी है तो राजभवन नही जाना पडेगा? अरे तुम लोग हो कहाँ?"

"और कहा जाना पडता है?"

"स्ट्रैण्ड होटल देखा है? देखा नही तो कम से कम नाम सुना है? चौरंगी, पाक स्ट्रीट अरे कहा-कहाँ के नाम गिनाऊँ?"

लोगो को और भी हैरत होती। पूछते, "है, तुम स्ट्रैण्ड होटल के अदर हो आए हो?"

"अदर नही गया तो क्या ऐसे ही कह रहा हूँ?"

"वहा पर तो सुना है, हर कोई शराब पीता है। तुम भी शराब पीते हो?"

गोस्वामी कहता, "तुम लोग भी पूरे गँवार हो। वहा बिना शराब पिए कोई घुसने भी नही देगा। बिना शराब पिए तुम्हे सभ्य आदमी नही माना जाएगा—"

लोगो की हिम्मत बढती। वे लोग भी शराब पीते है। खलासी-टोले या मयूरभज रोड के देशी शराब के ठेके पर जाकर वे लोग चोरी-छिपे कुल्हडो मे शराब पी आते। इसके बाद मसालेदार चने चबाते हुए छाता लगाए निकल जाते। लेकिन खुले आम टबिल पर बैठकर शराब पीना उनके नसीब मे कहा बदा था? उसका मजा कुछ और है।

गोस्वामी कहता, "अरे भाई, मैं क्या वहा अकेले शराव पीता हूँ ? वडे-वडे सरकारी अफसर और विलायती साहवा के साथ बैठकर पाता हूँ।"

'विलायती शराव तो काफी महँगी मिलती होगी ?"

गोस्वामी कहता, "म कौन अपने पैसे से पीता हूँ ? वडे साहव के पैसे से पीता हूँ। यह मोटर जिसकी है, जिसमे बैठकर मैं घूमता हूँ, उसी साहव ने ही मुझे पीना सिखलाया है। साहव कहते ह, गोस्वामी, लो, और थोडी-सी लो।"

"तव तो तुम्हारा साहव वडा भला आदमी है गोस्वामी।"

"अरे, वह आदमी क्या है ? वह तो देवता है, देवता—"

गोस्वामी की वातो मे शक या शुवहा करने की गुजाइश नही थी। नही तो वह इतनी वडी गाडी मे कैसे घूमता है ? सिगरेट कैसे पीता है ? सिगरेट की कीमत क्या कम है ? जव कि कुछ ही दिन पहले यही गोस्वामी मारा-मारा फिरता था। पुरखा का छोडा घर खडहर मान रह गया था। तीन-चार पुश्त पहले किसी ने यह पक्का मकान वनवाया था। तभी तो गोस्वामी को किसी तरह सिर छुपाने की जगह मिल गई थी। यह न होता तो वह क्या करता ?

हरितकी वगान लेन जहाँ से मुडकर विडन स्ट्रीट मे मिल गई है, वही एक मकान के दरवाजे पर जाकर गाडी रुकी।

वगलवाली खिडकी से सुरमा ने मोटर देख ली थी। आवाज दी, "आओ लाला, आओ—"

भावज की ओर देखकर मुस्कराते हुए गोस्वामी ने कहा, "क्या भाभी, भैया कहाँ हे ? पढ रहे है क्या ?"

इस वात का जवाव न देकर सुरमा ने कहा, "तुम्हे तो अव पहचानना ही मुश्किल हो गया है लाला, मजे मे मोटर की सवारी करते फिरते हो—"

"कुछ न कहो भाभी। जिस तरह मेरे विना साहव का काम नही चलता, उसी तरह साहव के विना मेरा काम भी नही चलता। इसी वक्त वडानगर जाना है।"

"क्यो, वडानगर म क्या करना है ?"

"अव क्या वताऊँ ? साहव जिस तरह मोटी तनखाह देता है

उसी तरह तेल भी निकाल लेता है। मेरे विना फैक्टरी चल नही सकती। सब कुछ मुझे ही देखना पडता है। फैक्टरी भले ही साहव की है, लेकिन उसकी कुजी तो मेरे पास है।"

सुरमा गाँव की लडकी है। कलकत्ते आए, उसे सालो हो गए है। सुबह सूरज निकलने से शाम तक बडी उम्मीद को दिल मे छुपाए वह अपनी गिरस्ती सँभाले रहती है। किराए का छोटा सा एक कमरा, सुख का चेहरा देखकर उसका दिल नही भरता। सडक से शोरगुल की आवाज कान मे आती। वाहर जुलूस की आवाज सुनकर खिडकी से झाँककर देखने लगती। कभी-कभी हिम्मत कर दो कदम चलकर मोड तक जाती। आड मे खडी देखा करती, हजारो लोग कतार मे बँधे चले जा रहे है। और चीख रहे है—औरत, मर्द, सब जैसे एक हो गए है।

सभी चिल्ला रहे है—

इनक्लाव!

जिंदावाद!

सुरमा को अच्छा लगता। वैसे इन शब्दो का मतलब ये औरतें नही समझती। आसपास के मकानो से बहुएँ और लडकियाँ तमाशा देखने के लिए निकल आती।

मुनाफाखोरो का सजा हो।
अनाज के भाव कम हो।
मुख्यमत्री जवाव दो।
नही तो गद्दी छोड दो।

पहले कोई वारात गुजरने पर जिस तरह वहू-वेटिया वाहर आती और भीड लगाती थी, अव ठीक उसी तरह जुलस की आवाज सुनकर करती। ओ वावा, औरत-मर्द सव एक साथ चल रहे हैं! सुरमा के लिए यह भी एक नया अनुभव था। शहर मे आने के वाद सुरमा ऐसी वहुत-सी नई-नई वातें देख रही थी। निरजन जिस वक्त ढेर सारी किताबें और कापिया लिए पसीने मे लथपथ घर आता, सडक की वत्तिया जल चुकी होती।

आते ही कहता, 'आज एक मजेदार वात हो गई।"

यह बात जो इस मुहल्ले मे भी हो गई है, वह सुनने से पहले ही निरजन अपनी बात सुनाने के लिए बेचैन हो जाता। कहता, "आज बडी अच्छी चीज देखी—"

"अच्छी चीज ? क्या कोई अच्छी फिल्म देख आए ?"

"तुम भी क्या बात करती हो ! मैं भला सिनेमा देखूगा ? मेरे पास वक्त कहा है ?"—कहकर किताब-कापियो का बडल टेबिल पर रखते हुए उसने कहा—"एक नई किताब का पता लगा है। नई मैनुस्क्रिप्ट ! एक सज्जन के पास है।"

सुरमा की समझ मे कुछ भी नही आ रहा था। उसने पूछा, "वह क्या है ?"

"ताड के पत्तो पर लिखी एक पुरानी पोथी है।"

"ताड का पत्ता ? ताड के पत्तो से क्या करोगे ?"

"वह तुम नही समझोगी। मुझे तो लगा, पोथी बौद्धकाल की है। अगर पोथी असली है तो दुनिया मे तहलका मच जाएगा। समझ पाई ?"

सुरमा की समझ मे फिर भी कुछ न आया। ताड के पत्ते पर लिखी पोथी से दुनिया मे तहलका मच जाने का क्या सम्बन्ध हो सकता है, यह बात किसी भी तरह उसकी समझ मे नही आ रही थी।

उसने पूछा, "क्या सभी लोग उसे खरीदना चाहेगे ?"

निरजन ने कहा, 'जरूर, खबर मिलते ही लोग उस पोथी को खरीदने दौडेंगे, इसीलिए तो मैं किसी से कह नही रहा हूँ।"

"लेकिन वह पोथी खरीदकर लोग क्या करेंगे ?"

"यो समझ लो कि अगर मुझे वह पोथी मिल जाए, तो मै इस बात को सिद्ध कर दूगा कि बगला भाषा दो हजार वर्ष पुरानी है। हरप्रसाद शास्त्री ने नेपाल मे चर्यापदा का आविष्कार किया, तो यह सिद्ध हो गया कि बगला भाषा एक हजार वर्ष पुरानी है। यह पोथी मिल गई, तो मै रिसर्च कर यह साबित कर दूगा कि हरप्रसाद शास्त्री के चर्यापदा से भी पहले, करीब दो हजार साल पहले अफगानिस्तान मे बगला भाषा का अस्तित्व था।"

"इससे क्या होगा ?"

"क्या होगा, समझ नही पा रही हो ? अरे, तब यह साबित हो

जाएगा कि मेरी खोज ही सही है, हरप्रसाद शास्त्री की खोज से भी सही, लेकिन मुश्किल है रुपए की—"

"रुपए की ?"

निरजन ने कहा, 'रुपए होते तो मैनुस्क्रिप्ट खरीद लेता।"

सुरमा को यह वात पसद नही ग्राई। उसने कहा, "उन रद्दी ग्रौर पुराने कागजो को खरीदने से क्या फायदा ? क्या इससे कालेज मे तुम्हारी तनख्वाह् वढेगी ?"

निरजन हँसा, कहा, "तनख्वाह वढना ही क्या सव कुछ है ?"

"नही तो क्या ? तुम कहते क्या हो ? तनख्वाह वढती तो एक ग्रच्छी साडी खरीदती। वहुत दिनो से काजीवरम साडी खरीदने को मन कर रहा है। रुपये नही हैं, इसीलिए तो खरीद नही पा रही हूँ। वगलवाले मकान की मौसी की लडकी ने उस दिन एक ऐसी साडी खरीदी है। देखने मे वडी ग्रच्छी है।"

निरजन ने कहा, "ग्रभी तो उस दिन एक साडी खरीद लाया।"

"वाह ! वह तो धोनेवाली साडी है, काजीवरम कव खरीदी ?"

"लेकिन धोनेखाली साडी तो खराव नही है।"

"वह तो मामूली साडी है, उसे पहनकर कही ग्रा-जा नही सकती। उस दिन भादुडी वावू के यहा शादी मे गई थी। ग्रपनी शादी की पुरानी वनारसी साडी पहनकर गई। मुझे ऐसी शरम ग्रा रही थी कि क्या कहूँ ? मैं ग्रगर खराव साडी पहनती हूँ, तो वदनामी तुम्हारी ही होगी। लोग तुम्ह ही बुरा कहेंगे। लोग तुम्ह ही गरीव कहेंगे—"

निरजन ने कहा, "कहने दो गरीव, मुझे इस वात की कोई शम नही है—"

सुरमा को यह वात लग गई। उसने कहा, "तुम्हे शम न ग्राती हो, लेकिन मुझे ग्राती है। ग्रगर कोई कहे कि हम लोग पैसे न होने से एक साडी तक नही खरीद सकते, तो मुझे वुरा लगता है।"

"क्यो ? कलकत्ते मे गरीव क्या तुम ग्रकेले हो ? इस मुहल्ले मे क्या ग्रौर कोई गरीव नही है ?"

सुरमा ने कहा, "वताग्रो न, हम जैसा गरीव कौन है ? हर एक के पास कितनी साडियाँ ह ! मौसी की लडकी को देखो न, जरा सी

लडकी है, उसकी भी आलमारी मे कुल बत्तीस साडियाँ है। उस दिन उसने दिखाई।"

निरजन इस बात का जवाब दे नही सका। उसकी समझ मे नही आता कि साडी और गहने जैसी मामूली चीज के पीछे लोग इतना पागल क्या होते है। उसने धीरे से कुर्ता उतारकर अरगनी पर टाग दिया। फिर खा-पीकर किताब लेकर बैठ गया। दो हजार वर्ष पुरानी बगला भाषा का नमूना लेकर 'चर्यापद' की भाषा से उसकी तुलना करने की कोशिश करता। क्रियापदो की विविधताओ की तुलना करता। भाषा के व्याकरण मे वह डूब जाता। सधिया मे खो जाता। कारण और विभक्तियो की भीड मे उलझ जाता।

रात को सोने से पहले सुरमा ने पूछा, "तुम क्या रात भर बत्ती जलाए पढते ही रहोगे ?"

निरजन को रात भर जागते रहने मे कोई थकावट नही होती थी। कारक, विभक्ति और सधियो मे दिन-रात डूबे रहना ही उसे अच्छा लगता था। वह कब तक पढता रहता, और सोता था भी या नही, सुरमा को इस बात का पता नही चलता था। सुबह उठकर वह जब अँगीठी सुलगाने जाती, तब निरजन को बात करने की फुरसत नही रहती थी। जल्दी-जल्दी किसी तरह गरमागरम भात निगलकर गोबर-डागा चला जाता। वही उसका कालेज था। उसके चले जाने के बाद सुरमा के पास कोई काम नही रहता था। तब उसकी समझ मे नही आता था कि क्या करे। जरा देर लेट जाती। फिर पडोस की मौसी के पास जाकर गप्प लडाती। बस, गहनो की चर्चा करने लगती। जब उससे भी मन ऊब जाता, तो खिडकी के पास आकर बैठ जाती। कभी एक-दो आदमी गुजरते नजर आते। उसी मे उसको विचित्रता का अनुभव होता। किसी-किसी दिन जुलूस निकलता तो जैसे और अच्छा लगता। जुलूसो के सारे नारे उसे मुहजबानी याद हो गए थे।

मुनाफाखोरो को सजा हो।
अनाज के भाव कम हो।
मुख्यमत्री जवाब दो।
नही तो गद्दी छोड दो।

फिर अचानक किसी दिन गोस्वामी भी अपने साहव की वडी गाडी मे चढकर चला आता, तो वह जैसे खिल उठती। खिडकी मे वैठे-वैठे ही पूछती, "क्यो लाला, आज कहाँ चले ?"

गोस्वामी कहता, "आज जरा होटल जाना है भाभी—"

"होटल ! होटल मे क्या होगा लाला ? आज घर पर खाना नही वना क्या ?"

"अरे, घर मे तो चावल-दाल रोज ही पकती है, लेकिन मै होटल मे खाने नही जा रहा हूँ, खिलाने जा रहा हूँ। साहव के वडे-वडे मेहमान आनेवाले ह।"

'लाला, तुम वाकई मजे मे हो।"

"मजे मे क्या हूँ भाभी, नौकरी के लिए सव करना पडता है। जो मालिक खाने को देता है, उसका हुक्म भी वजा लाना पडता है।"

सुरमा ने कहा, "इसमे तुम्हारा अपना पैसा खर्च नही होता ?"

"नही भाभी, सव मालिक के खर्चे पर। आज के खच के लिए मालिक ने पाच सौ रुपये दिए है, यह देखो—"

गोस्वामी ने जेव से सौ-सौ के पाच नोट निकाले।

नोटो को वापस जेव मे रखते हुए गोस्वामी ने कहा, "इन रुपयो को खर्च करने के लिए किसी को कैफियत नही देनी पडेगी। मर्जी के मुताविक खच कर सकता हूँ।"

"सचमुच तुम मजे मे हो। मैं भी अगर तुम्हारी तरह मद होती तो ऐसी ही कोई नौकरी करती। इस एक कोठरी मे वद रहते-रहते तो मेरा दम घुटने लगता है—"

गोस्वामी हँसा। कहा, "कहो तो किसी दिन तुम्हे भी ले जा सकता हूँ, घूम आना—"

"मुझे ! तुम्हारा साहव कुछ नही कहेगा ?"

गोस्वामी ने कहा, "साहव को पता ही कहाँ चल पाएगा ! जहा कहो, घुमा लाऊँ। दूर-दूर की सैर करा लाऊँ। चन्दननगर, राची, हजारीवाग—जहा कहो—चलोगी ?"

सुरमा ने कुछ सोचते हुए कहा, "तम्हारे भैया के कालेज चले जाने के वाद अगर चला जाय तो कैसा रहगा ?"

"हा हाँ, जव कहो—"

"इसके बाद तुम्हारे भैया को लौटते-लौटते तो रात के नौ बजते हैं, तब तक वापस आ ही जायेंगे—"

"बिलकुल ठीक है भाभी! बोलो, कब चलना है?"

"जिस दिन तुम्हें सुविधा हो।" फिर आवाज को जरा धीमी करके कहा, "लेकिन किसी को पता न चले।"

"तुम भी कैसी बातें करती हो भाभी?"

शिरीष बाबू की फैक्टरी में काम करते गोस्वामी को साला गुजर चुके हैं। कौन-सी बात किससे करनी चाहिए, उसे अच्छी तरह मालूम है। ये घरेलू लड़कियाँ शुरू-शुरू में जरा घबड़ाती हैं। लेकिन एक तरह से यह अच्छा ही है। लोग ऐसी ही लड़कियाँ ज्यादा पसंद करते हैं। एकदम बाजारू होने से शिरीष बाबू का काम नहीं निकल सकता।

गोस्वामी को देर हो रही थी। सुरमा से वादा करके वह चला गया।
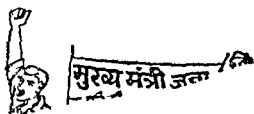
पहले बहुत पहले ये लोग इंडिया को बैकवर्ड कंट्री कहा करते थे। इससे इंडिया के दिल को ठेस पहुँचती थी। इंडिया इसमें अपनी बेइज्जती समझता था। बाद में उसका नाम बदलकर रखा गया अंडरडेवेलप्ड कंट्री। लेकिन यह भी बात जमी नहीं। इंडियना के मन में अंदर ही अंदर यह बात खटकने लगी। उन्होंने कहा, नहीं हजूर, हम अब आजाद हो चुके हैं, हम अब रोल्स रॉयस पर सवारी करते हैं, हमारे एम्बेसेडर दुनिया के हर देश में जाकर बाबूगीरी में सबका मुकाबला कर रहे हैं। इस पर भी तुम लोग हमें नीची नजर से क्या देख रहे हो? यह नाम बदल डालो।

इसके बाद नया नामकरण हुआ 'डेवेलपिंग कंट्री' याने विकास की ओर अग्रसर होता देश। विकास और अग्रसर ऐसे शब्द हैं, जिससे

इज्जत बढ जाती है, लेकिन तुम्हे रुपया उधार लेना ही होगा। रातो रात हमारा ब्लॉक छोडकर तुम अगर रूस के सामने हाथ फैलाना चाहो, तो यह नही हो सकता।

इन्होने कहा, 'जी हाँ हुजूर, तब हम लोग अपने को आजाद कैसे समझें ?"

ह्वाइट हाऊस ने कहा, "ठीक है, तब एक काम करो। हम जो पाऊडर मिल्क देंगे, गेहूँ देंगे, चावल देंगे, उसके बदले मे तुम्हे ऊँची दर पर सूद देना पडेगा।"

'जी, यह कैसे हो सकता है, हम तो वैसे ही काफी गरीब है।"

"वाह, यह भी खूब रही, उधार भी चाहिए और सूद भी नही दोगे, यह कैसे हो सकता है ? अच्छा, एक काम करो, अपने वित्तमत्री को एक बार हमारे यहाँ भेजो। उससे सलाह-मशविरा करके देखें, क्या किया जा सकता है। वे यहाँ पर आयेंगे। वह हमारे स्टट-गेस्ट होगे। बातचीत के बाद जो समझौता होगा, उस पर तुम्हारे वित्तमत्री दस्तखत कर देंगे।"

हाँ, तो यही से शुरुआत हुई। 'ह्वाइट-हाउस' के तत्कालीन भाग्य-विधाता प्रेसिडेंट आइजनहॉवर से परामर्श करने इडिया के तत्कालीन वित्तमत्री मोरारजी देसाई गए। वह कॉन्फ्रेन्स बडी ही गोपनीय थी। किसी भी बाहरी आदमी के कानो मे बात जाने पर विपत्ति की आशका थी। इस तरह की डिप्लोमैटिक मीटिंग्स हमेशा बडी गोपनीय ही हुआ करती हैं। सिर्फ इटरनेशनल सलाह-मशविरा ही नही, कलकत्ते मे होने वाले सारे सलाह-मशविरा भी गोपनीय हुआ करते हैं। इटरनेशनल ग्लास फैक्टरी के मालिक शिरीप बाबू और 'भद्रकाली मिष्टान्न भडार' के मालिक दिलीप बेरा के बीच जो सलाह-मशविरा होता है, वह भी कॉन्फीडेंशियल है।

दिलीप बेरा ने पूछा था, "शिरीप बाबू, आप हारान नस्कर लेन की ओर गए थे क्या ?"

शिरीप बाबू ने कहा, "अरे नही भाई, तुम्हारे कहने से गया जरूर था, मैंने भी सोचा था, पार्टी अच्छी है, लेकिन नही—"

"नही माने ?"

"यही कि इतने रुपये बेकार ही गए। माल एकदम बेकार है, एक-

एक हड्डी दिखलाई दे रही थी। मैं गया था दिल वहलाने, लेकिन वहा जाकर देखता हूँ, एक काली-कलूटी मरियल-सी औरत बैठी कोई धार्मिक किताव पढ रही है—"

दिलीप वेरा हैरान रह गया। उसने कहा, "धार्मिक किताव? आप कहते क्या है?"

"और क्या? पूछा था, क्या पढ रही हो? उसने जवाव दिया—श्रीकान्त की जीवनी पढ रही हूँ। श्रीकान्त कोई सत होगा। यानी कोई धार्मिक उपदेश की पुस्तक! देखते ही तबीयत खट्टी हो गई।"

दिलीप ने कहा, "लेकिन उसकी तो एक जवान वहन है, वह नही आई? उससे आपका परिचय नही कराया?"

"कतई नही। मैंने कई वार कहा भी, अपनी सिस्टर से परिचय करा दीजिए। इस पर जानते हो, क्या कहा? कह दिया कि मेरी वहन कालेज गई है—"

"रात के वक्त कालेज?"

"अव यह कौन पूछता है? लेकिन तुमने जैसा करने को कहा था, मैने वैसा ही किया। रवडी मिलती नही है, तुम्हे आर्डर देकर स्पेशल रवडी वनाकर उसकी अधी वूढी मा के लिए ले गया था। लेकिन सव वेकार गया।"

दिलीप ने कहा, "फिर क्या हुआ, वही कहिए?"

"फिर क्या करता, वापस घर चला आया। तुम्हारे कहने से वहा चला गया था, नही तो मैं ऐसी फालतू जगहों में कभी नही जाता। तुम्ही ने तो कहा था कि वेचारा गरीव है, गरीवी के मारे भूखो मरन की नौवत आ गई है। वहन की शादी तक नही कर पा रहा है, तुम्ही ने तो रिकॉमड किया था—

दिलीप वेरा ने कहा, "फिर आप चले आए?"

"नहीं, मै क्या ऐसे ही छोड देनेवाला आदमी हू? मै भी मौके की तलाश मे लगा रहा। मेरे यहाँ गोस्वामी नाम का एक आदमी है, जानते हो न उसे? उसी को इस काम मे लगा दिया। उससे कह दिया, तुम जरा पता लगाकर तो देखो गोस्वामी,

यह लडकी कहाँ जाती है, किस कालेज मे पढती है, किसके साथ घूमती है, इतनी रात गए तक कहाँ रहती है।"

"फिर ?"

"सव कुछ पता लग गया। कालेज-वालेज सव वेकार की गप्प है। वह किराए पर जाती है।"

"यह कैसा ?"

"एक दिन स्ट्रैण्ड होटल गया था। वह भी वहाँ मौजूद थी। पहले एक वार देखा ही था। फौरन पहचान गया। मैने पूछा—आप ही का नाम सुसीमा देवी है ? कहते ही मुझ पर गुर्राने लगी। समझ गए, एकदम गुर्राने लगी।"

'अच्छा ! फिर आपने क्या किया ?"

शिरीप वावू ने कहा "सव कुछ साफ हो गया।"

"क्या साफ हो गया ?"

"साथ मे एक यग मैन था, समझ गया कि गाडी किराए पर चल रही है। फिर कुछ नही वोला, चुप रह गया। इसके वाद अपनी इज्जत अपने साथ लिए वापस चला आया। होटल मे ही कही कोई स्कैंडल न खडा हो जाए यही सोचकर मैने कुछ नही कहा।"

दिलीप वेरा ने कहा, "शिरीप वावू, आप बुरा न मानें, मैं सव ठीक कर दूगा। चावी तो मेरे ही पास है। घर के खर्चे के लिए रुपया कम पडने पर मेरे पास ही हाथ फैलाना पडेगा, तव समझ लूगा आप जरा भी चिंता न करें।"

शिरीप वावू चिंता- फिक्र करनेवाले आदमी भी नही थे। कल-कत्ते मे वैठे-वैठे दिल्ली, वम्वई और मद्रास म कारोवार चला रहे थे। यहाँ की इटरनेशनल ग्लास फैक्टरी के ग्लास मे शराव ढालकर दिल्ली का गुजराती व्यापारी सारी दुनिया को मतवाला वना देने का ख्वाव देख रहा है। वही शिरीप वावू वगाली है तो क्या हुआ, वेकार मे चिंता-फिक्र के झमेले म पडकर रात की नीद खराव करनेवाले आदमी नही हैं। गोस्वामी को एक वार इशारा कर देना ही काफी है। वह अपना काम करके ही सास लेता है।

उस दिन भी सुसी सिनेमा देखकर निकल रही थी। दस रुपये घट

पर जो लडकियां कलकत्ते मे किराए पर चलती ह, वे और चाह जा कुछ करें, इतने सस्ते प्यार मे नही फँसती ।

उस दिन वेणु दी न एक पजाबी लडके का साथ कर दिया था। सूरत देखकर सुसी जैसी लडकियां समझ जाती ह कि किसके पास पैसा है और किसकी जेब खाली है ।

वेणु दी ने कह दिया था, 'ज्यादा नखरे न दिखाना बेटी, लडका अभी नया-नया इस लाइन मे आया है, भडक गया तो फिर कभी तेरे पास नही फटकेगा ।"

सुसी ने कहा था, 'मुझे करना क्या होगा, तुम्ही कह दो ।"
वेणु दी ने कहा था "मैं क्या कहूँगी बेटी, तू खुद समझदार है, मर्दों को कैसे वश म किया जाता है, तुझे नही मालूम ?"

"लेकिन वेणु दी, तुम तो अच्छी तरह जानती हो कि मैं किसी के साथ सोती नही हूँ—"

"अरे, तो तुझसे सोने को कौन कह रहा है ? मर्द जरा-सा प्यार-दुलार चाहते है। पैसा खर्च करेगा, और तू जरा सूखी मुहब्बत भी नही दिखलाएगी ?"

सुसी ने पूछा था, "क्या करना होगा, यह तो बतलाओ ।"

वेणु दी ने कहा था, "तुझे समझाते-समझाते मैं हार गई। यह क्या कोई गणित का सवाल है कि तुझे समझा दू ? छोकरे के पास अपनी गाडी है, गाडी मे बैठाकर अगर लेक या गगा किनारे ले जाए तो ना-नही मत करना। कोई अँधेरी-सी जगह देखकर दोना बैठ जाना, जरा सटकर, फिर बातें करना, और क्या ! इतना भी नही कर पाएगी तो जमीन और घर कैसे होगा ?"

हा, तो सुसी उसी प्रस्ताव पर राजी हुई थी। सन्तोष अरोरा शक्ल-सूरत से अच्छा-खासा नौजवान था। चडीगढ मे पढाई-लिखाई पूरी करने के बाद बाप का मोटर पाटस् का कारोबार सम्हालने कलकत्ते आया था। हजारो का कारोबार था। सतोष अरोरा चाहने पर सुसी के लिए जिदगी भर के खाने-पहनने का इतजाम कर सकता । सिफ खाने का ही नही, और भी बहुत-कुछ। "रासबिहारी एवेन्यू के पास जो जमीन दिखलाई थी न वह अपनी

ही है। इस तरह और भी न जाने कितनी जमीनें कलकत्ते में पडी हे। चाहूँ तो तुम्हे दे सकता हूँ।"

"मुझे दोगे ?"

सतोष अरोरा ने कहा, "तुम्हारे लिए सब कुछ कर सकता हूँ। और क्या चाहिए, बोलो ?"

अरोरा की बात सुनकर सुसी पिघल गई थी। उसने कहा था, 'और कुछ नही चाहिए, मै इतने दिनो से रुपये जमा कर रही हूँ जिससे थोडी-सी जमीन खरीदकर छोटा-सा घर बनवा सकू।"

"तुम्हारे घर मे और कौन-कौन ह ?"

यह सवाल सुनकर सुसी को पहले तो शक हुआ। अक्सर इस धधे मे ऐसे सवाल नही पूछे जाते। लेकिन यह इतनी जमीन का मालिक है, इसे नाराज करना शायद ठीक नही होगा।

उसने कहा, "बूढी माँ ह, लेकिन ज्यादा दिन जिंदा नही रहेगी। उन्ह आखो से दिखाई भी नही देता।"

"और कोई नही है ?"

'नही।"

सामने बसें और ट्रामे थी। इनसान थे, दूकानें थी। गाडियाँ थी और ये रिक्शे। सभी का उद्देश्य एक था। थोडा-सा आश्रय चाहिए। सिर छपाने की जरा-सी जगह! वह मिल जाए तो फिर क्या है! तब सुसी निश्चित होकर शादी करेगी। एक गाडी खरीद लेगी और इसी तरह गाडी मे बैठकर दोनो सैर करने निकला करेगे। किसी प्रकार की कोई चिंता नही रहेगी। चलो, साडी खरीद लाएँ, सिनेमा देख आएँ। या चलो, आज बाहर खाना खा आएँ। किसी होटल मे ही चला जाए। फिर किसी दिन ग्राड ट्रक रोड से हजारीबाग, या राची या और किसी जगह चला जाए। फिर तो सारा आसमान हमारी मुठ्ठी मे होगा और सारी जिन्दगी हमारी जेब मे!

"सच-सच कहो न, यह जमीन क्या तुम्हारी है ?"

"सच नही तो क्या झूठ बोल रहा हूँ ?"

'कितनी कीमत लोगे, मेरे लिए रेट कुछ कम नही होगा ?"

सतोष अरोरा ने कहा, तुमसे क्या दाम लूगा ?"

"अरे जाओ, क्या बेकार मे मजाक कर रहे हो ? सच-सच कहो न।"

गाडी तब तक दायी ओर घूमकर अँधेरे मे आ गई थी।

"मुझे ऐसे ही जमीन दे देने से तुम्हारे पिताजी कुछ नही कहेगे ?"

"पिताजी ?"

सतोष अरोरा ने जोर का एक ठहाका लगाया। "पिताजी जिंदा होते तो क्या इस तरह मजे मे घूम-फिर सकता था ? क्या तुम सोचती हो मेरे पिताजी जिंदा है ? सारी प्रापर्टी का मालिक अब मै हूँ। जमीन, मकान, बिजनेस, सब कुछ अब मेरा है। चाहू तो रात भर म सारी दुनिया खरीद सकता हूँ।"

सतोष ने एक हाथ से स्टीयरिंग सम्हाला और दूसरा सुसी की कमर मे।

"डार्लिंग, माई स्वीट डार्लिंग—"

गौरैया की तरह सुसी सतोष की छाती से चिपक गई। जरा और भी सटकर बैठा जा सकता तो शायद अच्छा रहता। और भी नजदीक। लाखो लाख रुपये के मालिक के जितने नजदीक रहा जाए उतना ही अच्छा है। उसमे निश्चितता है। किसी प्रकार का कोई डर नही, किसी प्रकार की चिंता नही। लाखो लाख रुपये म एक तरह की गर्मी होती है। सिर के ऊपर छत होने की गर्मी, बैंक के पास बुक मे मोटी रकम होने की गर्मी, चारो ओर चार दीवारें और सामने छोटा सा बगीचा होने की गर्मी। इस तरह की गर्मी मे नीद आती है। जिस तरह अमीर लोग परो की बढिया रजाई मे आराम से सोते है। फिर वसी नीद से जागने पर रहती है सुबह की चाय। बिस्तरे पर पैर फैलाकर हलकी नीद की खुमारी मे बैठे-बैठे चाय पीने मे भी एक मजा है।

इसके बाद कलकत्ता और भी अँधेरा हो गया। दुनिया और भी सिमट आई। आसमान और भी नीचे झुक आया। लेक के पानी के किनारे शहर जैसे और भी वीरान हो गया, जीवन और भी नीरव हो चला, यौवन और भी उच्छल हो उठा।

"कौन ?"

अचानक टार्च की रोशनी पडी।

पल भर मे जस किसी ने सुसी को आसमान से धक्का देकर नीच जमीन पर ला पटका हा। रजाई की आरामदेह गर्मी से बाहर की बफ पर। सुसी ने जल्दी-जल्दी अपने कपडे ठीक किए।

जल्दी से सतोप के पास से खिसक आई ।

"आप लोगो को थाने तक चलना होगा ।"

सफेद वर्दी मे एक पुलिस इस्पेक्टर था और उसके साथ एक कास्टेबिल । जैसे अँधेरे में धरती फाडकर दोनो निकल आए हो। सुसी ने सतोप के कान मे धीमे से कहा, "इन लोगा को कुछ रुपए दे दो—"

सतोप जात का पजाबी था । उसने निडर होकर कहा, "क्यो, हमने ऐसा कौन-सा काम किया है कि घूस देनी पडेगी ? ये लोग हमे किस लिए पकडने आए ह ?"

"चलिए, थाने पर चलिए ।"

सतोप अकड गया । उसने कहा, "क्यों, हमने क्या किया है ?"

"पब्लिक न्यूसेंस कर रहे थे । 'इम्मॉरल ट्रैफिक ऐक्ट' के अन्तर्गत हम आपको गिरफ्तार कर रहे ह ।"

"ठीक है, थाने पर ही चलते हे ।" सतोप ने सीना फुलाकर और भी अकड के साथ कहा ।

सुसी ने करीब-करीब रोते हुए कहा, "पाँच रुपये दे क्या नही देते ? तुम्हारे पास क्या रुपए नही ह ?"

"बेकार रुपए खराब करने से क्या फायदा ? पुलिसवाले जो कहेगे, वही करना होगा क्या ?"

सुसी ने कहा, "हमे पकडकर ये थाने ले जाएँगे । वात फैन जाएगी—"

तब तक इस्पेक्टर और कास्टेबिल गाडी मे बैठ चुके थे । गाडी का दरवाजा बद करते हुए इस्पेक्टर ने कहा, "चलिए, गाडी स्टाट करिए—"

सतोप ने गाडी स्टाट कर दी । सुसी आचल मे चेहरा छिपाकर सुबकने लगी । सुसी के साथ कलकत्ते की रातो का अधकार भी सुब-कने लगा । अरे, तुममे से कोई कुछ कहते क्या नही ? कोई विरोध क्यो नही करते ? मे अब कैसे मुह दिखाऊँगी ? सारी दुनिया को पता चल जाएगा कि मै अपना शरीर बेचती हूँ ! हर कोई मेरे मुँह पर कालिख पोतेगा ! मे कही की नही रहूँगी । ओफ् !

गाडी तब तक दायी ग्रार घूमकर ग्रँधेरे मे ग्रा गई थी।

'मुझे ऐसे ही जमीन दे देने से तुम्हारे पिताजी कुछ नही कहग ?"

'पिताजी ?"

सतोष ग्ररोरा ने जार का एक ठहाका लगाया। 'पिताजी जिदा होते तो क्या इस तरह मजे मे घूम-फिर सकता था ? क्या तुम सोचती हो मेरे पिताजी जिदा ह ? सारी प्रापर्टी का मालिक ग्रब मैं हूँ। जमीन, मकान, बिजनेस, सब कुछ ग्रब मेरा है। चाहूँ तो रात भर म सारी दुनिया खरीद सकता हूँ।"

सतोष ने एक हाथ से स्टीयरिंग सम्हाला ग्रौर दूसरा सुसी की कमर मे।

"डालिंग, माई स्वीट डालिंग—"

गौरैया की तरह सुसी सतोष की छाती से चिपक गई। जरा ग्रौर भी सटकर बैठा जा सकता तो शायद ग्रच्छा रहता। ग्रौर भी नजदीक। लाखो लाख रुपये के मालिक के जितने नजदीक रहा जाए उतना ही ग्रच्छा है। उसमे निश्चितता है। किसी प्रकार का कोई डर नही, किसी प्रकार की चिता नही। लाखा लाख रुपये म एक तरह की गर्मी हाती है। सिर के ऊपर छत होने की गर्मी, बैंक के पास बुक मे मोटी रकम होने की गर्मी, चारा ग्रोर चार दीवारें ग्रौर सामने छोटा सा बगीचा होने की गर्मी। इस तरह की गर्मी मे नीद ग्राती है। जिस तरह ग्रमीर लाग परो की बढिया रजाई म ग्राराम से सोते ह। फिर वैसी नीद से जागने पर रहती है सुबह की चाय। बिस्तरे पर पैर फलाकर हलकी नीद की खुमारी मे बैठे-बैठे चाय पीने मे भी एक मजा है।

इसके बाद कलकत्ता ग्रौर भी ग्रँधेरा हो गया। दुनिया ग्रौर भी सिमट ग्राई। ग्रासमान ग्रौर भी नीचे झुक ग्राया। लेक के पानी के किनारे शहर जैसे ग्रौर भी वीरान हा गया, जीवन ग्रौर भी नीरव हो चला, यौवन ग्रौर भी उच्छल हो उठा।

"कौन ?"

ग्रचानक टार्च की रोशनी पडी।

पल भर म जैसे किसी ने सुसी को ग्रासमान से धक्का देकर नीचे जमीन पर ला पटका हो। रजाई की ग्रारामदेह गर्मी से बाहर की बर्फ पर। सुसी ने जल्दी-जल्दी ग्रपने कपडे ठीक किए।

जल्दी से सतोप के पास से खिसक आई ।

"आप लोगो को थाने तक चलना होगा ।"

सफेद वर्दी मे एक पुलिस इस्पक्टर था और उसके साथ एक कास्टेविल । जैसे अँधेरे म धरती फाडकर दोनो निकल आए हो। सुसी ने सतोप के कान मे धीमे से कहा, 'इन लोगा को कुछ रुपए दे दो—"

सतोप जात का पजावी था । उसने निडर होकर कहा, "क्यो, हमने ऐसा कौन-सा काम किया है कि घूस देनी पडेगी ? ये लोग हमे किस लिए पकडने आए ह ?"

"चलिए, थाने पर चलिए ।"

सतोप अकड गया । उसने कहा, "क्या, हमने क्या किया है ?"

"पब्लिक न्यूसेंस कर रहे थे । 'इम्मॉरल ट्रैफिक ऐक्ट' के अन्तगत हम आपको गिरफ्तार कर रहे है ।"

"ठीक है, थाने पर ही चलते ह ।" सतोप ने सीना फुलाकर और भी अकड के साथ कहा ।

सुसी ने करीव-करीव रोते हुए कहा, "पाच रुपये दे क्या नही देते ? तुम्हारे पास क्या रुपए नही ह ?"

"वेकार रुपए खराव करने से क्या फायदा ? पुलिसवाले जो कहेगे, वही करना होगा क्या ? '

सुसी ने कहा, "हमे पकडकर ये थाने ले जाएँगे। वात फैल जाएगी—'

तव तक इस्पेक्टर और कास्टेविल गाडी मे वैठ चुके थे । गाडी का दरवाजा वद करते हुए इस्पेक्टर ने कहा, "चलिए, गाडी स्टाट करिए—"

सतोप ने गाडी स्टाट कर दी । सुसी आचल मे चेहरा छिपाकर सुवकने लगी । सुसी के साथ कलकत्ते की रातो का अधकार भी सुवकने लगा । अरे, तुममे से कोई कुछ कहते क्यो नही ? कोई विरोध क्या नही करते ? मैं अव कैसे मुँह दिखाऊँगी ? सारी दुनिया को पता चल जाएगा कि मैं अपना शरीर वेचती हूँ ! हर कोई मेरे मुँह पर कालिख पोतेगा ! मैं कही की नही रहूगी । ओफ् !

गाड़ी तब तक दायी ओर घूमकर अँधेरे म आ गई थी।

"मुझे ऐसे ही जमीन दे देने से तुम्हारे पिताजी कुछ नही कहगे ?"

'पिताजी ?"

सतोप अरोरा ने जोर का एक ठहाका लगाया। "पिताजी जिंदा होते तो क्या इस तरह मजे मे घूम-फिर सकता था ? क्या तुम सोचती हो मेरे पिताजी जिंदा ह ? सारी प्रापर्टी का मालिक अब मैं हूँ। जमीन, मकान, बिजनेस, सब कुछ अब मेरा है। चाहूँ तो रात भर म सारी दुनिया खरीद सकता हूँ।"

सतोप ने एक हाथ से स्टीयरिंग सम्हाला और दूसरा सुसी की कमर मे।

"डार्लिंग, माई स्वीट डार्लिंग—"

गौरैया की तरह सुसी सतोप की छाती से चिपक गई। जरा और भी सटकर बैठा जा सकता तो शायद अच्छा रहता। और भी नजदीक। लाखो लाख रुपये के मालिक के जितने नजदीक रहा जाए उतना ही अच्छा है। उसमे निश्चितता है। किसी प्रकार का कोई डर नही, किसी प्रकार की चिंता नही। लाखो लाख रुपये म एक तरह की गर्मी होती है। सिर के ऊपर छत होने की गर्मी, बैंक के पास बुक मे मोटी रकम होने की गर्मी, चारा ओर चार दीवारें और सामने छोटा सा बगीचा होने की गर्मी। इस तरह की गर्मी मे नीद आती है। जिस तरह अमीर लोग परो की बढिया रजाई मे आराम से सोते ह। फिर वैसी नीद मे जागने पर रहती है सुबह की चाय। बिस्तरे पर पैर फैलाकर हलकी नीद की खुमारी मे बैठे-बैठे चाय पीने मे भी एक मजा है।

इसके बाद कलकत्ता और भी अँधेरा हो गया। दुनिया और भी सिमट आई। आसमान और भी नीचे झुक आया। लेक के पानी के किनार शहर जसे और भी बीरान हो गया, जीवन और भी नीरव हो चला, यौवन और भी उच्छल हो उठा।

"कौन ?"

अचानक टार्च की रोशनी पडी।

पल भर मे जैसे किसी ने सुसी को आसमान से धक्का देकर नीचे जमीन पर ला पटका हो। रजाई की आरामदेह गर्मी से बाहर की बर्फ पर। सुसी ने जल्दी-जल्दी अपने कपड़े ठीक किए।

जल्दी से सतोष के पास से खिसक आई।

"आप लोगो को थाने तक चलना होगा।"

सफेद वर्दी मे एक पुलिस इस्पेक्टर था और उसके साथ एक कास्टेबिल। जैसे अँधेरे मे धरती फाडकर दोनो निकल आए हो। सुसी ने सतोष के कान मे धीमे से कहा, 'इन लोगो को कुछ रुपए दे दो—"

सतोष जात का पजाबी था। उसने निडर होकर कहा, "क्यो, हमने ऐसा कौन-सा काम किया है कि घूस देनी पडेगी ? ये लोग हमे किस लिए पकडने आए ह ?"

"चलिए, थाने पर चलिए।"

सतोष अकड गया। उसने कहा, "क्यो, हमने क्या किया है ?"

"पब्लिक न्यूसेंस कर रहे थे। 'इम्मॉरल ट्रैफिक ऐक्ट' के अन्तगत हम आपको गिरफ्तार कर रह हे।"

"ठीक है, थाने पर ही चलते है।" सतोष ने सीना फुलाकर और भी अकड के साथ कहा।

सुसी ने करीब-करीब रोते हुए कहा, "पाच रुपये दे क्यो नही देते ? तुम्हारे पास क्या रुपए नही हे ?"

"बेकार रुपए खराब करने से क्या फायदा ? पुलिसवाले जो कहगे, वही करना होगा क्या ?"

सुसी ने कहा, "हमे पकडकर ये थाने ले जाएँगे। बात फैन जाएगी—'

तब तक इस्पक्टर और कास्टेबिल गाडी मे बैठ चुके थे। गाडी का दरवाजा बद करते हुए इस्पक्टर ने कहा, "चलिए, गाडी स्टाट करिए—"

सतोष ने गाडी स्टाट कर दी। सुसी आचल मे चेहरा छिपाकर सुबकने लगी। सुसी के साथ कलकत्ते की रातो का अधकार भी सुबकने लगा। अरे, तुममे से कोई कुछ कहते क्यो नही ? कोई विरोध क्यो नही करते ? मैं अब कैसे मुंह दिखाऊँगी ? सारी दुनिया को पता चल जाएगा कि म अपना शरीर बेचती हूँ! हर कोई मरे मुह पर कालिख पोतेगा! मै कही की नही रहूँगी। ओफ्!
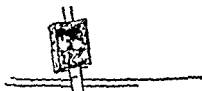
"इनक्लाव !"

"जिन्दाबाद !"

जलूस काफी आगे बढ गया था। यादवपुर से गडियाहाट और गडियाहाट से रासविहारी एवेन्यू। सडक के दोना ओर के मकानो स लोग देख रहे थे। चिलचिलाती धूप। अरविन्द को बडे जोर की प्यास लगने लगी। उसने एक बार कलुआ फटिक की ओर देखा। कलुआ फटिक के चेहरे पर किसी तरह की थकान नही थी। ये लाग अक्सर पडोस की चाय की दूकान म बैठे सारे दिन बैठकबाजी करते रहते ह। बैठे-बैठे आती-जाती लडकियो को पैनी निगाह से ताका करते। लेकिन आज वे बेकार नही ह। आज उनको बढिया-सा काम मिला था। यह काम मिल जाने से वे बहुत खुश थे। इसलिए वह सब कुछ भूलकर बराबर चिल्लाए जा रहे ह—इ नक्लाव, जिन्दाबाद—

उस दिन रात को दरवाजे पर पुलिस देखकर अरविन्द को जितना डर नही लगा, उससे कही ज्यादा डर गई थी उसकी माँ।

मा ने पूछा, "सुसी का पुलिस ने क्यो पकड लिया है बेटा ? उसने क्या किया था ? मेरी लडकी तो कोई ऐसा-वैसा काम कर नही सकती—"

अरविन्द को अच्छी तरह याद है, उस आधीरात को पुलिसवाला क साथ उसे थाने पर जाना पडा था। सुसी दोनो हाथो से चेहरा छिपाए रो रही थी। शायद शम के मारे ही किसी को अपना चेहरा नही दिखा पा रही थी।

अरविन्द ने पूछा था, "लेकिन मेरी बहन ने ऐसा कौन-सा काम किया है सर ?"

थानेदार ने कहा था, "क्या किया था, यह अपनी बहन से ही पूछिए न ! सामने ही तो है। भले आदमियो की लडकियो ने तो आज-कल रडियो को भी मात कर दिया है !"

अरविन्द ने कहा था, लेकिन हम लोगो को तो कुछ भी पता नही था—"

"जब कोर्ट मे केस होगा तब अपने आप पता चल जाएगा !"

"कोर्ट मे केस होगा ?"

"नही होगा ? हम लोग आखिर हैं किसलिए ? भले घर के लोग लेक घूमने जाते है, वही यह सब ! अब जाकर आप अपनी बहन के लिए जमानत का इतजाम कीजिए, नही तो आपकी बहन को सारी रात यही हवालत मे रहना पडेगा—"

जमानत आखिर देता भी कौन ? अरविन्द भागता-भागता दिलीप बेरा के घर पहुँचा। दिलीप बेरा पैसेवाला आदमी था। पहले तो उसने अरविन्द को खूब डाटा। कहा "मैंने कितनी बार कहा था कि अपनी बहन पर नजर रख, उसका चाल-चलन ठीक नही है, तब तो सुना नही, अब भुगत बैठकर !"

अरविन्द ने गिडगिडाते हुए कहा, "तुम्हे छोडकर मेरा कौन है दिलीप दा ? सिर्फ अब की बार मुझे बचा लो—"

उधर उस रात उसी वक्त गोस्वामी शिरीष बाबू के घर पहुँचा।

"क्या खबर है गोस्वामी ?"

गोस्वामी को इन्ही सब कामो के लिए 'इटरनेशनल ग्लास फैक्टरी' मे काम मिला था। मालिक को कब कौन-सा काम पड जाए, इसके लिए वह डिसपैच सेक्शन मे चुपचाप हाथ समेटे बैठा रहता था। उसके लिए कोई काम नही रहता, तो वह बडा मायूस हो जाता। लेकिन जैसे ही शिरीष बाबू का बुलावा आता, उसमे मानो नई जान आ जाती। वह पियून को बुलाकर उससे कहता, "शक्ति, एक पैकेट सिगरेट तो ले आ—"

उस दिन शिरीष बाबू ने इसी तरह का एक काम उसे सौपा था। कहा था, "गाडी लेकर एक जगह जा सकता है, गोस्वामी ?"

गोस्वामी ने कहा था, "जा क्यो नही सकता सर ? कहा जाना होगा ?"

"हारान नस्कर लेन पहचानता है ?"

"नही भी जानता, तो खोज निकालूगा, आप काम बताइए !"

"वहाँ सात नम्बर मकान से एक लडकी रोजाना दोपहर को हाथ

मे कॉपी और किताब लिए निकलती है, उसका पीछा करना—देखना, कहाँ जाती है, क्या करती है।"

"इसके बाद क्या करना होगा ? उसे होटल मे लाना होगा ?"

"तू रहा गधा ही ! उसे पकडवा देना है—"

"इसके माने ?"

शिरीष बाबू झल्ला उठे। मालिक के नाराज होने पर गोस्वामी बडा मायूस हो जाता है।

शिरीष बाबू ने कहा, "उसे पुलिस के हाथो गिरफ्तार करा देना है—एक दिन ट्रैण्ड होटल मे मेरा अपमान किया था।"

शिरीष बाबू को और ज्यादा नही बतलाना पडा। इसके बाद गोस्वामी कब चुपचाप हारान नस्कर लेन गया, कब उसने सुसी को देखा, कब उसका पीछा करना शुरू किया, किसी का पता नही चला। इसी बीच एक-दो बार खाने के लिए अपने घर हरितकी बगान लेन आना पडा। आते वक्त उसने देखा, भाभी उसी तरह खिडकी के पास खडी है।

सुरमा ने कहा, "क्या बात है लाला, आजकल गाडी लेकर काफी भाग-दौड मे लगे हो। कोई खास काम है। क्या ?"

"हा भाभी, जरूरी काम आ पडा है—"

'होटल मे चले क्या ?"

"नही, अभी हारान नस्कर लेन से आ रहा हू, वहाँ से भवानीपुर बेलतला रोड जाऊँगा। उसके बाद फिर थाने—"

"थाने ? पुलिसवाले थाने ? तुम्हारा थाने से भी काम पडता है क्या ?"

गोस्वामी के पास उन दिनो इन बातो का जवाब देने की फुरसत नही थी। घर आता, झटपट कुछ पेट मे डालकर फिर निकल जाता। कई दिन खोजने के बाद एक लडका मिला। जात का पजाबी था। चेहरा काफी चटकदार था। नाम था सतोष अरोरा। बेचारा बे-रोजगार था। उसे ही वेणु दी के घर भेजा गया। टेलीफोन पर सब तय हो गया था। गाडी खुद ड्राइव करके जाएगा, कहेगा बेशुमार दौलत का मालिक हूँ। पिताजी मर गए है। सुनकर सुसी खुश होगी। साथ ही थाने मे भी बातचीत कर रखी थी। सिनेमा देखकर जब दोनो

निकलेंगे, तव गोस्वामी पीछे एक दूसरी गाडी मे रहेगा। पुलिसवाले भी तैयार रहगे। सतोष गाडी लेकर लेक के किसी सुनसान कोने मे पहुँचेगा। इसके जरा देर वाद ही पुलिस के लोग वहाँ पहुँचकर टॉच की रोशनी गाडी के अदर फेकेंगे।

रोशनी देखते ही सतोष चौककर कहेगा—कौन ?

और साथ ही साथ पुलिसवाले दोनो को गिरफ्तार कर थाने ले जाएँगे। तव पता लगेगा !

शिरीष वावू ने सव सुना। फिर पूछा, "किसी ने उस लडकी के लिए जमानत भरी ?"

"जी हा सर !"

"किसने ?"

"जी, भद्रकाली मिष्टान्न भडार का दिलीप वेरा उसे जमानत देकर छुडा लाया है।"

शिरीष वावू ने और कुछ नही सुना। उन्होने कहा, "ठीक है, अव तुम जाओ—"

कहकर उन्होने टेलीफान उठाया, "कौन ? दिलीप ?"

उस ओर से दिलीप वेरा की आवाज सुनाई दी, "कौन ? शिरीष वावू है क्या ?"

"हाँ, कह रहा था कि आखिर तुमने ही जमानत दी ?"

दिलीप ने कहा, "क्या करता शिरीष वावू, वेचारा वडा रो रहा था। काफी सवक मिल गया, अव वेचारे को माफ कर दीजिए। मैंने उससे साफ कह दिया है कि तुम्हारी वहन का चाल-चलन ठीक नही है, उससे जरा सम्हलकर चलने को कहना—"

"क्या कहा उसने ?"

दिलीप वेरा ने कहा, "कहेगा क्या वेचारा, उसकी वहन कौन उसके वश मे है ! आजकल जमाना ही कुछ ऐसा वदल गया है, नही तो भला, आप जैसे भले आदमी को कोई वेइज्जत कर सकता है ?"

शिरीष वावू ने कहा, 'उसे एक वार मेरे पास भेज देना एक वात कहनी है—"

"वहुत अच्छा, वहुत अच्छा शिरीष वावू, अरविन्द इस वक्त यहाँ

मेरे सामने ही खडा है। मैं कल ही उसे आपके पास जाने को कह देता हूँ।"

शिरीष बाबू ने टेलीफोन रख दिया।

लेकिन अरविन्द ने स्वप्न मे भी नही सोचा था कि दूसरे दिन शिरीष बाबू उसके साथ इस तरह बातें करेंगे।

शिरीष बाबू ने कहा, "आप असल मे करते क्या हं अरविन्द बाबू ?"

एक दिन इस अरविन्द ने ही शिरीष बाबू को घर ले जाकर अपने सोनेवाले कमरे मे बैठाया और अपनी पत्नी से उनका परिचय कराया। माँ के लिए यही शिरीष बाबू एक किलो रबडी ले गए थे। उस दिन और आज के दिन मे बहुत फर्क है। तब बात जैसे बराबरी की थी!

अरविन्द को अच्छी तरह याद है, शिरीष बाबू के चले जाने पर गोपा बडी मायूस हो गई थी। रात को सात नम्बर मे खाना-पीना खत्म करने के बाद अरविन्द आठ नम्बर मे आकर तकिए मे मुँह छिपा कर लेट गया था।

अरविन्द को देखकर गोपा को बडा दुख हुआ था।

उसने कहा था, "मुझसे नाराज हो ?"

अरविन्द से कोई जवाब न पाकर गोपा ने हाथ से उसे ठेलकर दुबारा पूछा था, "सच-सच कहो न, मुझसे नाराज हो ?"

अरविन्द ने फिर भी कोई जवाब नही दिया था।

गोपा ने कहा था, "लेकिन तुम्ही बतलाओ, मै कर भी क्या सकती हूँ ? मुझे अगर कोई पसन्द नही करता, तो इसमें मेरा क्या दोष ? मेरी सूरत अच्छी नही है, यह भी क्या मेरा दोष है ?"

अरविन्द ने फिर भी कोई जवाब नही दिया था।

"आज अगर मुझसे ज्यादा खूबसूरत बीवी तुम्हारी होतो तो शायद तुम्हे जरा भी सोचना नही पडता। उस बीवी की बदौलत तुम्हारा मकान बनता, गाडी आती और भी सब कुछ होता! लेकिन क्या करूँ, यह बतलाओ। भगवान ने मेरे जो ये खपच्ची जसे हाथ-पैर बना दिए है, शरीर मे मास नही दिया है, रग भी साफ नही दिया है और मुझे देखकर कोई भी पसन्द नही करता, तो मैं क्या करू, तुम्ही बतलाओ न ?"

अरविन्द ने इस पर भी कोई जवाव नही दिया।

इसके वाद गोपा फफक-फफककर रोने लगी। जो औरत घर के किसी भी काम न आई जो अपने पति को किसी भी तरह का सुख न दे पाई, उसके लिए रोना छोडकर और चारा ही क्या है ? उसी तरह सुवकते हुए उसने कहा, "तुम वोलते क्या नही, कहो न इसमे मेरी क्या गलती है ?"

इसके वाद अरविन्द अपने को रोक नही पाया।

गुस्से से भरकर उसने उसका झोटा पकडकर विस्तर से उठाया और कहा, "निकल यहाँ से, चल निकल मेरे घर से।"

उस दिन उसे गोपा पर वडे जोर का गुस्सा आया था। कान के पास लगातार इस तरह टॅं-टॅं करने पर आदमी कहा तक अपने को रोक सकता है ? उस पर इधर कई दिना से हाथ मे पैसा नही था। दो महीने से घर का किराया नही दे पाया। उसे सचमुच ही होश नही था। माँ के लिए रवडी और अफीम का इन्तजाम करना ही होगा। सुसी से किसी तरह को मदद की आशा करना वेकार है। मद होकर पैदा हुआ है, तो जैसे यह भी अरविन्द की गलती है। इस पर जरा देर पहले ही शिरीप वावू नाखुश होकर चले गए हैं।

गुस्से मे आदमी किस कदर नीच हो जाता है, अरविन्द ने उस दिन जैसे इस वात का सवूत सामने रख दिया। उसने गोपा को सचमुच घर से वाहर निकाल दिया था।

कहा था, "कह रहा हूँ कि जरा देर सो लेने दो, लेकिन यह है कि सोने ही नही देती, टॅं-टॅं लगा रखी है—जा, अव निकल यहा से—"

गोपा वेचारी उस अँधेरी गली मे खडी-खडी सिसकती रही। खुल कर अच्छी तरह से रो भी नही सकती थी।

अरविन्द ने गोपा को वाहर गली मे निकालकर अपनी आख-कान-नाक वद किए सोने की कोशिश की थी। लेकिन हजार हो, वह भी आखिर इनसान था। उस रात वह सो नही पाया। काफी देर तक कोशिश करने के वाद भी जव नीद नही आई, तो पता नही क्या सोच-कर वह दरवाजा खोलकर वाहर आया। लेकिन वाहर आकर देखा, गोपा वहाँ नही थी।

शिरीष बाबू कहानी सुन रहे थे। उन्होंने कहा, "है! नही मिली? कहा चली गई?"

अरविन्द ने कहा, "कह नही सकता, हारान नस्कर लेन की पूरी गली छान आया, लेकिन कही भी नही मिली।"

"फिर क्या हुआ? आखिर वह कहा मिली?"

अरविंद ने कहा, "दूसरे दिन सुबह आयी। पडोस मे लालचद बाबू की बीवी के पास जाकर सो गई थी।"

"लेकिन उन लोगो ने कुछ पूछा नही?"

"उन लोगो को मालूम है कि हम मिया-बीवी मे इसी तरह खट-पट हुआ करती है—"

शिरीष बाबू ने सब बडे ध्यान से सुना। इसके बाद जेब मे हाथ डालकर जितने रुपए थे, सब बाहर निकाले। एक-दो करके दस-दस रुपए के दस नोट निकालकर अरविन्द की ओर बढाए, फिर कहा, "यह रखिए, पत्नी गृहलक्ष्मी होती है। उसके साथ झगडा नही करना चाहिए। ठीक है अब जाइए आपको इसीलिए बुलवाया था।"

एक साथ इतने रुपए पाकर अरविन्द जैसे गद्गद हो गया। जल्दी से टेबल के नीचे सिर घुसाकर उसने शिरीष बाबू के पैरो की धूल लेकर माथे से लगाई।

"अरे! यह क्या कर रहे है? यह क्या कर रहे ह?" कहकर शिरीष बाबू ने पाव हटा लिए। लेकिन अरविन्द ने नही छोडा।

उसने कहा, "ठीक है, लेकिन इस गरीब को याद रखिएगा।"

शिरीष बाबू ने कहा ' वह सब ठीक है, लेकिन अपनी पत्नी के खाने-पीने का ख्याल रखिएगा। उसे जरा गोश्त खिलाइए, घी खिलाइए दूध पिलाइए। रुपए मैने इसीलिए दिए है—"

अरविन्द ने कहा "लेकिन चीजो के दाम इस कदर बढ गए है कि चावल-दाल खरीदने मे ही सारा पैसा खर्च हो जाता है। कुछ बचता ही नही है।"

"आपकी बहन भी तो है, जो कालेज मे पढती है, उसका भी तो खर्च होगा?"

"जी हा, वह सब भी मुझे जुटाना पडता है। मै अकेला इतना बोझ कैसे सम्हाल सकता हूँ?"

शिरीष वावू ने अचानक कहा, "लेकिन उसका अपना भी तो रोजगार है।"

अरविन्द की समझ मे नही आ रहा था कि क्या कहे। थोडी देर तक वह चुप खडा रहा। इसके वाद उसने कहा, "आप अगर एक वार मेरे यहाँ आएँ तो मुझे वडी खुशी होगी। मा आपको याद कर रही थी।"

"मा के लिए रवडी मिल रही है न ?"

"नही।"

"तव दिलीप वेरा किस लिए है ? वह आपकी मा के लिए रवडी का इतजाम नही कर सकता ? उसकी तो दूकान है भद्रकाली मिष्टान भडार।"

अरविन्द ने कहा, 'आप दया करके अगर एक दिन पधारें तो माँ को वडी खुशी होगी।"

'लेकिन रवडी ? दिलीप वेरा रवडी क्यो नही देता ?"

अरविन्द ने कहा, "रवडी वनाना तो आजकल गैरकानूनी हो गया है, दिलीप दा क्या कर सकते है ?"

"क्या, आज कानूनी काम कौन-सा हो रहा है ? आपकी मा के लिए कितने किलो रवडी चाहिए, कहिए न ! अगर दिलीप नही दे सकता है तो मै इतजाम करूगा। यह भी कोई वात हुई ? च्च्-च्च् ! वुढापे का शरीर है, बेचारी आँखो से देख नही पाती। जरा अफीम की आदत पड गई है, तो क्या रवडी उन्हे नही मिलेगी ? फिर हम लोग है किस लिए ? ठीक है मै रवडी लेकर ही आपके घर आऊँगा।"

"कव आ रहे है ? मैं घर ही पर रहूँगा। सुमी को भी घर पर रहने के लिए कह दूगा।"

शिरीष वावू ने कहा, "इसके लिए मैं आपके पास ठीक समय पर पहले से खवर भिजवा दूगा।"

उस दिन घर पहुँचते ही अरविन्द सीधे माँ के पास गया। पैरो की आहट पाते ही माँ ने कहा, 'कौन ? अरविन्द है क्या ?"

"मा, अव तुम्हारी रवडी की तकलीफ मैं मिटाकर ही रहूँगा।"

मा ने कहा, "मुझे नही खानी रवडी, अव यह अफीम भी छोड

दूगी। जव आखें ही चली गइं, तो इस मुए नशे के लिए तुझे रुपए खर्च करने की जरूरत नही है।"

"मेरे पास खर्च करने को रुपए ही कहाँ है! शिरीष वावू की याद हैं न, उस दिन आए थे? याद है, उन शिरीष वावू की?"

"शिरीष वावू कौन?"

"अरे वही, मेरा दोस्त, जिसके पास तीन-तीन मोटरें है। जिसन उस दिन आकर तुम्हारे पैर छुए थे और एक किलो रवडी दे गया था। याद नही आया? तुम्हे रवडी खाने को नही मिली है, सुनकर वेचारा हाय-हाय करने लगा। कह रहा था, च्च्-च्च्, नशे के लिए आपकी मा को रवडी तक नही मिल रही है! आपने मुझे क्यो नही वतलाया? आपको कितनी रवडी चाहिए? कितने किलो?"

सुनकर माँ अफसोस जाहिर करने लगी, "जुग-जुग जिए तुम्हारा दोस्त, जुग-जुग जिए। खूव फले-फूले। मुझ मरी को तो मौत भी नही आती, मौत भी नही आती।"

अरविन्द ने कहा, "फिर वही वात? मरना और मरना! आखिर म किसलिए हूँ?"

मा ने कहा, 'तू मेरे लिए परेशान मत हो वेटा, मुझे चश्मा भी नही चाहिए, रवडी भी नही चाहिए, इससे तो तू सुसी के लिए काई लडका देखकर उसके हाथ पीले कर दे, मैं चैन से मर सकूगी।"

अपने सिर पर हाथ रखकर मा अफसोस करने वैठ गई।

अपने कमरे मे आकर अरविंद ने गोपा से पूछा, "सुसी कहाँ है?"

गोपा ने कहा, "कही गई है।"

"फिर गई है?"

अरविंद को गुस्सा आ गया। अभी कुछ दिन पहले थाने से छुडाकर लाया हूँ और दो दिन जाते न जाते फिर चली गई?—"किस वक्त गई?"

गोपा ने कहा, "कव गई? क्या मुझे कहकर गई है कि मुझे पता होगा! आज तक क्या कभी वह मुझसे कहकर गई है, जो मुझसे पूछ रहे हो?"

"लेकिन तुम्हारा मिजाज इतना गरम क्या हो रहा है? इतना विगड क्या रही हो?"

गोपा ने कहा, "जब देखो मेरा ही दोष, सारे दिन खटने के बाद अगर कुछ कहा तो उसमे भी दोष ! क्यो, अपनी वहन से तो कुछ भी नही कहते ? मेरा सबसे बडा गुनाह तो तुम्हारे साथ शादी होना है। मुझसे अब घर का धंधा नहीं होगा, कह देती हूँ। यह घर है, या भूतो का डेरा ? वह तो यारो के साथ लेक के अँधेरे मे लीला रचाए और मैं सुबह-सुबह उठकर नौकरानी की तरह खटने लगू और खाना पकाऊँ। मुझसे यह सब नही होगा। कह देती हूँ।"

अरविन्द का खून भी खौलने लगा। उसने कहा, "नही करोगी माने ?"

"माने मुझसे यह सब नही होगा।"

अरविन्द एकाएक चिल्लाया, "नही करोगी क्या ?"

"नही, मुझसे नही होगा।"

"फिर !"

"हाँ, हाँ, एक बार नहीं, हजार बार कहूँगी—मुझसे नही होगा, नही होगा।"

तड से गोपा के गाल पर एक तमाचा पडा। गोपा के मुह से 'अरी मैया', आवाज निकली धीरे से। फिर वह खामोश हो गई।

और साथ ही अदर से माँ की आवाज आई, "अरे, क्या हुआ रे ? किसे डाँट रहा है ? किससे क्या कह रहा है, अरविन्द ?"

अरविन्द तब तक घर से निकलकर हारान नस्कर लेन पार करने के बाद सडक की भीड मे मिलकर अपने को बचा पाया।

जूडी हॉबसन का अकल जब बगाल के गवनर का मिलिटरी सेक्रेटरी था, कलकत्ते के समाज म तभी से घुन लग गई थी। सिर्फ मनुष्य-समाज मे ही नही, सारे देश मे ही घुन लग गई थी। और तभी से शुरू हुआ मिलावट और नकली माल का जमाना। चावल म मिलावट, दाल मे मिलावट से लेकर मिलावट जसे इनसान की गीढ़ तक जाकर लगी।

उस दिन सुबह से ही सुसी घर मे नही थी।

मा कह रही थी, "अरविन्द, सुसी कहा है ? अभी तक सो रही है क्या ?"

लेकिन नही, अरविन्द कमरे मे देख आया, गोपा भी देख आई। वह कही भी नही थी। उसकी सारी चीजें मौजूद थी। तब क्या वह भाग गई ? जमानत की आसामी क्या आखिर भाग गई ? जमानत दिलीप दा ने दी थी, वह क्या कहगे ? दिलीप दा बेचारे खद थाने तक जाकर जमानत देकर छुडा लाए थे।

मा ने कहा, "वह आखिर गई कहाँ ?"

अरविन्द का दिमाग काबू मे नही था। पिछले दिन वहू को पीटा था। मिजाज वैसे ही बिगडा हुआ था, उसके बाद यह बखेडा।

दिन चढा। अँगीठी सुलगी। अरविन्द ने खुद ही अपने लिए चाय बनाई और माँ को दी। और दिन अरविन्द इस वक्त गृहस्थी का कोई न कोई काम करता था। बहू के काम मे हाथ बटाने के लिए आगन मे झाडू लगाता, चहबच्चा साफ करता या कपडे धो डालता। अपने कपडो मे साबुन लगाता। धूप मे सुखाने के बाद उनमे इस्त्री करता। यह सब करते-करते ग्यारह बज जाते। इसके बाद थैली लेकर सब्जी खरीदने निकलता। इतनी देर मे बाजार करीब-करीब खाली हो जाता था। लेकिन सब्जियो का दाम कुछ कम होता। बचा-खुचा माल होने की वजह से जरा सस्ता मिल जाता। व्यापारी लौटने की जल्दी मे होते।

आधा किलो तुरई, या एक किलो परवर से ही थैला भर जाता। खरीदारी करने के बाद ही जाता दिलीप बेरा की दूकान 'भद्रकाली मिष्टान्न भडार'।

लेकिन उस दिन और किसी काम मे मन नही लगा।

मा अलग पुकार रही थी, "अरे अरविन्द, किधर गया ? तू क्या कर रहा है ?"

कोई जवाब नही।

"अरविन्द, ओ अरविन्द ! बहू, अरी बहू ! कहा गए सबके सब ?"

कहती हुई मा अपनी जगह से उठी। बुढिया की आखा मे अँधेरा जसे और भी गाढा हो आया। सुबह के वक्त उसे इतना अँधेरा नही दिखलाई देता था। चलते-चलते न जाने किस चीज की ठोकर लगने से वह गिर पडी।

"अरी, मैया री—"

एक चीख के साथ सारी दुनिया जैसे अँधेरी हो गई। न कोई सुन पाया, न कोई देख पाया, न कोई सहारा देने ही आया। जब वह सधवा थी, एक दिन अरविन्द के बाप ने इस मकान को किराए पर लिया था। तब आखे थी, बदन मे ताकत भी थी। रात-दिन एक करने के बाद कही जाकर लडके-लडकी को पाल-पोसकर बडा किया। खुद ही रसोई पकाती, खुद ही गृहस्थी के दूसरे काम सम्हालती, खुद ही खर्च देखती। इसके बाद एक दिन अरविन्द का बाप मर गया। अरविन्द उन दिनो छोटा था, सुसी तो और भी छोटी थी। इन दोनो को गोद मे लिए ही वह गृहस्थी के समुद्र मे कूद पडी। सोचा था लडका है, वही देख-सुन लेगा। घर सम्हल जाएगा। लेकिन क्या से क्या हो गया! धीरे-धीरे आँखो ने जवाब देना शुरू कर दिया। लडका-लडकी दोनो बडे हुए। अरविन्द की शादी की। एक के बाद एक, कई नारियाँ अरविन्द ने की, लेकिन एक भी नही रही। [illegible], लेकिन फिर वह न जाने कहाँ से नौकरी ढूँढ निकालता। लेकिन उसके बाद ? एक दिन ऑफिस जाना बद कर दिया। लेकिन वह घर कैसे चला रहा है, मा यह भी नही जानती थी। पता नही, कहाँ से आकर किसी दिन कोई रबडी की हँडिया दे जाता। पता नही, कौन आकर बुढिया के पाँव छूता। मा किसी को भी नही पहचानती। किसी से पूछती भी नही कहा से और कैसे घर का खर्च चलता है। यह गृहस्थी चल रही है या नही, यह जानने का कौतूहल भी जैसे उसका खतम हो गया था।

"दिलीप दा!"

"क्या बात है, अरविन्द?"

अरविन्द के चेहरे की तरफ देखकर दिलीप [illegible] क्या डर-सा लगा। अरविन्द [illegible] भी आता, [illegible] साफ-सुथरा [illegible]।

"दिलीप दा, [illegible] नहीं [illegible]?"

"क्यो ? आज क्या तुझे भी रेस का शौक लगा है ?"

अरविन्द ने कहा, "नही, रेस खेलनी नही है। सिर्फ साथ चलता।"

"लेकिन रेस इस वक्त कहाँ हो रही है, वह तो दोपहर को होगी।"

"ठीक है, मैं बैठा हूँ। वाद मे साथ ही मैदान चलगे।"

अरविन्द की वात सुनकर दिलीप वेरा को वडा अजीव लगा। उसने कहा, "तुझे आखिर हुआ क्या है ? वहू की तवीयत ठीक नही है या माँ का वात का दद वढ गया है ? कुछ रुपये की जरूरत है ?"

अरविन्द ने कहा "नही।"

"तव वतला न, आखिर वात क्या है ?"

अरविन्द ने कहा, "रेस के वाद तो तुम 'वार' मे जाओगे न ?"

"अगर जाऊँ भी तो तुझे क्या ?"

अरविन्द ने कहा, "आज जरा-सी मुझे भी दिलवा दो न दिलीप दा, आज खूव पीने की तवीयत हो रही है।"

दिलीप वेरा ने सीधा होकर बैठते हुए कहा, "आखिर तुझे हुआ क्या है ?"

"जी भरकर पीने को जी कर रहा है, आज जरा-सी शराव पिलवाओगे ? रुपये होते तो मैं खुद ही खरीदकर पीता। लेकिन शराव तो वडी महँगी चीज है, मे कैसे खरीदू आज शराव पीकर नशे मे डूव जाने को जी कर रहा है। ऐसा नशा कि कभी भी न उतरे। दिन-रात हर वक्त उस नशे की खुमारी मे ही डूवा रहूँ।"

दिलीप वेरा ने डपटते हुए कहा, "पागलपन छोडकर यह वतला कि तुझे आखिर हुआ क्या है, सच-सच वतला !"

"सुसी भाग गई है।"

"भाग गई माने ? तू कह क्या रहा है ? मैं ही तो उसे जमानत देकर थाने से छुडाकर लाया !"

"तो मैं क्या करूँ ? तुम उसे छुडा क्या लाए ? तुमने उसकी जमानत क्यो भरी ? उसे थाने मे ही क्या नही रहने दिया ? उसे फासी की सजा क्या नही दिलवाई ? अव तुम्ही वतलाओ, मै क्या करूँ ? मैं थाने जाऊँ ? वहा जाकर इस्पेक्टर से कहू कि मेरी वहन भाग गई है ? कहूँ कि उसके वदले मे मुझे गिरफ्तार कर लो, जेल मे डाल दो ? जाकर कहूँ कि मुझे फासी पर चढा दो ?"

दिलीप वेरा थोडी देर तक अरविंद की ओर देखता रहा।

फिर कहा, "तूने चाय पी है ?"

"चाय कहाँ से पीता ? उठकर सीधा चला आ रहा हू। कल वहू को भी खूव पीटा है। जवान लडा रही थी, ऐसा तमाचा मारा है कि उसके गाल पर निशान पड गया है।"

"अच्छा, ले चाय पी।"

दिलीप वेरा ने अरविंद की ओर चाय का प्याला वढाते हुए कहा।

अरविंद जल्दी-जल्दी चाय पीने लगा। उसने कहा, "मैं तो यहा वैठा मजे से चाय पी रहा हूँ, लेकिन गोपा वेचारी क्या कर रही होगी, भगवान ही जाने।"

"थैली लेकर आया है, सब्जी लेने जा रहा है ?"

"इसकी आदत पड गई है। घर से निकलते वक्त थैली साथ लेकर ही निकलता हूँ।"

"तव, यह ले, रुपये ले। तरकारी-वरकारी लेकर घर जा। अरे, खाना तो पडेगा ही ! तुझे और भी कुछ रुपये देता, लेकिन मेरा धधा ही साला चौपट हो गया है। अव तू जा, वेकार देर क्यो करता है ?"

"लेकिन शराव ?"

दिलीप वेरा ने डपटकर कहा, "पिलाऊँगा, पिलऊँगा तुझे। पहले सामान लेकर घर जा, वाद मे देखा जाएगा।"

इसके वाद अरविंद उठ खडा हुआ। उसने कहा, "तुम हो, इसी लिए किसी तरह दिन कट रहे है, लेकिन अव मुझसे नही होता। अच्छा एक वात पूछता हूँ दिलीप दा, इस तरह आखिर कितने दिन चलेगा ?"

'नौकरी तू करता नही, कोई धधा भी शुरू नही करता, इसमे कसूर किसका है, मेरा ?"

अरविंद ने कहा, 'जान-वूझकर भी ऐसी वात कर रहे हो दिलीप दा ? तुम्हारे दोस्त शिरीष वावू चाह तो क्या मुझे कोई नौकरी नही दिला सकते ? सिर्फ शिरीष वावू ही क्यो, तुम्हारे तो और भी कितने ही दोस्त है, कोई एक नौकरी नही दिला सकता ? सभी क्या मेरी वहन को चाहेगे ? मेरी वहन अगर न होती, तो क्या कोई मेरी मा के

लिए रवडी लाता ? वहन के विना क्या मैं फाका करता ? आज सुर्मा घर से भाग गई है, इसके वाद क्या मेरे घर कोई नही आएगा ?"

इसके वाद जरा मुस्ताकर कहा, "तुम धधे की वात कर रहे हो, धधा क्या मने नही किया ? इनश्योरेंस की दलाली, वनियाना की दूकान, इसके अलावा भी एक भले घर का लडका जो काम कभी नही करता, वह भी मैंने किया। फिर भी कसूर क्या सिर्फ मेरा ही है ? धधा अगर नही चला, तो वह भी क्या मेरा ही कसूर है ? हर किसी को उधार माल चाहिए, मागो तो भी कोई पैसा नही देता, इसके लिए भी क्या मैं ही जिम्मेदार हूँ ?"

'लेकिन दुनिया का हर आदमी किसी न किसी तरह कमाकर खा रहा है, फिर तू ही क्या कुछ नही कर पाता ?"

सुनकर अरविंद जरा देर खामोश रहा। फिर उसने कहा, 'तुम जान-बूझकर भी ऐसा कह रहे हो ? सव लोगो का नाम तो ले लिया, लेकिन तुम्हे क्या मालूम नही है कि सामनेवाली उस चाय की दूकान पर कितने पढे-लिखे वेकार वैठे-वैठे सारा दिन चाय पीते हैं और वीडी फूकते है ? वे लोग क्या मेरी तरह नही है ? उनके वारे मे कौन सोचता है ?"

दिलीप वेरा ने कहा, "देख रहा हूँ, आजकल तू कम्युनिस्टो की तरह वातें करने लगा है।'

"इसीलिए तो कह रहा हूँ कि दादा एक दिन पेट भरकर पिला दो, इतनी पिला दो कि सव कुछ भूल जाऊँ। घर-गृहस्थी, वहू, वहन और माँ, सवको भूलकर नशे मे धुत्त हो जाऊँ।"

दिलीप वेरा इस पर एक तरह से धकेलते हुए अरविंद को दरवाजे से वाहर ले आया। फिर वोला, "जा, अभी घर जा।"

"लेकिन तुम कोई भरोसा क्या नही देते ?"

"भरोसा किस वात का ?"

"यही कि वहन के चले जाने पर खाऊँगा क्या ?"

दिलीप वेरा जैसे चौक उठा। उसने पूछा, "क्या, वहन क्या तुझे धधा करके खिलाती थी ?"

"नही, यह वात नही है, लेकिन मैं तो उस वहन को ही दिखलाकर कमाता था।"

दिलीप वेरा ने कहा, "ओह, तो वात यह हे। वहन के चले जान का दुख नही है। उसके न रहने पर तू किसको दिखाकर पैसा कमाएगा, दुख इस वात का है।"

अरविन्द ने कहा, "तुम तो सव जानते हो दिलीप दा, तुमसे क्या छिपा है ? मेरी वीवी अगर देखने मे अच्छी होती तो मुझे किस वात की फिक्र थी !"

"अच्छा, वक-वक न कर।"

कहकर धक्का देकर दिलीप वेरा ने अरविन्द को जवदस्ती वाहर निकाल दिया और दरवाजा वद कर लिया। इसके वाद हिसाव की वही लेकर वैठ गया। दिलीप वेरा हिसाव का काम घर पर ही करता है। हिसाव मे काफी कारसाजी करनी पडती हे। दो-तीन अलग-अलग वहियाँ वनानी पडती है। यह काम खुद किए विना नही चलता। आजकल वाहरी आदमी पर हिसाव-किताव छोडना खतरे का काम हे। जमाना वडा खराव है ! दिलीप वेरा मन ही मन वुदवुदाया—सचमुच, जमाना वडा खराव आ गया है।
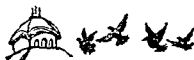
इसके वाद इडिया के फाइनन्स मिनिस्टर मोरारजी देसाई अमेरिका के ह्वाइट हाऊस मे हाजिर हुए। प्रेसिडेंट आइजनहावर के साथ काफी देर तक मशविरा हुआ।

"कैलकटा ? लेकिन पी० एल० फोर एट्टी के करोडा रुपये अगर कलकत्ते पर खच किए जाएँ तो योर एक्सेलेंसी, इन्फ्लेशन हो जाएगा। वगाल मे रुपये की वाढ आ जाएगी।"

प्रेसिडेंट ने कहा, "लेकिन कैलक्टा वॉर्डर-स्टेट जो है ! पास ही चायना है, वहाँ से पूरे देश मे रेजिमेंटशन हो जाएगा। कैलकटा जव तक अनहेल्दी रहेगा, जव तक गरीव रहेगा, जव तक असतुष्ट रहेगा, तव तक चायना क्या उसका पूरा-पूरा फायदा नही उठाएगा ?"

ह्वाइट हाउस म इसी तरह मशविरा होता रहा। वह जमाना था आइजनहावर का। और इधर वगाल के चीफ मिनिस्टर थे डाक्टर

बी० सी० राय। किसी को पता भी नही लगा कि कलकत्ते को लेकर कहाँ कौन-सी फाइल खोली गई। साऊथ-ईस्ट एशिया की दरार भरने के लिए साजिश का कौन-सा प्लान तैयार हुआ। कलकत्ते मे तब अरविन्द जैसे लोग एक किलो गोश्त खरीदने के लिए दिलीप बेराश्रा के दरवाजो पर धरना देने लगे। सुसी जैसी लडकिया कॉल-गल बनकर वेणु दी के अड्डो मे जाने लगी। शिरीष बाबू जैसे लोग गोस्वामियो की मार्फत 'किपलेक्स' ग्लास के इम्पोर्ट लाइसेस हथियाने की तिकडम भिडाने लगे। जूडी और क्लारा हॉबसन यहा आकर इडिपेंडेंट इडिया की तस्वीर देखने लगे और योरोप के अखबारो को ऊँची कीमता पर बेचने के लिए स्ट्रैण्ड होटल के आर्किड मे खडे-खडे अपने कीमती अमरीकी कैमरो मे उन तस्वीरा को बद करने लगे। और बुधुआ जैसे लोग पीठ पर बकरा लादे कालीघाट के मदिर मे पूजा चढान आने लगे।

"बोलो काली मेया की जै—"

और साऊथ तथा नाथ से राजभवन की ओर जुलूस की टुकडिया आने लगी। वे लोग चिल्लाने लगे—"

"इनक्लाब!"

"जिदाबाद!"

वे लोग एक साथ स्लोगन लगाने लगे—

मुनाफाखोरा को सजा हो।
अनाज के भाव कम हो।
मुख्यमत्री जवाब दो।
नही तो गद्दी छोड दो।

जुलूस की वजह से ट्राम और बसो का चलना बद हो गया था। सडक के इस पार स उस पार जाना मुश्किल हो गया। पूरी सडक का घेरता नाथ की ओर से प्रोसेशन आ रहा था। गाडियो की मील भर लम्बी कतार लगी थी। रिक्शे, ट्राम और बसें रुक गई थी।

"कुछ दिन ट्रामो मे चढ लीजिए, बाद मे जब ट्राम और बसें कुछ भी नही चलेंगी तब समझ मे आएगा।"

ट्राम और बसो मे चढनेवाला ने जैसे काई भयकर अपराध कर डाला हो, इस तरह जुलूस के लोगा की ओर देखने लगे थे। ये लोग जसे

देश का उद्धार करने कमर कसकर जुट गए है, और हम लोग ट्राम मे चढकर आराम से जा रहे ह, इसलिए मानो देश के साथ गद्दारी कर रहे हैं ।

"अरे साहब, उतर आइए, हम लोगो के साथ जरा पैदल चलिए। देश हमारा अकेले का नही है। यह आपकी भी मातृभूमि है।"

इसके अलावा उपदेश देना भी नही भूलते । जो लोग पैदल चल रहे थे, वे गाडी मे बैठे लोगो पर उपदेश की बौछारे छोडकर जैसे अपना कर्त्तव्य पूरा करने लगे।

ट्राम मे बैठे एक बूढे आदमी ने बगलवाले यात्री से पूछा, "क्यो साहब, यह जुलूस किस बात का है ?"

"और किसका होगा, लालझडा वालो का है। इन लोगो के मारे काम-काज करना मुश्किल हो गया है !"

उधर से कोई बोल उठा, "देख लीजिएगा, अगर किसी दिन देश का उद्धार होता है, तो इन्ही लोगा के द्वारा होगा। हम आप जैसे लोगो से कुछ भी नही होगा—"

बात का सिलसिला बदलता देखकर इधर के लोग चुप हो गए। बहस करने से ट्राम मे ही हाथापाई या मारपीट नही तो गाली-गलौज की नौबत तो आ ही जाएगी । अब तक निरजन का ध्यान उस ओर नही था। गोबरडागा से श्यामबाजार आकर उसने ट्राम पकडी थी। ट्राम मे बैठते ही उसने अपनी नोटबुक खोल ली थी। एक पुरानी पोथी से उस पल्लवा के काल की भाषा के कुछ नमूने मिल गए थे। किसी तरह अगर यह साबित किया जा सके कि बगला भाषा की विभक्ति और धातुरूपा से इनका मेल बैठता है तो और क्या चाहिए ? अरसे से वह पडित समाज मे ख्याति पाने की साच रहा है। लेकिन करता है गोबरडागा कालेज मे नौकरी। उसे कौन पह-चानेगा ? इतने दिना मे डॉक्टरेट की डिग्री तक नही मिल पाई।

अचानक ख्याल हुआ कि ट्राम चल नही रही है। अपनी नोटबुक पर से नजर उठाकर उसने बाहर की ओर देखा।

"उधर क्या हुआ जनाब ?"

लेकिन उसकी बात का जवाब वहाँ कौन देता ? सभी उस एक ही सवाल से परेशान थे। निरजन ने अच्छी तरह से देखा, सामने से—

जुलूस गुजर रहा है। वह समझ गया, ट्राम चलने मे काफी देर लगेगी। वह एकाएक ट्राम से उतर पडा। इसके वाद कधा की चादर ठीक करने के वाद एक गली मे घुस गया। गली निरजन की जाना-पहचानी थी। कई वार वह इस ओर आ चुका था।

एक मकान के आगे आकर दरवाजा खटखटाने लगा।

"पचानन वावू घर मे ह ?"

पचानन वावू साधारणत सारा दिन घर पर ही रहते ह। करीव अस्सी साल की उम्र हो चुकी है। उनके पुरखे नौकरी के सिलसिल मे काफी समय अफगानिस्तान मे रहे थे। व्रिटिश सरकार जिन दिना अफरीदियो से जूझ रही थी, उन दिनो उनके पुरखे व्रिटिश सरकार के कण्टूनमेण्ट मे नौकरी कर रहे थे। इसके वाद लडके और पोते भी वही नौकर हो गए। कोई मामूली ओहदे पर था तो कोई वडे ओहदे पर। खुद पचानन वावू भी वहाँ वयालिस साल तक नौकरी करने के वाद रिटायर हुए थे। वहा नौकरी करते वक्त ही अफरीदिया की एक मस्जिद से यह पाडुलिपि उन्हे मिली थी। भारत आते वक्त वे उसे भी साथ लेते आये। निरजन को अपने एक मित्र से इसके वारे मे पता चला। और तभी से यह वात निरजन के दिमाग मे घर कर गई है कि यही आदि वगला भाषा है।

एक छोटा-सा लडका आकर निरजन को अन्दर वावा के पास ले गया।

पचानन वावू ने पूछा, "कहिए जनाव, क्या निश्चय किया ?"

निरजन ने कहा, "वात यह है कि अभी तक रुपये का इन्तजाम नही हो पाया है, लेकिन मैंने ठीक किया है कि मै इसे खरीदकर ही रहूँगा।"

"लेकिन अव ज्यादा देर न करें। वात यह है कि और भी दो-चार खरीदार आये थे।"

"लेकिन आपने तो मुझे जवान दे रखी है पचानन वावू, उसी भरोसे पर मैं रुपये का इन्तजाम कर रहा हूँ।"

पचानन वावू वूढे हो गए है। उनके खाने-खेलने के दिन गुजर चुके हैं। फिर भी जैसे भोग का कोई निश्चित समय नही है। कहने लगे, "मैं और कितने दिन हूँ, मेरे मरते ही लडके-वच्चे इसे नष्ट कर

देंगे। इसीलिए इसका कुछ इन्तजाम करके जाना चाहता हूँ। लेकिन आप ये पाच सौ रुपये भी नही जुटा पा रहे है ?"

निरजन ने कहा, "अगर जुटा पाता तो आपको कहना नही पडता, ले ही जाता। कोशिश कर रहा हूँ जिससे ज्यादा देर न हो।"

"लेकिन पाँच सौ रुपये की ही तो बात है, इसका भी इन्तजाम नहीं कर पा रहे हैं ? आजकल तो सुना है, मास्टरो की हालत ही सबसे अच्छी है।"

"यह आपसे किसने कह दिया ?"

"कहेगा कौन ? सभी को मालूम है। मेरे यहाँ भी बच्चो के लिए दो मास्टर आते है, दोनो को मिलाकर दो सौ रुपये देना पडता है। ट्यूशन करते हो तो महीने मे छ ट्यूशन तो बडी आसानी से किए जा सकते है।"

"आप भी क्या कह रहे है पचानन बाबू, महीने मे छ ट्यूशन कैसे किए जा सकते है ?"

"क्यो ? क्यो नही किए जा सकते ?"

निरजन ने कहा, "रात को तीन घटे का समय मिलता है। छ से नौ बजे तक। सप्ताह मे दो दिन भी पढाया जाए, तो महीने मे तीन ट्यूशन से ज्यादा करना सम्भव नहीं है।"

पचानन बाबू ने कहा, "अरे वाह ! हर रोज पढाना ही होगा, यह किसने कह दिया है ? बीच-बीच मे एबसेंट भी तो हो सकते है। मेरे यहाँ ही लीजिए, बच्चो के मास्टर महीने मे पाच-छ दिन तो नागा करते ही है। इसके अलावा नोट्स ? आप नोट्स नही लिखते ?"

निरजन इतनी देर से मुँह बन्द किए सब सुन रहा था। इसके सिवाय चारा भी नही था।

उसने कहा, "नही।"

"अगर नोट्स नही लिखते तो क्या बगला साहित्य का इतिहास भी नही लिखा ?"

निरजन ने कहा, "नही।"

"वाह जनाब, अरे आप तो मास्टरी लाइन के कलक है। बगला साहित्य पढा रहे है और बगला साहित्य का इतिहास ही नही लिखा ? आखिर क्यो ? आपको किसने रोका है ?"

"रोका तो किसी ने नही है, मैंने खुद ही नही लिखा।"

"लिख डालते तो अच्छा रहता, सभी तो लिख रहे हैं, आप ही क्या बाकी रह गए ? ऊल-जलूल जो भी लिखेंगे, हमारे नाती-नतनिया को खरीदना ही पडेगा ! आपकी जेब मे भी दो पैसे फालतू आ जाएँगे। नोट्स लिखते होते तो आज पाँच सौ रुपये के लिए आपको इस तरह परेशान नही होना पडता।"

निरजन जरा-सा झोल-भात खाकर सुबह घर से निकला था, और अब शाम हो आई थी। अब ज्यादा बात करने की ताकत उसमे नही रह गई थी। उसने सिर्फ इतना ही कहा, "रुपये के लिए मैं कोशिश कर रहा हूँ, दो-चार दिन मे शायद इतजाम हो जाएगा। आप कुछ दिनो के लिए और उसे रखे रहे।"

कहकर वह और नही बैठा। चादर कधे पर डालकर उठ खडा हुआ। इसके बाद सीधे बाहर सडक पर आ गया। बाहर जुलूस का गुजरना अभी तक खत्म नही हुआ था। ट्राम और बसें धीरे-धीरे खिसक रही थी। निरजन ने एक बार सोचा, बस मे चढ जाऊँ। लेकिन चढता भी तो कैसे ? सभी हैडिल पकडे लटक रहे थे। इससे बाकी रास्ता पैदल ही तय करना ठीक रहेगा। हाथ मे बैग लिये और कधे पर चादर डाले, चढने की कोशिश करना भी खतरे की बात है।

निरजन ने एक बार जुलूस मे शामिल लोगो की ओर देखा। लाल-लाल फेस्टून कधे पर लिये नारे लगाते लोग आगे बढ रहे थे।

मुनाफाखोरो को सजा हो।
अनाज के भाव कम हो।
मुख्यमन्त्री जवाब दो।
नही तो गद्दी छोड दो।

लेकिन कौन जानता है कि ये लोग इस तरह क्या चीख रहे है ? निरजन डरता-डरता सडक के किनारे आ गया। धक्का लग सकता है। हट जाना ही अच्छा है। इस तरह फिजूल चिल्लाने की बजाय ये लोग अगर अच्छी तरह पढने मे मन लगाएँ तो इम्तहान मे अच्छे नम्बरो से पास हो, लेकिन यह सब कहने की कोई जरूरत नही। सुन लगे तो अभी सबके सब मिलकर मुझ पर टूट पडेंगे।

वीडन स्ट्रीट के नजदीक आते ही निरजन बायी ओर मुड गया।

इस ओर खमोशी थी। जरा-सा और आगे वढने पर हरितकी वगान लेन है। पाँच सौ रुपए। काफी दिन हुए सुरमा ने एक जोडा सोने के कगन वनवाए थे। सुरमा अगर वे दोनो दे दे, तो उन्हे पाँच सौ रुपए मे गिरवी रखकर यह पोथी ली जा सकती थी। लेकिन सुरमा तो इसकी कीमत समझेगी नही। दूसरा भी कौन है जो इसकी कद्र समझे? पढने-लिखने की कदर समझनेवाले लोग कलकत्ते मे कितने ह? पचानन वावू नोट्स लिखने के लिए कह रहे थे। कह रहे थे, वगला साहित्य का इतिहास लिख डालिए। पचानन वावू भी कैसी वातें करते है! अभी कोई समझ नही रहा है, लेकिन एक दिन सवकी समझ मे आएगा। उस दिन सभी पूछेंगे—निरजर हालदार कौन है? इतने दिनो से चुपचाप वैठा रिसर्च कर रहा है और हम लोगो को पता ही नही है!

यही होता है। हरप्रसाद शास्त्री, राखालदास वन्द्योपाध्याय वगैरह के वारे मे भी यही हुआ था। वाद मे जव लोगो को पता लगा तो हल्ला मच गया।

घर के आगे आकर धीरे-धीरे कुडो खटखटाने लगा।

और दिन कुडी खटखटाते ही अदर से सुरमा की आवाज आती—आई—

इसके वाद ही सुरमा दरवाजा खोल देती। कहती, वडी देर कर दी?

कुडी फिर खटखटाई।

फिर भी किसी ने जवाव नही दिया।

क्या हुआ? और दिन तो ऐसा नही होता? सो गई है क्या?

निरजन फिर खट-खट करने लगा।

फिर भी कोई आवाज नही आई। निरजन घूमकर मकान मालिक का दरवाजा खटखटाने लगा। सुरमा की मौसी ने कहा, "ओह, तुम? सुरमा तो अभी तक वापस नही आई। ठहरो वेटा, म दरवाजा खोलती हूँ।"

मौसी ने दूसरी ओर से आकर दरवाजा खोल दिया।

निरजन ने पूछा, "सुरमा कहा गयो है?"

"यह तो नही मालूम, मुझसे कह रही थी एक रिश्तेदार से मिलने जा रही हूँ, शाम होने से पहले ही वापस आ जाऊँगी।"

"कौन रिश्तेदार ? कहा रहता है ? सुरमा का कोई रिश्तदार भी यहा रहता है, मुझे तो नही मालूम !"

"मुझे क्या मालूम भैया, यह तो मैं कह नही सकती। देखा था, खूब सज-धजकर गई थी।"

"किसके साथ गयी ? अकेली ?"

"हाँ, मुझे तो यही लगा कि अकेली ही गयी है !"

सुरमा अकेली जाएगी ! घर के अदर आने के बाद देर तक भी निरजन कुछ ठीक नही कर पा रहा था। जो कभी इस कमरे से बाहर अकेली नही गयी, वही अकेली सज-धजकर बाहर गई है !

निरजन उसी हालत मे तख्त पर बैठकर न जाने क्या सब सोचन लगा।

इसके बाद ही आया वह दिन। वाशिंगटन के ह्वाइट हाऊस मे जॉन कनेडी आकर बैठे। पुराने कागज और फाइलें उलटते-उलटते अचानक एक पुरानी फाइल पर नजर पडी। पी एल ४८०। अफ्रीका और साऊथ-ईस्ट एशिया मे हर जगह चायना अपने हाथ बढा रहा है। लेकिन कलकत्ता ? कलकत्ता अब भी कम्युनिज्म का हाटबेड बना हुआ है। दिल्ली स्थित एम्बैसी के नाम डिप्लामैटिक चिट्ठी गई। कलकत्ते की क्या हालत है, लिख भेजो।

उधर से रिपार्ट आई—मि० प्रेसीडट, कलकत्ते की हालत मे कोई सुधार नही हुआ है। न जाने किस बाबा आदम के जमाने मे कैलकटा म्यूनिसिपैलिटी ने पानी के लिए कल बैठाई थी, आज भी उसी स काम चल रहा है। पहले जहाँ पाँच लाख आदमी थे, अब वहाँ साठ लाख की आबादी है। लेकिन पानी नही बढ़ा, सडक भी चौडी नही हुई ह। आज भी हजारो लोग फुटपाथ पर सोते ह। स्लम और कनेजा

मे लडको के वैठने की जगह नही है। नई पीढी के लडके सिर्फ हडताल और स्ट्राइक करना जानते है। लडकियाँ कॉल गर्ल का पेशा अख्तियार करती है या थियेटरो मे काम करती हैं। फूड शॉर्टेज, स्वास्थ्यहीनता, धुआ और वस की भीड, सव मिलाकर अराजकता फैली हुई है। हर काम के लिए यहाँ घूस और हर कदम पर इन्फ्लुएन्स जरूरी है। बिना इन्फ्लुएन्स के, बिना घूस के यहाँ कोई भी काम होना मुश्किल है। रोज यहा पर तालावन्दी होती है, रोज हडताल होती है और राज एक्सिडेंट होते रहते हैं। यहा के सारे ऑफिस वम्वई चले जा रहे है।

फाइल मे सव कुछ लिखा था। इण्डिया के फाइनन्स मिनिस्टर का नोट भी था।

कैनेडी साहव ने इण्डिया गवनमेट को फिर से लैटर लिखा। कलकत्ते की हालत सुधारनी ही है। इससे चाहे इन्फ्लेशन हो या और कुछ।

कलकत्ते से वेस्ट बँगाल के चीफ मिनिस्टर डॉ० वी० सी० राय फाइल वगल मे दवाए अमेरिका के लिए रवाना हो गए।

और उसी दिन इण्डिया गवर्नमेंट के इण्टरनेशनल ट्रेड ऐण्ड कामर्स मिनिस्ट्री के कलकत्ता आफिस से सूट-बूटधारी एक स्मार्ट छोकरा शिरीप वावू के ऑफिस मे आ पहुँचा। भूपर वावू ने पहले से ही टेलीफोन करके खवर दे दी थी। इसलिए कहीं भी किसी प्रकार की कमी न रही।

शिरीप वावू ने नमस्कार किया। "आइए साहव, आइए—आप ही का नाम मिस्टर एस० के वागची है न ?"

एस० के० वागची नई पीढ़ी का लगता है। ज्यादा वात नहीं करता। ज्यादा वोलना न पड़े, इसलिए वारवार सिगरेट सुलगा लेता है।

उसने कहा, "आपकी फैक्टरी देखूगा, देखकर इन्स्पेक्शन रिपोर्ट देनी है।"

"यह तो आफिस है, फैक्टरी कलकत्ते के वाहर है।"

शिरीप वावू ने कहा, "जरूर देखिए, लेकिन उसके पहले वताइए क्या पिएँगे, चाय या कॉफी ? क्या मँगवाऊँ आपके लिए

"नही, नही, अभी मैं कुछ भी नही लूगा। खाकर ही चला आ रहा हूँ।"

शिरीष वावू ने हँसकर कहा, "यह कैसे हो सकता है, आप हमारे अतिथि है, विना कुछ खिलाए भला आपको कैसे छोड सकता हूँ ?"

एस० के० वागची ने मुस्कराकर कहा, "ये सव फॉर्मेलिटी की वातें छोडिए, पहले काम की वात की जाए।"

फिर वसा ही हुआ। गोस्वामी तैयार ही था। वह टीप-टाप होकर आ पहुँचा। शिरीष वावू ने कहा, "अपने इस आदमी को आपके साथ किए दे रहा हूँ, यही आपको फैक्टरी दिखला देगा—गाडी भी तैयार है।"

एस० के० वागची गाडी मे आ वैठा। वह गाडी मे पीछे की सीट पर वैठा, गोस्वामी आगे ड्राइवर के पास वैठा।

पीछे मुडकर उसने कहा "सर, अगर हुक्म दें तो एक सिगरेट पी लू।"

गोस्वामी ने सिगरेट सुलगाई। इसके वाद फिर कोई वात नही हुई। सीधे फैक्टरी। शिरीष वावू की 'इटरनेशनल ग्लास फैक्टरी'। ऐसी कोई वडी फैक्टरी नही थी, जो देखने मे ज्यादा वक्त लगता। एस० के० वागची वाहर स देखकर ही समझ गया था। अदर भी गया। उस वक्त काम चल रहा था। काच के गिलास और डॉक्टरी के दूसरे सामान। इसके अलावा शीशी और वोतलें अलग से। पहले जव वाजार वडा था, वम्वई, दिल्ली और मद्रास माल जाता था। उन दिना प्रोडक्शन ज्यादा था और स्टाफ भी ज्याद था। आमदनी भी काफी थी।

एस० के० वागची ने चुपचाप सव कुछ देखा। एक शब्द भी मुह स नही निकाला। घूम-घूमकर एक के वाद दूसरी सिगरेट फूकता रहा। फिर कहा, "अव चला जाए।"

गोस्वामी ने पूछा, "सर, और कुछ नही देखेंग ?"

"नही।"

गाडी जव वापस लौटकर आई, एस० के० वागची की खातिरदारी के लिए शिरीष वावू ने गुलावजामुन, रवडी और रसगुल्लों से टवल सजा रखी थी।

"कैसी लगी मेरी फैक्टरी ?"

"आपने यह सब क्या किया है ?"

एस० के० बागची ने मिठाइयों की ओर इस तरह देखा, जैसे वह हीरे, मोती और पन्ने देख रहा हो।

शिरीष बाबू ने कहा, "जलपान का थोडा-सा प्रबन्ध किया है, बिलकुल जरा-सा है।"

"लेकिन यह सब मिला कहा ? आजकल तो यह सब मिलना मुश्किल हो गया है।"

शिरीष बाबू ने कहा, "इसमें मुश्किल क्या है, आपके लिए तो कोई इतजाम ही नही कर पाया।"

एस० के० बागची ने एक सिगरेट सुलगाई। फिर कहा, "मिठाई तो मैं खाता नही।"

शिरीष बाबू जैसे घबडाकर बोले, "लेकिन यह चीनी की डली नही है। असली छेने की मिठाई है।"

"हो सकता है, लेकिन कुत्ते को घी कहाँ माफिक आता है ? हम लोगो का भी वही हाल है।"

"तब तो बडी खराब बात हो गई, आपकी कोई खातिर नहीं कर पाया।"

"इससे क्या होता है ? फिर कभी खातिरदारी कर लीजिएगा। रिपोर्ट मैं आज थोडे ही भेज रहा हूँ। उसे भेजते-भेजते अभी पद्रह दिन और लगेंगे।"

शिरीष बाबू ने पूछा, "फैक्टरी कैसी लगी ?"

बागची ने कहा, "सच कहने मे क्या हर्ज है, आपकी फैक्टरी असल मे कोई फैक्टरी ही नही है।"

पल भर मे शिरीष बाबू का चेहरा काला पड गया। लेकिन उन्होंने फौरन सम्हलकर कहा, "तब क्या होगा ?"

"देखता हू, क्या किया जा सकता है।" कहकर एस० के० बागची बाहर सडक की ओर चल दिया। बाहर गोस्वामी खडा था। शिरीष बाबू ने उसकी ओर देखकर आंखों से इशारा किया। गोस्वामी ने बागची को गाडी म बैठाया। फिर पूछा, "किधर चलेंगे हजूर ?"

बागची ने कहा, "भवानीपुर।"

हाँ, तो भवानीपुर की ओर ही गाडी चलने लगी । जरा देर चलने के बाद आगे की सीट पर से गोस्वामी ने मुडकर कहा, "हुजूर, एक सिगरेट पी लू ?"

'पीजिए न, बार-बार मुझसे पूछने की क्या जरूरत है ?"

गोस्वामी ने पीछे मुडकर दोनों हाथ जोडते हुए कहा, "अरे, कैसी बात कर रहे है हुजूर, कहाँ आप और कहा मै ?"

भवानीपुर मे पूर्ण थिएटर की बगलवाली सडक से गाडी बढी। एक मकान के आगे गाडी के रुकते ही गोस्वामी ने उतरकर दरवाजा खोल दिया । एस० के० बागची ने दूसरी मंजिल की ओर इशारा करके कहा, " मेरा फ्लैट वह है ।"

एस० के० बागची मकान की ओर बढा । गोस्वामी ने कहा, "हुजूर आपने कोई हुक्म नही किया ।"

बागची ने एक सेकेंड कुछ सोचा । फिर कहा, "अच्छा, आप अगले शनिवार को आइए ।"

"शनिवार को किस वक्त, और कहाँ पर ?"

"होटल आ पाएँगे ?"

"हुक्म होगा तो जरूर आऊँगा । किस होटल मे आऊँ ?"

"ग्रीन ग्रोव मे, शाम के सात बजे ।"

"बहुत अच्छा हुजूर, नमस्कार ।"

कहकर गोस्वामी फिर गाडी म आ बैठा । इसके बाद गाडी बडी सडक पर आते ही उसने एक और सिगरेट सुलगा ली । मुँह से एकबारगी काफी धुआँ उगलते हुए उसने ड्राइवर से कहा, "चलो, आफिस चलो ।"
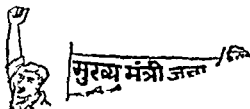
सुबह उठते ही वेणु दी को कार्पोरेशन के काम से इस मोहल्ले से उस मोहल्ले जाना पडता है । घर-घर जाकर टीका लगाना पडता है ।

घरो के अदर तक उसकी पहुँच है। काम एक-दो घटे का ही है। लेकिन इसी बीच घर की वहू-वेटी, मौसी, बुआ और वहना से जान-पहचान हो जाती है। सभी के साथ दोस्ती गाँठ लेती है। और एक वार अगर घर की औरतो से दोस्ती हो जाए तो घर की भीतरी वातें वाहर निकलते देर नही लगती।

किस घर मे कौन क्या खाता है, किस घर की वहू के वच्चा होने वाला है, सव सुनना पडता है। सुनकर वेणु दी हाय—उफ् भी करती। तव टीका लगाना महज नाम के लिए रह जाता है। वेणु दी के घर मे घुसते ही औरतें अपना सारा काम छोडकर आ जाती।

इसी तरह एक दिन हारान नस्कर लेन की सुसी को वेणु दी इस लाइन मे ले आई थी।

उस दिन इतनी सुवह सुसी को देखकर वेणु दी को जरा आश्चय हुआ। लडकिया ज्यादातर खा-पीकर दोपहर के वाद ही आती। किसी-किसी को जरूरत पडने पर वेणु दी वुलवा भेजती।

"वेणु दी, म आयी हूँ।"

"अरे सुसी तू! यह क्या सूरत वना रखी है तूने?"

सुसी सुवक-सुवककर रोने लगी। वेणु दी ने अपने आँचल से सुसी के आँसू के पोछे। फिर कहा, "रो मत वेटी, सुवह-सुवह रोने से अशकुन होता है।"

"लेकिन कल तुमने मुझे किसके साथ भेज दिया था वेणु दी! एक नम्वर वदमाश था। उसकी वजह से मुझे थाने जाना पडा। रात के ग्यारह वजे तक हवालात मे वद रही।"

"ह! उस पजावी लडके की वजह से?"

"हा, उसी सतोष अरोरा की वात कर रही हूँ। वातें कैसी मीठी-मीठी वना रहा था। मुझे जमीन दिखाई। रासविहारी एवेन्यू मे पाँच काठा जमीन दिखलाकर वहका लिया। कह रहा था, तुम्हारे नाम लिख दूगा, एक पैसा नही लूगा। मैं भी उसकी वाता मे आ गई। सिनेमा से निकलकर उसके साथ लेक के किनारे गई। अँधेरे म गाडी के अदर मुझे चूमा।"

"क्यो? तूने रोका नही?"

सुसा ने सुबकते हुए कहा, "उस वक्त मेरा दिमाग खराव हो गया था वेणु दी, जमीन के लालच मे मैंने—"

'फिर क्या हुआ ?"

"फिर सीधे थाने मे। पुलिस ने थाने मे ले जाकर मुझे वद कर दिया।"

"राम-राम ! फिर छूटी कैसे ?"

"जमानत पर !"

"जमानत किसने दी ?"

"भैया का एक दोस्त है। हमारे मोहल्ले मे भद्रकाली मिष्टान्न भडार है न, उसी का मालिक। वह आदमी मुझे फूटी आँखो भी नही सुहाता, फिर भी उसे अपनी सूरत दिखलानी पडी।"

कहकर सुसी वही वैठ गई और फूट-फूटकर रोने लगी।

वेणु दी ने कहा, "ठीक है। मै उस पजावी के वच्चे को मजा चखाऊँगी। फिर क्या कभी मेरे पास आना नही है ? खैर, तू आराम कर, मैं काम खत्म करके जरा दर मे आती हूँ।"

सुसी ने कहा, 'तुम्हारे इस घर के अलावा मेरे जाने की कोई जगह नही है।"

"ठीक है, तू यही रह न आराम से! मैं क्या तुझे रोकती हू ?"

"लेकिन मैं तो पुलिस की आसामी हूँ, वे लोग मुझे खोजेंगे। मैं तो भागकर आई हूँ।"

"वह सव वाद मे सोचूगी। पहले टीके लगा आऊँ, फिर सव सुनूगी। तू अदर से दरवाजा वद कर ले।"

इतना कहकर वेणु दी निकल गई। सुसी कुछ देर चुपचाप वैठी रही। फ्लैट का दरवाजा उसने अदर से वद कर लिया था। वाहर से किसी का आना मुमकिन नही था। इतनी देर वाद जसे सुसी का तसल्ली हुई। लगा, जैसे इतने दिन वाद उसे सारी जिम्मेदारियो से, सारे प्रलोभनो से, जरूरतो और दगावाजियो से छुटकारा मिला। इतने दिन मानो कोई पीछे से उसे खदडता था, कोई जैसे उसका पीछा करता था। जसे कोई कहता—और ज्यादा दौलत चाहिए, और ज्यादा हुस्न चाहिए, साडी, गहने और सैंडिलें चाहिए। और कहता—एक मकान

दो, छोटा-सा वगीचा और छोटा-सा सुखी परिवार। ऐसा परिवार, जहाँ इच्छानुसार खर्च कर सकू।

वुधुआ वगैरह भी ऐसे ही किसी गँवई से मीलो पैदल चल कर मदिरो, मस्जिदो और गिरजो मे आए है। और उन सवने सिफ एक ही वात कही है—और रुपया लाओ, और रूप लाओ, और साडी, गहने और जूते लाओ। ये सव चीजे जव मिल जाती तो कहते—भगवान, एक मकान दे दो, एक छोटा-सा वगीचा दे दो, छोटा-सा शातिपूर्ण परिवार दे दो। ऐसा परिवार जहाँ इच्छानुसार खर्च कर सके।

वुधुआ की मा का कलकत्ता देखना जैसे अभी तक भी पूरा नही हुआ था।

हावडा मैदान मे आने के वाद से जो देखना शुरू हुआ, वह देखना जसे किसी भी तरह पुराना नही हो रहा था। वस, देखे जाती और कह जाती, "वाप रे वाप, कितना वडा सहर हव।"

वुधुआ भी कभी-कभी झिडक देता, "अव चुप न रह माई।"

वह वेचारी वडी सीधी थी। डलहौजी स्क्वायर मे गाव की हिताई के उस आदमी के घर जो चाय पी थी, उसके वाद से अवतक वस वरा-वर चल ही रही थी। साडी के पल्लू को वाँधकर वेचारी को जिधर ले जाया जा रहा था, उधर ही जा रही थी। उसकी अपनी इज्जत-आवरू ही जैसे नही रह गई थी। उसके लडकी हुई थी, लडका कहा हुआ था? लडका न होने की वजह से वेचारी वैसे ही शर्मिन्दा थी। लेकिन इसके लिए वह कर भी क्या सकती थी? काली माई की 'किरपा' हुई तो अव की वार लडका होगा। वुधुआ इसीलिए वकरा लादे चल रहा था।

अगर उससे कोई कहे कि कालीघाट के मदिर मे जाकर सात दिन और सात रात विना खाए-पिए पडे रहो तो वेचारी वह भी करने को राजी थी। हे कालीमाई, तुमने एक लडकी दी है तो एक लडका भी दो। मेरे आदमी की लाज रख लो।

कलकत्ते मे कोई भगवान है या नही, कौन जानता है। होता तो अव तक शायद उसके कान सुन पड चुके होते। सवको सव कुछ चाहिए। कलकत्ते के लोगा के लिए खाना चाहिए, कपडा चाहिए और घर चाहिए। सुसी को रुपया चाहिए, गोस्वामी को तरक्की चाहिए,

अरविन्द को आर्थिक सम्पनता चाहिए, शिरीप बाबू को इम्पाट लाइसेंस चाहिए, दिलीप वेग को छेना चाहिए, वेणु दी को नामवरी चाहिए, वुधुआ को लडका चाहिए। चारा ओर मचते 'चाहिए' के कोलाहल मे कलकत्ते के भगवान वडे मजे से चुपचाप जुलूस देख रह हे। नीचे इनक्लाव जिन्दावाद हो रहा था और ऊपर से जूडी और क्लारा हॉवसन वही देख रहे थे।

"इनक्लाव।"

"जिन्दावाद!"

वुधुआ का जुलूस अरविन्द के जुलूस के एकदम सामने आ गया। वुधुआ की वुढिया माँ को वडा अजीव लग रहा था। "वुधुआ, हऊ का होत?"

वुधुआ ने फिर डाँट लगाई, "सवुर से चल न माई, काहे ता करेलू?"

"वाकी, ओने होत का?"

वुधुआ ने वडे जानकार की तरह कहा, "भीख माँगता।"

फिर भी जैसे वुढिया को यकीन नही हो रहा था। भीख मागता है? लेकिन दल वनाकर भी कोई भीख मागता है?

"कवन चीज का भीख वुधुआ?"

वुधुआ ने गभीर आवाज मे कहा, "काम!"

काम! सव वेकार है क्या? शायद यही होगा। सभी को काम चाहिए। जयचडीपुर मे वुधुआ के हाथ मे भी कभी-कभी काम नहीं रहता। उन दिनो वुधुआ की माँ का वडा खराव लगता। वुधुआ का काम रोजाना की मजदूरी का था। एक जगह काम पूरा हो जाता तो दूसरी जगह आकर काम ढूढना। गाव के महाजन और मुखिया के घर चक्कर लगाने पडते। इन लोगा को भी शायद यही करना पडता होगा।

"इनक्लाव!"

"जिन्दावाद!"

वुधुआ ने अपने दल को होशियार किया, एक किनारे से चलो!

जुलूस के लिए जगह छाडकर वुधुआ की टाली सीधे दक्षिण की ओर वढ रही थी। और अरविन्द का जुलूस उत्तर की ओर वढ रहा था।

"कालीमाई की जै !"

सुसी के कानो मे आवाज आयी। खिडकी से ट्राम-चमवाली वडी सडक दिखाई नही पडती थी। फिर भी उसने देखने की कोशिश की।

अचानक टेलीफोन की घटी वजी। एक वार तो सोचा, रिसीवर उठाए या नही। इसके वाद रिसीवर उठाकर उसने कहा "हलो—"

"वेणु दी ?"

"वेणु दी घर मे नही है—"

"आप कौन है ?"

"सुसी की समझ मे नही आ रहा था कि क्या जवाव दे। कुछ सोचकर उसने पूछा, "वेणु दी से कुछ कहना है ?"

"आप कौन वोल रही है ?"

सुसी ने कहा, "पहले आप वताइए, कौन वोल रहे है।'

उस ओर से जवाव आया, "मैं गोस्वामी वोल रहा हूँ। वेणु दी स कह दीजिएगा कि मैंने टेलीफोन किया था। निताई के आदमी ने—"

सुसी ने धीरे से रिसीवर रख दिया। रखकर वेफिक्री की सास ली। पुलिस का आदमी नही है, इतने से ही काफी तसल्ली हो गई थी। वेणु दी का कोई स्टुडेंट क्लायट होगा।
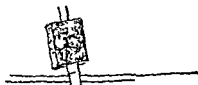
सुरमा अपनी जिन्दगी मे कभी इतनी वडी गाडी पर नही वैठी थी। जितनी वडी, उतनी ही शानदार। जी चाहे गाडी के अन्दर सोया भी जा सकता है। सोये-सोये कलकत्ते की सैर करो।

"लाला, सचमुच तुम वडे मजे मे हो !"

"क्यो भाभी ? मजे मे कैसे हूँ ?"

"रोज मजे से गाडी मे घूमने को मिलता है, कोई कुछ कहने वाला नही है। अगर मैं इस तरह घूमना शुरू कर दू तो तुम्हारे भैया आफत कर देंगे ! क्या मजेदार शहर है, कितने वडे-वडे मकान है !

और मैं सारे दिन कैसे घर मे पडी-पडी सडती हूँ, तुम देखते ही हो न ? मेरे कमरे से यह सब कुछ भी दिखाई नही पडता। अच्छा, वह क्या है ?"

'वो देखो, वह है किला ! जरा देर करके रात को निकलो तो और भी मजा आएगा। गोरे-गोरे साहव और मेम देखने को मिलेगी। भैया के साथ एक दिन क्यो नही निकलती ?"

सुरमा ने कहा, "तुम्हारे भैया को कभी फुरसत हो तव न ? दिन-रात वस किताव और किताव—"

गोस्वामी ने कहा, "भैया वडे नीरस जीव है ! अच्छा, उतनी देर रात गये जागकर आखिर क्या पढते हे ?"

"क्या पता लाला, न जाने क्या सव लिखा करते हैं।"

"इतने पढने-लिखने से क्या फायदा ! वेकार मे सिर का वोझा वढाना।"

"म भी तुम्हारे भैया से यही कहती हूँ। कहती हू, क्या दिन भर कितावो मे आँखें गडाये वैठे रहते हो, गोस्वामी लाला को देखो, कभी कितावो के पास भी नही फटके, फिर भी कितनी वडी-वडी गाडिया म घूमते हैं।"

गोस्वामी ने पूछा, "यह सुनकर भैया क्या कहते ह !"

सुरमा ने कहा, "कहगे क्या ! सुनकर चुप हो जाते है।"

गोस्वामी ने कहा, "आज जो मेरे साथ आयी हो, भैया जानते ह ? उन्ह वतलाया है ?"

"नही, नही, वतलाती तो क्या आने देते ! तुम्हारे भैया भी एक ही है। उनके आने से पहले ही मुझे घर पहुँचा देना लाला।"

"जरूर भाभी।"

इसके वाद एक गली के पास आते ही अचानक ड्राइवर से गाडी रोकने को कहा।

"इस वक्त यहा कहाँ जा रहे हो लाला ?"

गोस्वामी ने कहा, "तुम जरा गाडी मे वठो भाभी, मुझे यहाँ पर थोडा काम है, एक आदमी से मिलकर मैं अभी आता हूँ।"

शाम हो आयी थी। सुरमा को वडा अच्छा लग रहा था। इस तरह गाडी मे वैठकर कलकत्ता घूमना जैसे उसके लिए स्वप्न ही तो

था। यह जैसे कल्पना के वाहर था। । सुरमा इधर-उधर देखने लगी। सव देखे उसे। आसपास मे पैदल चलते सभी देख लें कि सुरमा कितनी वडी गाडी मे वैठकर घूमती है।

"इनक्लाव।"

"जिन्दावाद।"

कितने लोग लाइन लगाये जुलूस के साथ चल रहे थे। लाल कपडे के फेस्टुन वना लिये है। उन पर न जाने क्या-क्या लिख रखा है। सुरमा की आखो के आगे जैसे अलिफ-लैला का खेल चल रहा था। कलकत्ता कितना वडा शहर है। दुनिया कितनी वडी है। उनके हरि-तकी वगान लेन की तुलना मे जैसे यह एक वहुत वडी दुनिया थी। सुरमा जैसे उस दुनिया की परिक्रमा करने निकली थी। देखने निकली थी कि उसकी अपनी गली से और भी कितनी वडी-वडी गलियाँ इस शहर मे है, इन गलियो के मकाना मे कौन रहते है। उनकी समस्याएँ और चिताएँ क्या है, उनकी सूरतें कैसी है।

जुलूस धीरे-धीरे उत्तर की ओर वढ रहा था। सुरमा मत्रमुग्ध की तरह उनके नारे सुनने लगी—

मुनाफाखोरो को सजा हो।
अनाज की कीमतें कम हो।
मुख्यमत्री जवाव दो।
नही तो गद्दी छोड दो।

ऊपर अपने फ्लैट मे एस० के० वागची उस वक्त गोस्वामी को देखकर हैरत मे पड गया था।

"नमस्कार सर।"

"कौन? आपको क्या चहिए?"

"हुजूर, मै गोस्वामी हूँ। 'इटरनेशनल ग्लास फैक्टरी' देखने गये थे न। हजूर को याद नही आया?"

एस० के० वागची क्या करें, कुछ भी ठीक नही कर पा रहा था। उसने कहा, "हा-हाँ, याद आया।"

फिर कहा, "मुझसे कोई काम है आपको?"

"हुजूर ने शनिवार को आने का हुक्म दिया था।"

"हाँ, शनिवार को तो 'ग्रीन-ग्रोव' मे आने के लिए कहा था, शाम के सात वजे।"

"इधर से गुजर रहा था, सोचा, पूछता चलूँ! साथ मे गाडी है, आपको अगर कही जाना हो तो पहुँचा देता।"

"गाडी मे जगह होगी ?"

"जी हाँ हुजूर, काफी जगह है, आप ही के लिए तो गाडी लाया हूँ—गाडी मे कोई नही है—"

एस० के० वागची जैसे लोग ऐसी सुविधाएँ लेने के अभ्यस्त है। उसने कहा, "तैयार होकर मैं अभी आया।"

इतना कहकर वह वगलवाले कमरे मे चला गया। गोस्वामी थोडी देर वरामदे मे खडा रहा। शिरीष वावू ने जो काम उसे सौंपा है, वह कोई आसान काम नही है। शिरीष वावू के इस लाइसेंस के मिलने न मिलने पर ही ऑफिस के सारे स्टाफ का भविष्य निभर करता है। सिफ ऑफिस के सारे लोगो का ही नही, शिरीष वावू का अपना खुद का भविष्य भी।

शिरीष वावू कहते थे, "गोस्वामी, यह लाइसेंस मुझे मिलना ही चाहिए, नही तो सिफ घडिया और चौदह कैरेट सोना वेचकर अव काम नही चलता—फाके करने पडेंगे।"

गोस्वामी को मालूम था, शिरीष वावू की हालत सचमुच फाके करने जैसी नही थी। फिर भी अगर वँधी-वँधायी आमदनी का रास्ता वद हो जाए तो फक पडता ही है। खासकर शिरीष वावू जैसे लोगा के लिए। शिरीष वावू खर्चीले आदमी हैं। मुलाजिम भी कम नही ह। पहली तारीख को दस-बीस आदमी हाथ फैलाये खडे ही रहते ह। फिर इधर-उधर का दान-धर्म भी है। ऐसे आदमी का भला हो, यह गोस्वामी भी चाहता है।

शुरू-शुरू मे गोस्वामी ने सोचा था।

हरितकी वगान लेन के लोगो की नजरा म गोस्वामी दिना-दिन जैसे किसी और जगत का आदमी वनता जा रहा था। इसीलिए गोस्वामी अपने मकान मे दाखिल होने लगता, तो सुरमा भाभी अपने जँगले से आवाज देती।

गोस्वामी को लगता, सुरमा भाभी सुखी नही है। सुवह स लकर

रात तक आदमी पढने-लिखने मे मस्त रहे तो उसकी बीवी के लिए सुखी रहना मुमकिन नही है। सुरमा भाभी पिंजडे मे बन्द चिडिया की तरह फडफडाने लगती। शनिवार की शाम को पार्क स्ट्रीट के होटल मे गोस्वामी को एस० के० बागची से मुलाकात करनी है। लेकिन वह क्या खाली हाथ जाएगा ?

भूधर बाबू ने कहा था, "नही, यह कैसे हो सकता है ? वह तो कोई देवगुरु बृहस्पति नही है, पूरा इतजाम रहना चाहिए।"

शिरीष बाबू ने कहा था, "खास बारासत से मिठाई मँगवाई थी, एक टुकडा भी नही खाया।"

"खाता कैसे ? ये लोग क्या मिठाई खानेवाले होते है ?"

"तब और क्या किया जाए ? रिपोर्ट सबमिट करने से पहले कुछ खिलाना-पिलाना जरूरी है। जिसे कहते है नमक खिलाना—बिना नमक खाये आदमी नमकहलाली कैसे करे ?"

भूधर बाबू ने कहा, "गोस्वामी तो लगा है न ?"

"सो तो है ही।"

भूधर बाबू ने कहा, "फिर किस बात की चिंता है ? अन्दर ही अन्दर जिसे जो देना-लेना था, हो ही चुका है। अब रहा, जरा इस्पेक्टर की खातिरदारी करना। क्या यह भी आपका आदमी नही कर सकता ?"

"जरूर कर लेगा, फिक्र सिर्फ इस बात की है कि खातिर करे कैसे ?"

"क्यो, खातिरदारी कैसे करनी चाहिए, यह भी क्या सिखलाना पडेगा ? कलकत्ते मे क्या होटल नही है ? बार नही है ? किसी होटल मे ले जाकर सौ-दो-सौ की शराब पिलवा दीजिए।"

"और औरत ?"

भूधर बाबू भी यही कहना चाहते थे। उन्होने कहा, "औरत के लिए कहा है क्या ?"

शिरीष बाबू ने कहा, "नही, ऐसा कुछ कहा तो नही है, लेकिन मै सोच रहा था, एकदम से किसी अच्छी सी हुस्न की परी लेकर जाया जाए तो कैसा हो ?"

भूधर बाबू ने कहा, "दिल्ली मे तो यह सब खूब चलता है।

कलकत्ते मे भी शुरू कर देने मे क्या हर्ज है । जरा-जरा से छोकरे इस्पक्टर बन गए है ।"

शिरीष बाबू ने कहा, "तब मेरा प्लान ही ठीक है, क्या कहते ह ?"

भूधर बाबू ने कहा, "कोई चाहता है तो करना ही पडेगा ।"

शिरीष बाबू ने कहा, "यह कौन ऐसी अनमोल चीज है । अपना वह गोस्वामी ही सब इतजाम कर देगा ।"

चीज अनमोल न होने पर भी उसके लिए पहले से काफी कुछ करना पडता है । शिरीष बाबू को इसी बात की चिंता थी । एस० के० बागची को घर पहुँचाकर गोस्वामी फिर शिरीष बाबू के सामने आ खडा हुआ । शिरीष बाबू के आसपास जो खडे थे, उनसे शिरीष बाबू ने कहा, "तुम लोग बाद मे आना अभी जाओ ।"

सबके चले जाने पर गोस्वामी ने कहा, "सब ठीक हो गया है सर, कोई गडबडी नही हुई ।"

शिरीष बाबू समझ नही पाये । उन्होने कहा, "इसके माने ? क्या ठीक हो गया ?"

"बागची साहब को सीधे घर तक पहुँचा आया हूँ ।"

"रास्ते मे कुछ कहा क्या ?"

"आदमी बडे अच्छे ह, हमारी फैक्टरी देखकर बडे खुश हुए ह ।"

"कह रहा था क्या ?"

"मुझसे यह सब बातें कैसे करते ? फिर भी बातचीत से लगा कि आपसे काफी खुश है ।"

"तुझे कैसे पता चला ?"

गोस्वामी ने कहा, "खुश नही होते तो शनिवार की शाम को मिलने के लिए कभी कह सकत थे ?"

"मिलने को कहा है ? कहा ?"

"जी, पार्क स्ट्रीट के एक होटल मे । शाम के सात बजे ।"

"सच ?"

गोस्वामी ने कहा, "जी हा, बागची साहब कह रहे थे, शिरीष बाबू के ऑफिस मे जाकर कुछ भी नही खाया, पता नही, वे क्या सोचेंगे । लेकिन मैं तो कभी मिठाई वगैरह नही खाता । अगर खाता

भी तो ऐसी चीज खाता हूँ, जो होटल छाड और कही नही मिलती ! तब मैंने कहा—आपको होटल मे ही खिलाऊँगा सर ! कहिए, किस होटल मे खाएँगे ? इस पर वागची साहव ने कहा—ग्रीन ग्रोव मे–"

शिरीष बाबू ने कहा, "ठीक है, शनिवार को न ?"

"जी हा, हुजूर।"

"कव ? कितने बजे ?"

"शाम को सात बजे !"

"कितने रुपये लगेंगे ?"

"यही दो सौ रुपये से काम चल जाएगा।"

"नही"—शिरीष बाबू ने जरा विगडकर कहा, "दो सौ रुपये मे कैसे काम चलेगा ?"

गोस्वामी न कहा, "गाडी अपनी है ही, ज्यादा से ज्यादा होटल म जाकर ड्रिक करेगा। अकेला ही तो है, कितनी पिएगा ? ज्यादा से ज्यादा एक वोतल ? इससे ज्यादा कोई पी भी नही सकता।"

"लेकिन सिर्फ ड्रिक कराने से ही काम चल जाएगा ? देवता तो कोई है नही, यह भी मोचा है ?"

गोस्वामी ने कहा, "यह तो नही मोचा हुजूर।"

"नही सोचा तो अव से सोचना शुरू कर ! एक दिन उसके घर चला जा । मेलजोल वढा ले, पता लगा ले, औरत का शौक है कि नही, फिर उसका भी इतजाम कर ले।"

वात गोस्वामी को भी पसन्द आयी । दुनिया मे कोई भी काम हासिल करने के लिए उसमे पूरी तरह से जुट जाना पडता है, यह उसे मालूम था।

"यह ले, और जा।"

कहकर शिरीष बाबू ने नोटो की एक गड्डी उसकी ओर वढा दी। गोस्वामी ने लेकर जेब मे रखी। नोट लेकर शिरीष वाबू के सामने गिनना मना था। इससे शिरीष बाबू का मिजाज गरम हो जाता है।

"जो-जो कहा, सब ठीक से करना।"

इसके वाद गोस्वामी वहाँ नही रुका। सारी वात उसके दिमाग मे चक्कर काटने लगी। शिरीष बाबू ने इशारा कर ही दिया था। लेकिन मिलेगी कहा ? ऐसी-वैसी चीज से तो काम चलेगा नही। भले

घर की होनी चाहिए। वाजारू होने से वागची साहव विगड जाएगा। कलकत्ते मे ऐसी चीज की कोई कमी नहीं है, यह वात गास्वामी का मालूम है। एक वार दलाल को खवर देते ही घर पर पहुँचा दगा। लेकिन वागची साहव उससे खुश नहीं होगे।

एक दिन निताई से मुलाकात हो गई। वह उस इलाके का वडा पुराना दलाल है। सव उसे जानते ह। उसने सारी वात वडे ध्यान से सुनी।

फिर वोला, "भैया, यह अपना काम नही है।"

"तव किसका काम है?"

"भवानीपुर म एक है।"

"भवानीपुर मे?"

"हाँ, भवानीपुर मे। एक औरत ह, टीके लगाती फिरती ह। लेकिन इन सव कामा मे एकदम घाघ है, जैसा माल चाहोगे, ठीक वैसा ही मिलेगा। किसी सरकारी काण्ट्रक्ट का काम है क्या?"

गोस्वामी ने कहा, "हाँ, यही समझ लो।"

"तव तुम वही जाओ। तुम्हारा वजट कितना है? कितना खच कर पाओगे?"

"जितना मागेगी। रुपये के लिए काम नही रुकेगा।"

निताई ने कहा, "ठीक है, मैं तुम्ह वही ले चलता हूँ, चलो।"

गोस्वामी उसी दिन पहली वार वेरा दी के घर गया था।

निताई ने ही परिचय करवा दिया। वजट मे मोटी रकम है। काफी वडा सरकारी काण्ट्रक्ट मिलना है। चीज अच्छी होनी चाहिए, एकदम 'प्योर'।

"कव चाहिए?"

गोस्वामी ने कहा, "अगले शनिवार को।"

वेरा दी ने कहा, "मेरे पास कई तरह की चीजें हैं। आपको तो अच्छी चीज चाहिए, अच्छी ही मिलेगी। आप एक वार परसो टेली-फोन कर लें।"

उसी वात के मुताविक गोस्वामी ने ठीक तीसरे दिन फोन किया था।

उधर से किसी स्त्री की आवाज सुनायी दी थी।

"कौन ? किसे चाहते ह ?

गोस्वामी ने पूछा, "वेणु दी वोल रही ह ?"

"नही, ग्रापको क्या काम है ? उनसे कुछ कहना है ?"

गोस्वामी की समझ मे नही ग्रा रहा था कि क्या कहे। फिर उसने कहा था, "कहाँ गई है ? किस वक्त ग्राएँगी ?"

"ग्राप कौन वोल रह है ?"

गोस्वामी ने कहा था, "कह दीजिएगा गोस्वामी ने फोन किया था। निताई के ग्रादमी ने।"

इसके वाद गोस्वामी ने टेलीफोन रख दिया था। ग्रव फिर क्या करे, कैसे काम वने, उसकी समझ मे नही ग्रा रहा था। नौकरी वरकरार रखने के लिए मन लगाकर काम करने के सिवाय दूसरा चारा नही है। वस, मन लगाकर काम करना ही काफी नही है, वल्कि जरूरत पडने पर विवेक को भी तिलाजलि देना ग्रनिवार्य हो जाता है। यह जो जितना कर पाता है, नौकरी के लिए वह उतना ही फिट है। मालिक के लिए जो लोग इतना कर पाए है, दुनियादारी मे ग्राज उनका नाम प्रात स्मरणीय है।

गोस्वामी को पहले थोडी हिचक थी।

लेकिल वाद मे वह एकदम से जुट पडा।

सुरमा ने उस दिन जल्दी से खाना वना लिया था। थोडा-सा भात खाकर निरजन कालेज चला गया था। जाते वक्त कह गया था, "मुझे लौटने मे जरा देर होगी।"

सुरमा घर का काम खत्म कर मकान मालिक के यहा जाकर वोली, "मौमी, मै जरा वाहर जा रही हूँ।"

वुढिया मौसी को वडा ग्रजीव लगा। उसने कहा, "कहा जा रही हो वहू ?"

"ग्रपने रिश्ते के एक ह, उन्ही के यहाँ। उनके ग्राने से पहले ही वापस ग्रा जाऊँगी। जरा देखिएगा मौसी—"

दरवाजे को ग्रदर से वद कर सुरमा काफी दूर तक पैदल ग्रा

थी, वह बात अभी तक याद है। गोस्वामी वहाँ गाडी लिए खडा था। गाँव की सीधी-सादी प्राणलक्ष्मी पी० एल० ४८० के लालच मे घर छोडकर सडक पर आ खडी हुई। सन् १९४३ ई० मे पडे अकाल के दिनो इनसान ने घर-घर जाकर थोडी-सी भात की माडी और दो मुट्ठी खिचडी की भीख मागी थी। लेकिन इस तरह लज्जा-शर्म का तिलाजलि देकर आत्महनन के पथ पर मोटरगाडी पर चढना नहीं चाहा था।

"इनक्लाव !"

"जिन्दावाद !"

गोस्वामी ने कहा था, "कहो, तुम्ह कहाँ जाना है भाभो ?"

सुरमा कैसे कहती कि उसे कहा जाना है। इतना वडा कलकत्ता, यहा की सारी जगहे ही तो उसके लिए रहस्यमय ह। चलो लाला, कलकत्ता चलो।

तभी गोस्वामी के दिमाग मे एक वात आई। वह भाभी को कलकत्ता ही दिखाएगा। देखो, कलकत्ता देखो। वह देखो, कितनी वडी विल्डिग है। उधर देखो, कितनी वडी वस्ती है। वह देखो, राज भवन की ओर जुलूस जा रहा है, और उधर सिनेमा के टिकट के लिए कितनी लम्बी लाइन लगी है।

देखते-देखते सुरमा की आँखो के आगे सारा कलकत्ता घूम गया। अचानक ध्यान आया, रात हो गई। लाला किधर गये।

"लाला, लाला—"

सुरमा जैसे पागल हो उठी। लाला, लाला।

सुरमा को लग रहा था, उसे गाडी के ड्राइवर की हिफाजत म रखकर सवके सव पता नही कहाँ भाग गए ह ? सडक पर जुलूसवाला की भीड थी। ट्राम-वसो का चलना रुक गया था। गोस्वामी लाला मुझे अकेली गाडी म विठाकर कहाँ चला गया ? लाला आखिर गया कहा ?

"इनक्लाव !"

"जिन्दावाद !"

सुरमा को अभी तक डर नही लग रहा था। गाडी पर वठने की खुशी मे जैसे वह सव कुछ भूल गई थी। अव वह मन ही मन आत-

कित हो उठी । उसे लग रहा था, आसपास के लोग जैसे मुझे घूर-घूर कर देख रहे हैं । गाडी मे उसे छोडकर लाला आखिर कहाँ चला गया है ? कहाँ जाकर छिप गया ?

सुरमा इधर-उधर देखने लगी । आखिर लाल रह कहाँ गया ? कहाँ चला गया ?

"इनक्लाव !"

"जिन्दावाद !"

सहसा एक आर्त्तनाद मे साऊथ-ईस्ट एशिया की सारी खाली जगह भर गई। १९५४ की १० जुलाई के दिन अमेरिका की सीनेट मे एक कानून पास हुआ । लिखा गया—Be it enacted by the Senate & House of Representative आदि-आदि । अमेरिका की सीनेट से वोरिया भर-भर गेहूँ, आटा, मैदा, तम्वाकू वगैरह सव आने लगे । मोटी-मोटी किताबें आने लगी । यहा से मास्टर, विद्यार्थी और वैज्ञानिक भी जाएँगे तथा आने-जाने की इस फिहरिस्त मे वडे-वडे हरफा मे लिखा रहेगा—'भारत की समृद्धि के लिए अमेरिका का दान। पब्लिक लॉ ४८० ।'

इसी तरह अमेरिका का यह उदार दान सिफ इडिया को ही नही मिला । इडिया के साथ-साथ अफ्रीका, मलाया, ईरान और पाकिस्तान को भी मिला । इसके साथ किसी-किसी को वम-वारूद-पैटन टैंक और सैंवर जेट भी मिले । जितनी खैरात मिलती गई, चीजा की कीमतें भी उतनी ही वढती गईं, उतने ही लोग वेकार हुए, जितनी एड मिली, उतने ही नारे लगाए गए—इनक्लाव ! जिन्दावाद !

कौन ?

सयोगवश शिरीष वावू उधर ही जा रहे थे । गाडी में वैठे-वठे ही देखा—मेरी ही तो गाडी खडी है गली के मोड पर । कौन ? गाडी मे कौन वैठा है ?

रामधन उस गाडी को लेकर गोस्वामी को लाने गया था । गोस्वामी कहाँ गया ?

शिरीष बाबू ने रामधन की ओर देखकर कहा, "रामधन, इसे समझा तो दे कि मैं कौन हूँ।"

रामधन ने सुरमा को समझा दिया। शिरीष बाबू का नाम सुन सुरमा ने आश्चर्य से घूघट खीच लिया। इसके बाद सिर झुकाकर कहा, "लाला से मैंने आपका नाम सुना है।"

शिरीष बाबू ने कहा, "घबडाने की कोई जरूरत नही है, मैं खुद आपका घर पहुँचा देता हूँ।"

सुरमा ने कहा, "लेकिन अपने घर के सामन मैं आपकी गाडी से नही उतरूँगी, मुझे जरा दूर पर ही उतार दीजिएगा, नही तो सब देख लेंगे।"

गाडी चलने लगी थी। आगे की सीट पर ड्राइवर के पास शिरीष बाबू बठे।

सुरमा ने फिर कहा, "लाला मुझे ढूढ रहे होगे, बिना कहे चली आई।"

"ढूढने दीजिए, आप उसके साथ निकली क्यो ? किसलिए ?"

सुरमा ने कहा, "मैं घर के अन्दर ही रहती हूँ, कुछ भी देख नही पाती, इसी से लाला ने कहा था, मुझे मोटर मे बैठाकर सब दिखलाएँगे —मैं कभी मोटर मे नही बैठी।"

"गोस्वामी को आप कब से जानती है ?"

"वाह, लाला को क्या आज से जानती हूँ ? रोज मुझसे घूमने चलने को कहते है, इसी लिए सोचा, आज तो वे कालेज से देर करके वापस आएँगे, आज ही घूम आऊँ।"

शिरीष बाबू ने कहा, "और कभी भी किसी के साथ इस तरह कलकत्ता देखने न निकलिएगा, वह आपका लाला हो या और कोई। कलकत्ते मे किसी पर यकीन न करिए।"

सुरमा ने कहा, "लेकिन मैंने आप पर तो यकीन किया, आपका यकीन करके ही तो आपकी गाडी में बैठी हूँ।"

शिरीष बाबू ने कहा, "मुझ पर भी यकीन न करिए।"

"क्या ? ऐसा क्या कह रहे है ?"

"कलकत्ते मे किसी पर भी यकीन नही करना चाहिए, इसीलिए ऐसा कह रहा हूँ।"

"क्यो ! क्या यहा कोई भी अच्छा आदमी नही है ?"

इस वहू का जवाव सुनकर शिरीष वावू का वडी हैरत हुई। भले घर की ऐसी एक वहू को गोस्वामी यहाँ ले आया है। गोस्वामी एक नम्वर हरामी है !

"अच्छे आदमी ? अच्छे आदमी डिक्शनरो मे मिलेंगे—छपी कितावो मे मिलेंगे।"

कहकर थोडी दर सामने की ओर देखते रहे शिरीष वावू ! कौन जाने ऐसा क्या हुआ ? इससे पहले तो कभी शिरीष वावू को ऐसा नही हुआ। हमेशा खोजते फिरे है भोग का अवसर, सिर्फ भोग ही नही, अवैध सभोग के उपकरण। अपना व्यवहार देखकर वे खुद ही आश्चयचकित रह गए।

सुरमा को पहुचाने के वाद वापस आकर शिरीष वावू ने गोस्वामी को वुरी तरह डाटा।

"तुझे औरत की पहचान नही हुई गोस्वामी ? तू गाडी मे किसे ले आया था ? वह तेरी कौन है ?"

"जी, वह तो मेरे पडोस की भाभी है।"

"धत् वेवकूफ कही का, तुझम क्या अकल की कोई चीज ही नही रह गई ? काम निकालने के लिए क्या शर्म-हया नाम की कोई चीज नही रह गई है ? तुझे और कोई औरत नही मिली ? वाजार मे क्या छोकरिया का अकाल पड गया है ? इतने दिन हो गए तुझे यह काम करते हुए, तुझे इतनी भी समझ नही आई ?"

उस दिन गोस्वामी को वडा शर्मिदा होना पडा था। फिर ये सव वातें किसी से कही भी नही जा सकती। गोस्वामी के मन का दुख कोई नही समझता। कोई नही समझेगा कि उसे कितनी मेहनत करके गृहस्थी चलानी पडती है। कितनी मुश्किलो के वाद जाकर शिरीष वावू के लिए परमिट और लाइसेंस हासिल कर पाता है। वागची साहव भी हैरान रह गए थे। कहा था, "तुम्ह तो काफी मेहनत करनी पडती है गोस्वामी, कव के निकले हो ?"

इन सव वाता पर कोई ध्यान न देकर गोस्वामी ने रामधन से

पूछा, "क्यो रे रामधन, भाभी कहाँ गयी ? भाभी को तो गाडी मे बैठा छोड गया था ?"

"हजूर, उन्हे तो साहब अपनी गाडी मे ले गए।"

"ह, साहब यहाँ कहाँ से आ गए ? साहब इधर आए थे क्या ?"

बडे गजब की बात है ! चली कहाँ गई ? गाडी मे बैठाकर क्या साहब भाभी को बगीचावाली कोठी मे ले गए ! अजीब बात है ?

एस० के० बागची पीछे की सीट पर बैठा था। गोस्वामी ने पीछे मुडकर कहा, "हुजूर, हुक्म करें तो एक सिगरेट पी लू।"

जरा देर बाद ही बागची साहब ने कहा, "रोको—रोको—"

एक होटल था। ठीक होटल के सामने गाडी रुकी। बागची साहब के उतरते ही गोस्वामी ने याद दिलाई, "हुजूर, शनिवार की शाम को ठीक सात बजे—"

बागची साहब इस बात का कोई जवाब दिए बगैर सीधे अदर चले गए।
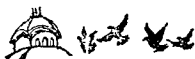
कालीघाट ट्राम-डिपो के सामने ही ये लोग बैठे रहते ह।

ट्राम और बसा से उतरनेवाले यात्रियो पर ये लोग पैनी नजर रखते ह। बहुत-से खुद ही बकरा खरीद लाते ह। बाहर से अच्छा-सा तगडा बकरा लाते ह। लेकिन काली मन्दिर के पास जो बकरे मिलत ह, वे देखने मे भले ही कम उम्र के लगते हा, लेकिन असल मे हात बूढे ह। ये लोग बकरा को भूखा रखकर मरियल बना देते है। कच्चा उम्र के बकरो की कीमत ज्यादा पडती है। इन बूढे और मरियल बकरो को ही ये लोग कच्ची उम्र का कहकर बेच देते हैं।

शुरू होता है ट्राम-डिपा के पास से ही। वही स मोलभाव, खीचतान, हाथापाई और मारपीट शुरू हो जाती है।

कोई चुपचाप पेड की छाया म सडक पर ही उकडू बैठा रहता है। कोई बीडी फूकता रहता है ता कोई सिगरेट पीता रहता है।

कोई इसी बीच एक कुल्हड चाय लेकर चुस्की लगाता रहता है।

लेकिन सबकी नजर एक ही ओर लगी रहती है। दूर से आते आदमी को देखते ही ये लोग पहचान लेते हैं। मूछें देखकर ही जैसे चूहा शिकारी विल्ली को पहचान लेता है। कोई नये कपडे पहनकर उतरता है, कोई नगे वदन ही। काली-टेम्पिल रोड के मोड से ही उन लोगो को देखा जा सकता है।

वे लोग पूछते हं, "कहिए माताजी, मदिर मे पूजा करनी है क्या ?"

कोई पूछता है, "माँ के दर्शन करेंगे वावूजी ? मैं मा का पुराना पडा हूँ, गगाजी मे स्नान कीजिए फिर पूजा चढाइए। मैं सारा इतजाम कर दूगा वावूजी।"

तभी उधर से कोई चीख उठता—"ए, भाग साले, भाग यहा से ! मेरे यजमान को फोड रहा है ! हुकुमचद भाटिया मेरा पुश्तैनी यजमान हे, उसी खानदान का है, हीरे के वटन देखकर पहचान नही पा रहा है ?"

जो लोग हीरे के वटन लगाकर आते ह, वे लाग पैदल नही आते। वडी-वडी गाडियो मे आते हं। विदेशी मुद्रा की कमी के इस जमान मे ये गाडियाँ कहा से आ जाती हैं, यह काई नही कह सकता। भारी-भरकम गाडियाँ एकदम पडो के पास आकर खडी होती हं, जैसे उसको अपने चपेट मे ले लेंगी। इस पर भी ये लोग पीछे नही हटते। किसी तरह सम्हलकर फिर से मोटर के पीछे-पीछे दौडन लगते ह। भागम-भाग दौडने लगते ह। दौडते-दौडते जहाँ आकर रुकते ह, वह मदिर का पिछवाडा है। वही से पाठ पढाना शुरू हो जाता है, "हजूर, म लछमन पडे का पोता हूँ, मैं मदिर का हेड-पडा हूँ।"

लेकिन जिस दिन हडताल हाती है, स्ट्राइक होती है, वसें और ट्रामें वद रहती है, और सडको पर पुलिस गश्त लगाती होती, उस दिन इन लोगो को वडी मुश्किल हो जाती। उस दिन कालीघाट के पडो और छडीदारो की शामत आ जाती है। उस दिन तरकारी-भाजी तक का खच नही निकल पाता। चार आना, तो चार आना ही सही। दो आना, तो दो आना ही सही। "दूकान मे जाकर तुम्हार नाम से सवा पाच आने की डाली सजाकर एकदम माँ के मस्तक पर

चढा दूगा। मैं लछमन पडे का पोता हूँ, मैं मदिर का हेड पडा हूँ–"

उस दिन इनक्लाव देखकर पडो को भी डर-सा लग गया था। आज लगता है, कोई यात्री नही आएगा। एक के वाद एक कई वीडियाँ फूककर भी कोई रास्ता नही सूझ रहा था। सुवह से एक यात्री भी दिखाई नही पडा।

लछमन पडे का पोता शिवकिशन असल मे पडा नही है, वह छडीदार है। फिर भी दो पैसे कमाने के लिए यजमान के आगे पण्डा कहकर अपना परिचय देना पडता है। शिवकिशन उस दिन वडे सवेरे उठ गया था। सुवह उठते ही स्नान कर लेना इन लोगा का नियम है। तव तक कालीघाट के मदिर मे दिन का प्रकाश नही पहुँचा था। इतनी सुवह भी टन्-टन् करके घटा वजता। यात्री आकर मदिर मे पूजा चढाते। मत्र पढते। इसके वाद जैसे-जैसे दिन निकलता, लोग कठघरे के आसपास जमा होते। किसी ने मनौती मानी थी कि वकरे की वलि चढाएँगे। कोई मुकदमे मे जीता है, हाईकोर्ट मे फैसला सुनाया गया है। साथ ही साथ एक तगडा-सा वकरा खरीदकर मा के नाम पर चढा दिया जाता। उस वकरे को गगा मे नहलाकर पुरोहित से पूजा करवानी हागी। पुरोहित को दक्षिणा देनी पडेगी। इसके वाद ही वलि होगी। लुहार लोग सात पुश्तो से यह काम करते आ रहे हैं। मदिर मे आये पुण्यार्थिया की वासना, कामना और आकाक्षाआ की वलि दे लेने के वाद मेहनताने के साथ ही साथ वकरे का सिर भी उनको मिल जाता है।

लेकिन उस दिन कोई नही आया। सारा मदिर जैसे भाय-भाय कर रहा था। यात्री नही है, फिर भी हेड-पुजारी ने टन्-टन् घटा वजाया। ठीक उसी वक्त ट्राम-रास्ते के मोड पर ही वुधुआ की टोली दिखाई पडी। कधे पर एक तगडा-सा वकरा था। अव कोई शक नही रहता। देखते ही पहचान जाता।

"जय, काली माई की जय!"

शिवकिशन दौडकर वुधुआ से चिपट गया। और उस ओर से या काली हालदार। वह इतनी देर से एक अद्धा ईंटे पर वैठा वीडी पी रहा था।

वह वुधुआ पर झपटा। जय काली माई की जय!

"इनक्लाव।"

"जिन्दावाद।"

मानो साथ ही साथ गरज उठा यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका। हम लोग एड दे रहे है, बदले मे तुम लोग सलाम क्यो नही करते ? नमकहराम, अनग्रेटफुल, हम तुम लोगो के लिए कितना कुछ कर रहे हे, तुम लोगो के पास फूड नही है, इसलिए तुम लोगो पर कितना तरस खा रहे है, दया कर रहे हे। हम अपने यहाँ बचे गेहूँ, चावल, दूध वगैरह सब कुछ तुम्हारे लिए भेज रह हे, और तुम लोग धन्यवाद तक नही देते।

स्ट्रैण्ड होटल के कमरे मे बैठा जूडी हॉवसन भी यही बात कह रहा था।

इसी होटल मे अमेरिका से एक और टोली आकर ठहरी है। फाउण्डेशन का रुपया मिलने पर डेवेलपिग कट्री के लोगा के कल्याण के लिए वडी मुश्किल से टोली वनाकर यहा आये है। ये लोग मालूम करने आये है कि कलकत्ते की समस्याएँ क्या हे ? इस कलकत्ते के लोग चाहते क्या है? जानने आये हे कि यहा पर वसा और ट्रामो मे इतनी भीड क्यो होती है। जानने आये है कि इस भीड को किस तरह कम किया जा सकता है। इसके अलावा यह भी जानने आये है कि यहाँ के लोगा की आर्थिक दशा कैसी है, यहाँ के आदमी पीछे औसत आमदनी क्या हे। इन गरीव आदमियो को किस तरह कम्युनिस्टो के हाथ से वचाया जा सकता हे।

जूडी ने कहा, "डू यू नो मिस्टर पारकिन्सन, क्या तुम्ह मालूम है कि, यहा के भूखे लोग आज भी अग्रेजो को चाहते हे ?"

'ह्वाइट लेवल' के ग्लास से घूट भरने के वाद मिस्टर पारकिन्सन न कहा, "हाऊ इज दैट ?"

"यस, मैंने उन लोगो से वात की है। दे वाण्ट अस, दि ब्रिटिश। दे हैव टोल्ड मी सो—उन लोगा ने मुझे यही वताया है–"

पारकिन्सन को तव तक नशा चढ चुका था। उसने कहा, "वैरी इटरेस्टिग—फिर ?"

फाउण्डेशन के लोग इडिया के रुपये से काफी दूर देश से यहा आय ह। एक ही दिन मे ह्वाइट लेवल और सिगरेट पीकर काफी

रुपया फूक चुके ह । काफी तकलीफ उठाकर फाउण्डेशन के मेम्बरा न इस समस्या पर सिर खपाया है । फिर भी समस्या का काई समाधान नही हुआ है । सेण्टर कहता है, पैसा नहीं है, ह्वाइट-हाऊस कहता है, रुपये हम देंगे । लेकिन इडिया के फाइनन्स मिनिस्टर ने कह दिया कि हम कलकत्ते पर इतना रुपया खच करने नही देंगे ।

"क्या ?"

इस क्या का जवाव मिलने मे सालो गुजर गए । फाउण्डेशन की ओर से एक के वाद एक एक्सपर्ट्स की टोलियाँ आयी और प्लान वनाया । यहा सर्कुलर रेल होगी, आदमियो को अव चमगादड की तरह लटकते हुए आफिस और कचहरी नही जाना पडेगा । यहाँ के इनसान खा सकेंगे, पहन पाएँगे, जिंदा रह सकेंगे, इनसान की तरह सिर उठाकर चल सकेंगे । एक्सपर्ट्स की टोलियाँ तो यही प्लान दे गइ । लेकिन

काफी रात गये वात करते करते एक्सपर्ट लोगो की आख नशे की खुमारी से मुंद-मुंद आती । दिन भर कलकत्ते के लोगो के वारे म सोचते-सोचते वे लोग परेशान हो उठे ह । उस १० जुलाई, १९५४ से जिस दिन पी० एल० ४८० का कानून पास हुआ, इन लोगो ने आना जाना शुरू किया है, और इडिया की उन्नति की वात सोचकर परेशान होते रहे ह ।

सिर्फ मास्टर पारकिन्सन ही नही, साथ मे और भी अनेक एक्सपर्ट्स हैं । ह्वाइट लेवल के नशे म वे लोग कलकत्ता-वासिया की दुदशा को भुला देना चाहते हैं । इसके वाद जव इन्क्वायरी पूरी हो गई तो एक दिन प्रेस कान्फ्रेन्स वुलायी गई । अखवार के रिपोटरा को बुलाकर कॉफी और काकटेल पार्टी दी गई ।

प्रेस कान्फ्रेन्स मे मिस्टर पारकिन्सन ने कहा, "इण्डिया एक डेवेलपिंग कट्री है । एक दिन यह शहर पाच लाख लोगो के लिए वना था, लेकिन अव लोगो की तादाद वढ गई हे । आज यहा साठ लाख की आवादी रह रही है, लेकिन यह शहर वढा नही है । शहर मे पानी की सप्लाई नही वढी, मकाना की कमी पूरी नही हुई, और शहर की गदगी के साफ किए जान का इन्तजाम नही हुआ है । लेकिन हम लोग इस शहर के लोगो को वचाने के लिए आय है । क्योकि हम

समझ गए है कि इस शहर को बचाए बिना इण्डिया का बचना नामुमकिन है, और इस कलकत्ते शहर को बचाने के लिए इसके कॉमर्स, इसके कल्चर, इसकी समाज-व्यवस्था, इसकी घर-गृहस्थी और इसके निवासियो को बचाना पडेगा। एक दिन युद्ध हुआ था, जिसे सेकेण्ड ग्रेट वल्ड वार कहते है। उस युद्ध मे कलकत्ते ने बडी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह कलकत्ता तब साऊथ-ईस्ट एशिया का सप्लाई-बेस था। इस सप्लाई-बेस से ही यहाँ के इनसानो ने दुनिया की शान्ति के लिए धन दिया, सम्मान दिया, जीवन दिया और दिया खाद्य। और भी जो कुछ जुटा पाया, दिया। इसके फलस्वरूप कलकत्ते को ही दुर्भिक्ष का सामना करना पडा। मुल्क का बँटवारा हुआ, तो इस शहर मे और इसके आसपास रिफ्यूजियो ने आकर शरण ली। इसलिए पोस्ट इडिपेंडेंट इंडिया के हित मे इस शहर ने जो भी त्याग किए है उनके लिए इसे कोई कीमत नही मिली, कोई स्वीकृति नही मिली। इसीलिए इस शहर के इम्प्रूवमेंट के लिए मेट्रोपोलिटन प्लानिंग आर्गनाइजेशन की ओर से हम एक्सपर्ट लोग आए है। आशा है, अब इस शहर की बहुत दिनो पुरानी कठिनाइया दूर होगी। जल्दी ही जिससे ऐसा हो उसका इन्तजाम हम कर रहे है। बडी खुशी के साथ हम एलान कर रहे है, हम जो प्लान बना रहे है वह जल्दी ही कार्यरूप मे परिणत होगा।

प्रेस कान्फ्रेन्स मे जो कुछ भी तय होना था, वह हुआ। कुछ कलम, कुछ कागज और कुछ स्याही खराब हुई, और एक्सपर्ट्स रिपोर्ट देकर दमदम एयरपोर्ट मे जाकर प्लेन मे बैठे।

लेकिन फिर भी सुसी जैसी लडकिया घर नही लौटी। अरविन्द वगैरह भी एक किलो गोश्त खरीदकर गोपाओ को खिला नही पाए। अरविन्द की माओ की अधी आखो पर चश्मा नही चढा। शिरीष बाबुओ की रबडी खाकर वे अफीम के नशे की खुमारी मे डूबी रही।

और उधर पी० एल० ४८० का कर्ज बढता ही गया।

उस दिन फिर टलीफोन आया।

"कौन ?"

"मैं गोस्वामी हूँ वेणु दी।"

"क्या खबर है ?"

'मैंने उस दिन तुम्हे टलीफोन किया था। तुम नही थीं।"

वेणु दी ने कहा, "काम की बात टेलीफोन पर नही होती भाई, तुम सामने आओ। यहाँ आकर बात करनी पडेगी।"

ठीक है। गोस्वामी ने उस दिन गलती की थी। मन ही मन उस दिन बहुत अफसोस किया था।

शिरीष बाबू ने कहा, "तुझमे जरा भी अक्ल नहीं है गोस्वामी! लगता है, तुझे किसी दिन जेल की हवा खानी पडेगी—क्या सोचकर अपने मोहल्ले की बहू को गाडी मे बिठा लाया था, जरा मैं भी तो सुनूं, तुझे यह बुद्धि किसने दी ?"

गोस्वामी ने कहा, "बुद्धि किसी ने नही दी सर, भाभी ने खुद ही कहा था। भाभी अरसे से मोटर गाडी मे बैठकर कलकत्ता देखना चाह रही थी।"

"इसके माने तू भले घर की बहुओ की बलि चढाएगा ?"

गोस्वामी ने सिर खुजलाते-खुजलाते कहा, "आजकल तो सर ऐसा अक्सर हो रहा है।"

"होने दे। तू एकदम गधा है! तुझमे अक्ल नाम की चीज जरा भी नही है! बागची ने क्या भले घर की बहू-बेटी की माँग की है ?"

"नही, ऐसा तो नही है। बागची ने तो लडकी के बारे मे कुछ कहा ही नहीं।"

"यह सब क्या कोई अपने मुँह से कहता है ?"

गोस्वामी ने कहा, "मैंने सोचा था, वागची साहब को जरा ज्यादा खुश कर दूगा।"

शिरीष वावू ने कहा, "खवरदार! हर तरह से सोच-समझकर काम करना।"

फिर वही वात तय हुई। गोस्वामी रुपए जेव मे रखकर गाडी मे जा वैठा। फिर वहा से सीधे पार्क स्ट्रीट के ग्रीन-ग्रोव मे पहुँचा।

उस वक्त शाम के ठीक सात वजे थे।

एक वडा सा केविन देखकर उसमे जा घुसा। होटल के वॉय ने आकर सलाम किया।

और साथ ही साथ वागची साहव आ पहुंचे।

"आ गए? मैं आपके लिए कव से आस लगाए वैठा हूँ। वैठिए सर।"

एस० के० वागची वैठ गया।

"क्या लेंगे?"

वागची ने कहा, "ब्लैक डॉग।"

ब्लैक डॉग आया। एस० के० वागची का वडा ही फेवरिट ड्रिंक।

"आप भी लेते है क्या?"

गोस्वामी ने कहा, "विना आपसे हुक्म मिले, कैसे पी सकता हूँ सर?"

एक घूट पीकर ही गोस्वामी उठ खडा हुआ।

"सर, वुरा न मानिएगा, एक भूल हो गई है, चावी भूल आया हूँ।"

"कैसी चावी?"

"ऑफिस के कैश की चावी। मैं जाऊँगा और आऊँगा।"

इसके वाद ही अचानक पाकेट से नोटो की गड्डी निकाली।

फिर कहा, "हुजूर, ये रुपए अपने पास रख लीजिए।"

"क्यो? रुपए क्यो रखू?"

"अपने पास थोडी देर रखिए हुजूर, अगर मेरे वापस आने मे देर हो जाए।"

कहकर खडा हो गया। फिर जल्दी से वाहर गाडी मे आ वैठा। वोला, "जल्दी करो रामधन, जरा भवानीपुर जाना है। जल्दी करो।"

उस दिन फिर टेलीफोन आया।

"कौन ?"

"मैं गोस्वामी हूँ वेणु दी।"

"क्या खबर है ?"

'मैंने उस दिन तुम्हे टेलीफोन किया था। तुम नही थी।"

वेणु दी ने कहा, "काम की बात टेलीफोन पर नही होती भाई, तुम सामने आओ। यहाँ आकर बात करनी पडेगी।"

ठीक है। गोस्वामी ने उस दिन गलती की थी। मन ही मन उस दिन बहुत अफसोस किया था।

शिरीष बाबू ने कहा, "तुझमें जरा भी अक्ल नहीं है गोस्वामी! लगता है, तुझे किसी दिन जेल की हवा खानी पडेगी—क्या सोचक अपने मोहल्ले की बहू को गाडी मे बिठा लाया था, जरा मैं भी तो सुनू तुझे यह बुद्धि किसने दी ?"

गोस्वामी ने कहा, "बुद्धि किसी ने नही दी सर, भाभी ने खुद ह कहा था। भाभी अरसे से मोटर गाडी मे बैठकर कलकत्ता देखन चाह रही थी।"

"इसके माने तू भले घर की बहुओ की बलि चढाएगा ?"

गोस्वामी ने सिर खुजलाते-खुजलाते कहा, "आजकल तो सर ऐर अक्सर हो रहा है।"

"होने दे। तू एकदम गधा है! तुझमे अक्ल नाम की चीज ज भी नही है! बागची ने क्या भले घर की बहू-बेटी की माग है ?"

"नही, ऐसा तो नही है। बागची ने तो लडकी के बारे मे कुछ क ही नही।"

"यह सब क्या कोई अपने मुँह से कहता है ?"

गोस्वामी ने कहा, "मैंने सोचा था, वागची साहव को जरा ज्यादा खुश कर दूगा।"

शिरीष वाबू ने कहा, "खवरदार! हर तरह से सोच-समझकर काम करना।"

फिर वही वात तय हुई। गोस्वामी रुपए जेव मे रखकर गाडी में जा वैठा। फिर वहाँ से सीधे पाक स्ट्रीट के ग्रीन-ग्रोव मे पहुँचा।

उस वक्त शाम के ठीक सात वजे थे।

एक वडा सा केविन देखकर उसमे जा घुसा। होटल के वॉय ने आकर सलाम किया।

और साथ ही साथ वागची साहव आ पहुचे।

"आ गए? मैं आपके लिए कव से आस लगाए वैठा हूँ। वैठिए सर!"

एस० के० वागची वैठ गया।

"क्या लेंगे?"

वागची ने कहा, "ब्लैक डॉग।"

ब्लैक डॉग आया। एस० के० वागची का वडा ही फेवरिट ड्रिंक।

"आप भी लेते है क्या?"

गोस्वामी ने कहा, "विना आपसे हुक्म मिले, कैसे पी सकता हूँ सर?"

एक घूट पीकर ही गोस्वामी उठ खडा हुआ।

"सर, वुरा न मानिएगा, एक भूल हो गई है, चावी भूल आया हूँ।"

"कैसी चावी?"

"ऑफिस के कैश की चावी। मैं जाऊँगा और आऊँगा।"

इसके वाद ही अचानक पॉकेट से नोटो की गड्डी निकाली।

फिर कहा, "हुजूर, ये रुपए अपने पास रख लीजिए।"

"क्यो? रुपए क्यो रखू?"

"अपने पास थोडी देर रखिए हुजूर, अगर मेरे वापस आने मे देर हो जाए।"

कहकर खडा हो गया। फिर जल्दी से वाहर गाडी मे आ वैठा। वोला, "जल्दी करो रामधन, जरा भवानीपुर जाना है। जल्दी करो।"

"इनक्लाव !"

"जिंदावाद !"

"बोलो भाई इनक्लाव ! जिंदावाद !!"

अरविन्द जरा अनमना हो गया था। कलुआ फटिक ने कहा, "क्या सोच रहे हो अरविन्द बाबू—नारा लगाओ, नारा—"

अरविन्द ने नारा लगाया, "इनक्लाव, जिंदावाद।"

कलुआ फटिक ने जेब से न जाने क्या निकालकर मुंह में रख लिया।

'क्या खा रहे हो भाई?"

कलुआ फटिक ने कहा, "मूंगफली—दो आने की खरीदकर जेब में डाल ली थी, भूख लगे तो काम आएगी। आप भी तो खरीदकर रख सकते थे।"

अरविन्द ने कहा, "मुझे तो मालूम नहीं था, अब थोड़ी-थोड़ी भूख लग रही है।"

कलुआ फटिक ने कहा, "खाने के लिए मैं आटे की रोटी ले आया हूं, आपको भी दूंगा।"

अरविन्द बोला, "आटे की रोटी? क्या तुम सब लेकर आए हो?"

कलुआ ने कहा, "कई लोग लाए हैं, कोई-कोई पराठे और आलू दम को प्लास्टिक के पैकेट में बांधकर लाए हैं। आपको फिक्र करने की कोई जरूरत नहीं है। जरा देर बाद ही सबको क्वाटर-पौण्ड पावरोटी मिलेगी—"

"कौन देगा?"

"क्यों हम लोग जो इतनी मेहनत कर रहे हैं, क्या ऐसे ही? हम लोगों की मेहनत नहीं हो रही है! वापस लौटते वक्त हमें बस का किराया भी मिल जाएगा।"

हां, तो वही हुआ। जरा देर बाद एक सरगना किस्म का आदमी टोकरी भरकर पावरोटी लेकर आगे-आगे दौड़ने लगा—"लाइन मत तोड़ो, दो-दो की लाइन बनाकर चलो।"

पावरोटी के लालच में जिन्होंने लाइन तोड़नी चाही थी, वे लोग लाइन बनाकर चलने लगे। अब ज्यादा देर नहीं है। अब थोड़ी दूर पैदल चलते ही राजभवन आ जाएगा। किसी एक ने कहा, "वहां तो

लाठी लेकर पुलिस के सिपाही तैनात है। आगे वढने नही देंगे। न वढने दे, लेकिन हम लोग फिर भी आगे वढेंगे। पुलिस हमे रोकने की हिम्मत कैसे कर सकती है ?"

फिर एक वार शोर मचा। "पावरोटी ! पावरोटी !"

"सभी को पावरोटी मिलेगी। कोई लाइन न तोडे। इनक्लाव ! जिदावाद !"

"क्या हुआ अरविन्द वावू ? इतने अनमने क्यो हो रह है ? सामने से पावरोटी चली गई, आपने नही ली ?"

सचमुच अरविन्द को ध्यान ही नही था। सुसी के घर से चले जाने के वाद से उसका मन खराव हो गया था। जमानत पर छूटी आसामी थी, दिलीप दा पता नही, क्या सोचेंगे। सुसी का अगर पता न लगे, वह अगर वापस न लौटे ?

मा ने उस दिन कहा था, "क्यो रे, तेरा वह दोस्त अव नही आता ?"

"कौन दोस्त ?"

"वही जो काफी वडा रईस है, एक किलो रवडी दे गया था। वडी अच्छी रवडी थी। वैसी रवडी पहले कभी भी नही खाई थी !"

अरविन्द चिढ गया था। उसने कहा था, "वह क्यो आएगा ? तुम्हारे लिए रवडी क्या लाएगा ? इस घर मे आने पर उसकी कोई खातिरदारी होती है ? कोई उसके हाथ मे चाय का एक कप तक रखता है ? उसकी क्या इज्जत नही है ?"

"क्यो, वह क्या इतना भी नही कर सकती ? मेरी तो आखें ही चली गई, अधी हो गई हूँ, नही तो खुद ही खातिरदारी कर देती।"

अरविन्द ने कहा, "क्या, तुम्हे छोडकर क्या खातिर करनेवाला घर मे कोई नही है ? तुम्हारी विटिया रानी वस खाएँगी और आवारा-गर्दी करती फिरेगी। वह जरा चाय का प्याला भी नही वढा सकती ह ?"

"इनक्लाव !"

"जिंदावाद !"

"अरे अरविन्द वावू, ऐसे अनमने से क्या हो रहे ह ? आवाज लगाइए, इनक्लाव जिंदावाद ! वोलो ! इनक्लाव ! जिंदावाद !"

इसी बीच न जाने कौन आकर अरविन्द के हाथ मे क्वार्टर पौण्ड पावरोटी थमा गया। अब ज्यादा देर नही है। बडे होटल के नजदीक तो आ ही गए है। होटल की दूसरी मंजिल के बरामदे मे खडे गोरे साहब और मेमे झुककर देख रही थी।

"बोलो भाई, इनक्लाव! जिन्दाबाद!"

मिस्टर पारकिन्सन आए थे, सी० एम० पी० ओ० के काम मे एड-वाइस देने। फॉरेन एक्सपर्ट ठहरे, मोटी तनख्वाह पाते ह। सब मिला-कर महीने मे सोलह हजार रुपये। लडाई के दौरान अमेरिकन आर्मी की मदद की है। पारकिन्सन हिसाब लगा-लगाकर बतला देते थे कि कितने प्वाइण्ट पर तोप दागने पर कितनी दूर जाकर गोले गिरेंगे। कई बार एनिमी टार्जेट पर अचूक निशाना लगता भी था। सब मिस्टर पारकिन्सन का कृतित्व था। अब उन्ह कलकत्ते की उन्नति करने के लिए इडिया भेजा गया है। साहब आकर इसी स्ट्रैण्ड होटल मे ठहरे ह और कलकत्ते के नेताओ के साथ मुलाकात कर रहे है।

अचानक सडक पर शोरगुल होने लगा, तो मिस्टर पारकिन्सन बरामदे मे आकर खडे हो गए।

पूछने लगे, "ह्वाट इज दैट ?"

जूडी और क्लारा पास ही खडे थे। जूडी ने कहा, "दैट इज दैट—"

नीचे से अरविन्द ने ऊपर की ओर ताका। कलुआ फटिक ने देखा, और सबो ने भी देखा।

अरविन्द ने कहा, "ये लोग मजे मे है, है न कलुआ ?"

कलुआ फटिक ने कहा, "अरविन्द बाबू, ये ही लोग तो आजकल इडिया की गाडी चला रहे ह।"

"क्यो ?"

अरविन्द को बडा अजीब लगा। 'ये लोग कैसे चला रह ह ? हम लोग तो अब आजाद हो गए ह। अग्रेज तो अब चले गए ह।"

"अरे नही। किसने आपसे कहा कि अग्रेज चले गए ह ?"

अरविन्द ने कहा, 'है! अग्रेज अभी तक नही गए ?"

"नही गए। आप हमारी मीटिंग म नही आए थे। हमारे लीडर ने उस दिन यही तो कहा था। पी० एल० ४८० का नाम सुना है ?"

"नही तो ! वह क्या है ?"

कलुआ फटिक वगैरह पढना-लिखना भले ही न जानें, चाय की दूकान पर बैठे-बैठे-रात-दिन बैठकवाजी करते हे, लेकिन सारी खवरें रखते हे । सारी दुनिया की अदरूनी खवरें इनकी जवान पर रहती ह । रूस इडिया को 'मिग' देगा या नही, पी० एल० ४८० माने क्या है, पाकिस्तान अमेरिका के गुट में है या चीन के, इन लोगो को सव मालूम रहता है। इस तरह वाते करते रहते है कि जॉनसन या कोसिगिन या विलसन इनके कधे पर हाथ रखकर गप्प लडाते है, कहते ह, 'अग्रेजो के चले जाने से क्या होता है, अव उनकी जगह अमेरिका आ गया है ।"

"किस तरह ? कहा आए ह ? दिखाई तो नही पडते ?"

कलुआ फटिक ने कहा, "यही तो हिकमत है भाई, पी० एल० ४८० तो यही हिकमत है । पता है, हम अमेरिका के ५९४ करोड रुपये के कर्जदार है । आपके और हमारे सिर पर इस कर्ज का वोझ लदा है ।"

"तुझसे किसने कहा ?"

कलुआ फटिक ने कहा, "वह जो पावरोटी दे रहा है न, उसी ने वतलाया है—आज अगर जॉनसन रुपया माँग वैठे तो इडिया की हालत खराव हो जाएगी—इसीलिए तो डिवैल्युएशन हुआ है ।"

ये सव अरविन्द के लिए जाननेवाली वातें नही ह। फिर भी कलुआ फटिक की वातें सुनकर अरविन्द को वडा अजीव लगा। उसने कहा, "इसके माने अव अमेरिका ही हम लोगो का मालिक है ?"

"इसके अलावा और क्या है ?"

अचानक उधर से आवाज आई, "वोलो भाई, इनक्लाव ! जिन्दावाद—"

औरो के साथ अरविन्द भी चिल्ला उठा, "इनक्लाव ! जिन्दा-वाद ।"

मिस्टर पारकिन्सन की ओर देखकर जूडी हॉवसन ने कहा, "लुक-लुक–लुक एट द फन—"

मिस्टर पारकिन्सन अमेरिकन आर्मी के एक्सपर्ट है। नव युद्ध

सजीदगी से देखने लगे। इसके वाद एक अमेरिकन सिगरेट सुलगाते हुए वोले, "यस, दे आर ऑल कम्युनिस्ट्स—"
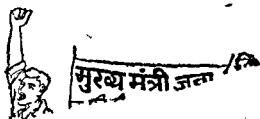
बुधुआ को लेकर खीचतान मच गई थी। कालीघाट ट्रामडिपो के सामने ही काली हालदार ने बुधुआ के वकरे की गदन पकड ली। उसने कहा, "इधर आओ, हम सव ठीक करा देगा—"

शिवकिशन छडीदार भी कम नही था। उसने कहा, "तू भाग यहा से, यह हमारे मुल्क का है, हमारा जिजमान है—"

लेकिन सिफ वे ही तो नही थे। कालीघाट मे और भी पडे है। वे सव भूखे खटमलो की तरह रोजाना चुपचाप ओट मे छिपे रहते हैं और यात्री दिखाई पडते ही उनकी गर्दन पकडकर खून चूसना शुरू कर देते। वे सव भी न जाने कहा से आ धमके। वे लोग भी खीचा-तानी करने लगे।

बुधुआ ने कहा, "ये क्या है भैया। काहे दिक कर रहे हो?"

बुधुआ की वुढिया मा तो डर गई, "ओ बुधुआ, इ लोग का कहत हउवे?"

बुधुआ की लडकी और वहू भी घवडा गई थी। खीचतान मे उनके कपडो मे वँधी गाँठ खुल सकती थी। बुधुआ की वहू ने अपनी लडकी का हाथ पकडकर उसे अपनी ओर कर लिया। कही भीड मे खो न जाए।

और उधर भवानीपुर मे एक सिनेमा हाऊस के सामने आकर गोस्वामी ने कहा, "रामधन, जरा रोक के—रुकना जरा यहाँ पर।"

गाडी से उतरकर गोस्वामी सामनेवाले मकान की सीढियाँ जल्दी-जल्दी चढकर ऊपर एक फ्लैट का दरवाजा खटखटाने लगा।

छेद मे से अच्छी तरह देख लेने के वाद वेणु दी ने दरवाजा खोल दिया।

"क्या हाल है गोस्वामी ? मैं कहती, क्या तुम्हें इतने दिनों बाद वेणु दी की याद आई ?"

गोस्वामी ने कहा, "वाह रे वाह ! खूब कहा । मैंने तुम्हें बार-बार टेलीफोन किया, लेकिन तुम मिलती हो नहीं ।"

"अरे ! तुमने मुझे टलीफोन किया ? कब ?"

"पूछ लो, तुम्हारे यहा कोई थी, उसी ने फोन रिसीव किया था । पूछो उससे ।"

"मेरे यहा और कौन होगा ? एक सुसी है ।"

"सुसी कौन ?"

"अरे ! तुम सुसी को नही जानते ? मेरी लडकी है, बडी अच्छी लडकी है । जहाँ जाएगी, घर रोशन कर देगी ।"

गोस्वामी ने कहा, "नही नही, मुझे घर रोशन नही करवाना, दो घंटे का मामला है, एक इम्पोर्ट लाइसेन्स के सिलसिले मे ।"

"इम्पॉर्ट लाइसेंस ? तब तो भैया, रेट जरा बढाना पडेगा ।"

गोस्वामी ने कहा, "रेट की परवाह मत करो । तुम जितना मागोगी, मिल जाएगा ।"

वेणु दी ने कहा, "एक बात और, तुम्हारी पार्टी कोई बदतमीजी तो नहीं करेगा ?"

"बदतमीजी माने ?"

"यही जैसे किस-विस लेना बिलकुल नही चलेगा । बदन मे भी हाथ नही लगा पाएगा ।"

गोस्वामी ने हैरान होकर कहा, "यह क्या कह रही हो ? बिना किस लिए कैसे काम चलेगा ? और सिफ किस ही क्या, मेरी पार्टी अगर उसके साथ सोना चाहे, तो मै क्या कहकर रोकूँगा ?"

वेणु दी जैसे साप देखकर दस कदम पीछे हट आई ।

उसने कहा, "नही भैया, यह नही हो सकता । मेरी सुसी कोई बाजारू लडकी है क्या ? मेरे पास तुम्हें वह सब नहीं मिलेगा । लाख रुपये खर्च करके भी नही । मेरे सारे ग्राहक [illegible] हैं । तुम्हें उस तरह की चीज चाहिए तो सोनागाछी जाओ । मेरी लड़की सुसी जमीन खरीदेगी, मकान बनवाएगी, इसीलिए [illegible] [illegible] पर [illegible] धधा कर रही है । बाद मे [illegible]

करेगी, घर वसाएगी। मेरी सुसी भले घर की लडकी है, मुझसे ये सब बातें मत करो भाई।"

"ठीक है, वही सही।"

"एडवान्स कितना देना पडेगा ?"

"पहले यह बतलाओ, कितने घंटे रुकना पडेगा ?"

"यही समझ लो, कोई तीन घंटे—इससे ज्यादा नहीं। पी-पाकर पार्टी जब बेहोश हो जाएगा, मैं खुद तुम्हारी लडकी को घर पहुँचा दूंगा।"

"ठीक है। यही सही।"

कहकर वेणु दी अंदर वाले कमरे में जाकर वोली, "सुसी बेटी, वह आदमी आ गया है, चलो।"

सुसी ने कहा, "रेट वगैरह की बात तुमने कर ली है न ?"

वेणु दी ने कहा, "हाँ बेटी, एकदम पक्का इंतजाम कर दिया है, डरने की कोई बात नहीं है, यह भी स्टुडेंट है। तुम तो जानती ही हो, मेरे यहाँ ब्लैक मार्केटवालों के लिए कोई ठौर नहीं है—मेरे सारे ग्राहक स्टुडेंट है।"

सुसी सज-सँवरकर तैयार ही थी। फिर भी एक वार शीशे में अपना चेहरा ठीक से देखने के बाद दरवाजा खोलकर बाहर आयी।
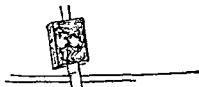
राजभवन के सामने तब तक पुलिस ने जबदस्त घेरा डाल दिया था। एक मक्खी के भी अंदर जाने की गुंजाइश नहीं थी। पुलिस कमिश्नर का स्ट्रिक्ट ऑर्डर था। राइफल, बन्दूक और टियर-गैस, सब कुछ तैयार था। जरा-सा भी आगे बढ़े कि तुम्हारी छाती में बुलेट विंध जाएगा। काफी दिनों बाद किन्नरकंठी एम० एस० शुभ-लक्ष्मी मद्रास से गाना सुनाने के लिए कलकत्ते आई है। शुभलक्ष्मी का गाना सुनकर राजभवन के राजपुरुष जरा देर के लिए परेशानी भूलना चाहते है। इसीलिए इस बार कलकत्ते के राजभवन के अंत पुर में गायिका को बुलाया गया है। देश में खाद्य संकट है, लेकिन गाना सुनना कोई गैर-कानूनी थोड़े ही है। एक के बाद दूसरा गीत गाती

जाओ शुभलक्ष्मी ! तुम्हारे गाने से कलकत्ते मे प्राणलक्ष्मी का आविर्भाव हो। राजभवन मे राजपुरुष का सिंहासन शुभ हो। ऐसा स्वस्तिवाचन करो जिससे मेरा राजसिंहासन अटल वना रहे।

शुभलक्ष्मी एक के वाद दूसरा गीत गाती गई। ख्याल—ठुमरी—भजन।

राजपुरुष ने कहा, "अव एक वगला गाना हो जाए। सुना है, आप वगला गीत भी गा लेती है।"

शुभलक्ष्मी ने बगला गीत शुरू किया—गुरुदेव रवीन्द्रनाथ का गीत—

"हे नूतन, देखा दिक आरवार
जन्मेर प्रथम शुभक्षण !

अचानक लगा, जैसे वाहर कोई चिल्ला रहे है। जैसे वहुत सारे लोग नारा लगा रहे है। वडी ककश आवाज थी। नूतन के आविर्भाव के साथ वह कर्कश चीत्कार जैसे वडा ही वेढगा लगा। इसीलिए पुलिस के सिपाही चौकन्ना हो उठे—होशियार—

एक ह्विसिल की आवाज से जैसे सारा एसप्लैनेड मानो टूट-विखर गया।

"वोलो, इ नक्लाव !"

"जिन्दावाद !"

अरविन्द ने अचानक देखा, पता नही कव किसी को मालूम हुए वगैर वह लाइन मे सवसे आगे आ खडा हुआ है। कलुआ फटिक कहाँ गया ? आसपास मे कितने ही अजनवी लोग थे। वह किसी को भी पहचान न पाया। पता नही, न जाने कहा से किसी ने आकर उसे हिम्मत वँधाई। जसे कोई कह रहा था—आगे वढो अरविन्द, आगे वढो। चिल्लाओ—इनक्लाव ! जिन्दावाद ! यह हिचक कैसी ? सकोच कैसा ? देश तो अमेरिका के हाथ मे है। पाच सौ चौरानवे करोड रुपए का कज चढा है, याने हरेक के ऊपर आठ हजार रुपए का लोन। तुम भी कजदार हो ! तुम्हारा कौन है, जो इतना डर रहे हो ? तुम्हारी सुसी तो भाग गई है, तुम्हारी माँ अधी है और तुम्हारी

१ गोपा बीमार है। दुनिया में तुम्हारा कोई भी अपना नहीं है। तुम किसके लिए फिक्र कर रहे हो ?

"इनक्लाव !"

"जिन्दावाद !"

"जय, काली माई की जय !"

बुधुआ की टोली जैसे पानी के रेले में तिनके की तरह बहते हुए मंदिर की ओर बढ़ रही थी। बुधुआ को पाकर जैसे सबको एक खुराक मिल गई है। बुधुआ जैसे लोग ही तो माँ काली की खुराक हैं। माँ काली की खुराक, मा के पंडा की खुराक, रूस और अमेरिका की खुराक। साथ ही पी० एल० ४८० की भी खुराक। एक ओर काली हालदार था और दूसरी ओर शिवकिशन। बुधुआ जैसे लोग दोनों के ही यजमान हैं। बुधुआ जैसों की बदौलत ही तो इन लोगों की रोजी चलती है। एक ने इंडिया का गला दबा रखा है, और दूसरे ने दाना पाँव। एक ओर है अमेरिका, और दूसरी ओर रूस।

मिस्टर पारकिन्सन ह्विस्की की बोतल सामने रखकर आहिस्ते-आहिस्ते गिलास से चुस्की लगा रहे हैं और जूडी हॉवसन के साथ बात कर रहे हैं। "कैलकटा को इम्प्रूव करना ही पड़ेगा। वी मस्ट !"

जूडी हॉवसन ने कहा, "नो मिस्टर पारकिन्सन, यू वोन्ट। आप इसे इम्प्रूव नहीं कर पाएँगे—"

"क्यों ? ह्वाई ?"

जूडी हॉवसन ने कहा, "मैंने यहाँ सभी से बात की है। इंडिया के फाइनेन्स मिनिस्टर कलकत्ते की तरक्की नहीं करने देंगे। ये लोग बंगालियों का हेट करते हैं। बंगालियों का भला हो, यह कोई भी नहीं चाहता।"

"इज इट ?"

जूडी ने कहा, "यस !"

"लेकिन क्यों ?"

"बगाली सुभाष बोस की जात के जो है। नेताजी के जात के। नेताजी को हम लोग एक दिन हेट करते थे। आज दिल्ली की रूलिंग पार्टी भी बगालियो को हेट करती है—आई पिटी देम! लेकिन आई टेल यू मिस्टर पारकिन्सन, हम लोग नेताजी को हेट जरूर करते थे, साथ ही प्रेज भी करते थे। ही वाज ग्रवर विलियम द काकरर! लेकिन आज उस नेताजी के वशजो पर ही मुझे दया आती है! यस, रहम आता है। दुनिया भर के लोग हम लोगो को बनिया कहते है। हम लोगो को बनिये की जात कहकर घृणा की नजरो से देखते है। लेकिन मिस्टर पारकिन्सन, इस पी० एल० ४८० से आज आपने हमे भी हरा दिया।"

राजभवन मे उस वक्त राजपुरुषो की आँखो के सामने नये स्वप्न का नशा छा रहा था।

हे नूतन देखा दिक आरबार
जन्मेर परम शुभक्षरण!

और पाक स्ट्रीट मे ग्रीन ग्रोव के अन्दर एक केबिन के अधकार मे बैठा एस० के० बागची उस वक्त 'किपलेक्स ग्लास' के इम्पोट लाइसेन्स का पक्का इतजाम कर रहा था। 'ब्लैक डॉग' ह्विस्की बडी कडी शराब होती है, उससे भी कडे मिजाजवाली छोकरी है यह सुसी। सुसी जमीन खरीदेगी, मकान बनवाएगी और फिर शादी करके घर बसाएगी। सुसी की जिंदगी का इम्पोट लाइसेस दिलाएगा एस० के० बागची। एस० के० बागची की गोद में बैठी सुसी उस वक्त यही बात कह रही थी।

अचानक गोस्वामी बोल उठा, "सर, सुसी का किस-बिस न लीजिए, वेणु दी ने मना किया है।"

"यू ब्लडी बास्टर्ड, सन ऑफ ए बीच—"

'ब्लैक डॉग' का मिजाज उस वक्त एस० के० बागची के सिर पर चढकर बोल रहा था। वह अपने होश-हवास मे नही था। "गेट आऊट गेट आऊट फ्रॉम हियर, विल यू?"

"नही सर, मैंने वेणु दी से वादा किया है, किस नही ले सकते, बदन मे हाथ लगाना भी मना है और उसके साथ सोना भी।"

एस० के० बागची चीख उठा, "मैं किपलेक्स ग्लास के इम्पाट लाइसेन्स का मालिक हूँ आई ऐम द मॉनक, यू गा टु हेल—"

"इनक्लाव !"

"जिंदाबाद !"

अरविन्द ने जेब म हाथ डालकर देखा। क्वाटर पौण्ड पावरोटी बायी ओर वाली जेब मे थी। दूसरी ओर वाली जेब मे थी सब्जी लाने की थैली। दिलीप दा से रुपया मागकर आधा किलो गोश्त खरीदने वह निकला था। वह सुबह को बात है। उसके बाद कितने ही सूर्य कितने ही पथो की परिक्रमा कर कितनी ही दूर जाकर अस्ताचल को पहुचे। राजपुरुषा के राजभवन के अन्त पुर मे रात्रि उतर आयी थी। शुभलक्ष्मी बडी तकलीफ उठाकर मद्रास से आज की महफिल मे गाना सुनाने के लिए आयी थी। नूतन रूप लेकर नूतन फिर दिखाई पडे। जन्म का प्रथम शुभक्षण फिर आये। तब फिर तुमसे मुलाकात होगी। तब ये जुलूस नही रहेगे, ये स्लोगन सुनाई नही पडेगे। उस दिन यहा बैठे-बैठे सिर्फ तुम्हारा गाना सुनेगे शुभलक्ष्मी! तुम गाओगी और मैं सुनूगा। तब पी० एल० ४८० की पाई-पाई अदा हो जाएगी। उस दिन सी० एम० पी० ओ० कलकत्ते को फिर नये सिरे से सँवारेगी। उस दिन सबको सस्ते दाम मे दो किलो चावल हफ्ते मे मिला करेगा, चीनी मिलेगी और गेहूँ मिलेगा। उस दिन भात की जगह आलू खाने के लिए नही कहूगा, कच्चे केले खाने के लिए भी नही कहूँगा। उस दिन तुम लोगा को रसगुल्ले खिलाऊँगा, सदेश खिलाऊँगा, राजभोग खिलाऊँगा और रबडी खिलाऊँगा। उस दिन गोश्त खिलाकर तुम्हारी गोपा को मोटा कर दूगा, तुम्हारी मा की आखा की जाच कराकर चश्मा दिलवा दूगा। उस दिन सुरमा को गाडी मे बिठाकर कलकत्ता दिखाऊँगा, निरजन को डॉक्टरेट दिलवाऊँगा। उस दिन सर्कुलर रेलगाडी चलना शुरू हो जाएगी, घर-घर पानी पहुँचेगा, सबको मकान मिलेगा, रहने की जगह मिलेगी, बस और ट्रामा मे बैठने का बदोबस्त कर दूगा।

ये बातें सुनकर राजपुरुष के मन पुर के सामने कानी तोप अचानक जैसे कटाक्ष कर उठी।

यह तोप आज की नही है। बहुत दिन पहले बगाल के गवर्नर जनरल एडवर्ड लॉर्ड एलेनबरा यह तोप तुम लोगो के लिए छोड गए हैं। १८४३ मे चीनियो को हराकर इस जगह यह चीनी तोप रख दी थी। १९४७ मे हम लोग इंडिया छोडकर चले गए। लेकिन इसे तुम लोगो के लिए यही छोड गए। हमे मालूम था, एक दिन तुम लोग इस राजभवन के सामने खडे होकर इनक्लाब-जिन्दाबाद करोगे—और तुम्हारी ओर निशाना लगाकर मेरी प्रेतात्मा गोली बरसाएगी।

"इनक्लाब !"

"जिन्दाबाद !"

अरविन्द और भी जोर से चिल्लाया। उधर बुधुआ का बकरा भी और जोर से मिमिया उठा।

"जय, काली माई की जय !"

नुसी ने कहा, "मुझे तुम जमीन खरीद दोगे ? मकान बनवा दोगे मिस्टर बागची ?"

गोस्वामी ने कहा, "यह क्या कर रहे हैं सर ? चुम्मा क्यो ले रहे है ? वेगा दी ने बदन मे हाथ लगाने को मना किया था। बदन मे हाथ क्या लगा रहे हैं ? बाद मे कुछ हो गया तो मैं जिम्मा नही लूगा सर।"

अचानक भीड की ठेलाठेली मे अरविन्द की जेब से क्वार्टर पौण्ड पावरोटी गिर गई थी। कोई उसे उठाने लगा। मुडकर अरविन्द ने देखा, एक पुलिस कास्टेबल रोटी उठा रहा है। अरविन्द से नही रहा गया। वह पुलिसवाले की ओर झपटा और साथ ही साथ कानी तोप फिर कटाक्ष कर उठी।

हे नूतन देखा दिक आरबार
जन्मेर परम शुभक्षण।

अचानक राजपुरुष चचल हो उठे। क्या बात है ? ताल क्या कटी ?

ताल क्यो कटा ? बाहर कौन लोग डिस्टर्ब कर रहे है ?

कानो तोप अचानक एक बार फिर सौ साल बाद बडे जोर से गरज उठी और साथ ही अरविन्द के हाथ से क्वाटर पौण्ड रोटी छिटक कर दूर जा गिरी। उसे उठाने लायक ताकत अब उसमे नही रह गई थी। एक मायूस और मूक दृष्टि से अरविन्द उस पावरोटी की ओर देखता रहा।

और लुहार के खड्ग के वार से काली मन्दिर के आँगन के बलि-काठ में बुधुआ के बकरे का सिर धड से अलग होकर दस हाथ दूर जा गिरा। एकदम धड के पास से कटा था। सिर्फ एक क्षण। बकरे के सिर की दोनो आखो की दोनो पुतलियाँ जरा नाच उठी। उसके बाद सब स्थिर हो गया। और उधर राजभवन के सामने अरविन्द की निश्चल दोना आखें भी उस चीनी तोप की ओर मूक नजरो से ताकती रह गई। वह कुछ भी कह नही पाया।

राजभवन के राज-अन्त पुर मे तब शुभलक्ष्मी के गीत की पहली दो पक्तिया बार-बार गूजने लगी

हे नूतन देखा दिक आरबार

सुसी भी तब पूरी तरह बेहोश हो गई थी। ब्लैक डॉग ने जैसे ह्वाइट डॉग को भी हरा दिया। किपलेक्स ग्लास के इम्पोर्ट लाइसेन्स के नाम पर शिरीष बाबुओ ने एक और जीती-जागती जान को ग्रीन ग्रोव के बलिकाठ मे बलि चढा दी।

अरविन्द, सुसी और बुधुआ का बकरा—उस दिन तीनो ही एक साथ निश्चल और निर्जीव होकर मूक दृष्टि से कलकत्ते की ओर ताकते रह गए।

"इनक्लाब!"

"जिन्दाबाद!"

एअरपोट मे उस समय प्लेन स्टार्ट होने से पहले मिस्टर पार-किन्सन ने प्रेस कान्फ्रेन्स बुलाई थी। सारे न्यूजपेपर के स्टाफ रिपोटर वहाँ हाजिर हो गए।—"आज आप लोगो को एक बड़ी भारी

खुशखबरी देनी है। हम लोग पी० एल० ४८० के रुपए से कलकत्ते को इम्प्रूव करेंगे। हमारा प्लान कमप्लीट हो गया है।, वदइन टेन इयस आप कलकत्ते मे जरूरत के मुताविक पानी पाएँगे, हवा पाएँगे, सर्कुलर रेल पाएँगे। इनसान की तरह जीने के लिए जो कुछ भी जरूरी है, वह सब मिलेगा। हमे यह कहते वडी खुशी हो रही है कि हमारा प्लान पूरी तरह सक्सेसफुल हुआ है।"

थोडी देर वाद ही अमेरिकन एक्सपर्ट को लेकर जेट प्लेन आसमान मे पहुँचा।

और आसमान के नीचे मिट्टी की धरती पर उस समय राजभवन के सामने मिट्टी के पुतले इनसानो का एक झुड आकर फिर से चिल्लाने लगा—

"इ नक्लाव!"

"जिन्दावाद!"

एक और सुसी एक और एस० के० वागची की गोद मे सिर रखकर कहने लगी—तुम मुझे जमीन खरीद दोगे मिस्टर वागची? तुम मेरे लिए एक मकान वनवा दोगे? और, एक और बुधुआ ने काली मन्दिर मे एक और वकरा लाकर उसे फिर से एक वार वलिकाठ पर चढा दिया। फिर एक वार सुनाई पडा, "काली माई की जय!"

और राजभवन के अदर से राजपुरुष के कानो मे एक और शुभलक्ष्मी का फिर एक वार गीत टकराकर गूज उठा—

हे नूतन देखा दिक आरवार।
जन्मेर परम शुभक्षण!